राष्ट्र के लोहस्तम्भ

त्रीवर— श्राचार्यं श्रीचत<u>ुर</u>सेन*्शास्त्री*

कोल एजेन्ट्स — चन्द्रा पुस्तकालय, चूना मंडी, नई दिन्ली। श्रकाशक :— संजीवन इन्स्टोट्यूट,

सर्वाधिकार सुरिच्चत

मुद्रक:— बा॰ हरनामदास गुप्ता, भारत प्रिन्टिंग वक्सी, बाज़ार सीताराम, दिल्ली।

दो शब्द

'श्रमीरों के रोग' श्रीर 'राष्ट्र के लोहस्तम्म'— इन दोनों पुस्तकों के लेखक श्राचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री हिन्दी के सिद्धहस्त कहानी लेखक, महान् उपन्यासकार तथा समाज-सुधारक तो हैं ही, किन्तु उनका वैद्यक श्रीर शरीर-विज्ञान का ज्ञान कितना श्रधिक विस्तृत श्रीर परिमार्जित है, इस बात को हिन्दी के पाठकों से श्रधिक वे राजे-महाराजे, वे रईस श्रीर जमींदार, वे नेता श्रीर राजनीतिश्र महापुद्द जानते हैं, जो श्रपने स्वास्थ्य-सुधार के लिए सब श्रोर से निराश होकर श्रीर शास्त्री जी द्वारा श्रारोग्य-लाभ करके चिरन्तन उन्हीं के यश का गान करते हैं।

शास्त्री जी की वैद्यक-शान-निपुण्ता के सम्बन्ध में हमें ऋधिक कुछ नहीं कहना। हम इन दोनों पुस्तकों को ही, जो अभी तक अन्धकार में पड़ी हुई थीं, अपने पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। पाठक स्वयम् देख लेंगे कि उनका शरीर-शास्त्र का शान, उनकी लेखन-कला-दक्षता के साथ मिलकर, इन दोनों पुस्तकों में कितना प्रज्वलित हो उठा है। भाषा की सरत्तता, छोटे-छोटे वाक्य, श्रौर उन वाक्यों में शरीर-शास्त्र के निगूढ़तम तत्त्वों का समावेश "गागर में सागर" भरने की याद दिलाता है।

इन सब्दों के साथ हम शास्त्री जी की, उनके बहुत से प्रेमी पाठकों से छिपी हुई, इस कला के ये दो त्रालभ्य-ग्रन्थ उनके सामने प्रस्तुत करते हैं।

निवेदक--

-चन्द्रा।

पुत्र

अध्याय पहिला

----0:8:0----

पुत्र का माहात्म्य

'पुत्र' एक श्रति छोटा सा शब्द है, पर इसका मूल्य पृथ्वी भर की समस्त सम्पदाओं से श्रधिक है। इस शब्द में एक ऐसा भेद छिपा है कि जिसकी वैज्ञानिक परिभाषा श्राज तक कोई तस्ववेत्ता नहीं कर सका। जब इम देखते हैं कि बढ़े २ शहनशाह, राजा-महाराजा और सेठ साहूकार श्रपनी विशाज सम्पदा को केवज श्रपने पुत्र के जिए श्रना-यास ही छोड़ जाते हैं, श्रामरण पुत्र का स्वार्थ चिन्तन

करते हैं-तब हमें 'पुत्र' के श्रद्धत श्रस्तित्व पर श्राश्चर्य होता है। पृथ्वी पर मनुष्य सबसे श्रधिक स्वार्थ का कीड़ा है. परन्तु वह केवल पुत्र के लिये ही सर्वाधिक स्वार्थ त्याग करता है। पुत्र जन्म माता के जिये कम कष्ट का नहीं। परन्तु पुत्र जन्म के इर्ष में वह कष्ट इस भाँति हवा हो जाता है मानों वह एक जाद का काल्पनिक कष्ट हो, माताएं इंसते २ उसे सहतीं हैं। श्रीर बहुत सी प्राण भी देती हैं। जन्म के बाद उनके पालन पोषण में भी दिकत श्रीर कष्ट का पार नहीं रहता। उन श्रबोध पुत्रों को श्राहार दे दे कर पुष्ट करना, उनकी श्रनथक रात दिन सेवा कर उन्हें तिल २ बढ़ाना, उनके मल मुत्र साफ करना, उन्हें हाथों में लिये रातों को काटना-यह मनुष्य जैसी स्वार्थी श्रीर श्राराम सलब जाति के जिये श्राश्चर्यजनक स्वार्थ त्याग है। श्रीर इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि उसने कभी भी 'पुत्र' को छोड़ कर और किसी के लिए ऐसा स्वार्थ त्याग नहीं किया, न करने की आशा है।

पुत्र बड़ा होता जाता है और माता पिता और भी बागन से अपने आपको भूल कर उसके प्राणों में मिलने बागते हैं। हर समय उनकी आँखें और आत्मा उसी में लीन हुई रहतीं हैं। मानों उन्होंने अपने शरीर और जीवन का

मोह त्याग दिया है, वे पुत्र के नवीन वृद्धिंगत शरीर में सम्मिलित हो गये हैं—वे पुत्र के साथ रोते हँसते मरते श्रीर जीते हैं। श्रिक युवा होने पर पुत्र का विवाह होता है तब माता श्रपना सर्वाधिकार पुत्र वधू को श्रीर पिता श्रपना सर्वाधिकार पुत्र को है। वह दोनों घर हार कार बार श्रीर सम्पदा के श्रनायास ही स्वामी बन बैठते हैं। उनके दिये श्रादर के ग्रास खा कर माता पिता श्रपने को धन्य समक्षते हैं। श्रन्त में वे श्रपनी उपार्जित समस्त सम्पदा-यश-गौरव मान पुत्र को देकर स्वयं संतोश से जीवन जीजा संवरण करते हैं। क्या पुत्र के सिवा कहीं श्रीर भी मनुष्य ने इतना त्याग किया है?

यह अमीरों की ही बात नहीं। घोर दारिद्रावस्था में भी जिनका जीवन कट रहा है, वे भी अपने प्यारे पुत्र के सरत सुन्दर हास्य को देख अपना जीवन धन्य समकते और दारिद्य को दारिद्य नहीं समकते हैं। एक बार एक दरिद्र माता से किसी ने पूछा था कि तेरी सम्पत्ति कितनी है। तब उसने कहा था — श्रद्धट है। और फिर उसने स्कूल से आते हुए अपने पुत्र को दिखाकर कहा था कि 'वह यह है'।

जिन घरों में विश्व की सम्पदा भरी हो। नौकर चाकर

ऐश श्राराम, हुकूमत, सब कुछ हो, राज पाट, सेना हो। संसार उनके वैभव श्रीर श्रानन्द को देखकर लज्जचाता हो - परन्तु यदि उनके घरों में पुत्र की मधुर मुस्कान भरी घटा नहीं है तो वह सुख सुख नहीं घोर दु:ख है। उस दु:ख को वे ही श्रमागे जान सकते हैं जिन्हें सारा संसार भाग्यवान् कह कर पुकारता है। महाराज दशरथ, दिज्जीप, श्रीर बहुत से पुराण पुरुषों के ऐसे चिश्त हमको देखने को मिलते हैं जिन्होंने पुत्र के श्रभाव में पृथ्वी भर की सम्पदाश्रों को तुच्छ समका था।

पुत्र के मुख मण्डल में, उनकी निर्धां मुस्कुराहट में तोतली वाणी और रस भरी श्राँखों में, स्वर्गीय ज्योति होती है, बड़े ही पुण्य के प्रताप से मनुष्य को पुत्र लाभ होता है। संसार के तापों से उत्तप्त पुरुष को पुत्र के भोले मुस-कान में शान्ति मिल सकती है। धूल से भरा मुख, तोतली वाणी से पिता पुकारना, एक ऐसा मरहम है जिससे हदय के श्रसाध्य श्रीर दुखदाई घाव भी भर जाते हैं।

बहुत प्राचीन काल से पुत्र की इतनी प्रवल लालसा राजा श्रीर रंक सभी के हृदय में रही है। पुत्र हीन पुरुष श्रपने को जोवित नहीं समम्पता। उसका जीवन जीवन नहीं मृत्यु है। हम यह विश्वास पूर्वक कह सकते हैं कि

जितनी सन्तान की लालसा मनुष्य को है उतनी कदाचित् हो किसी को मोल की होगी।

'पुत्र' शब्द में त्राशा, भरोसा, नैसर्गिक प्रेम, त्याग और मोह न मालूम कितने त्रार्थ, कितने भाव भरे पड़े हैं। इसका कारण त्रवश्य ही बहुत गम्भीर होना चाहिए। और वह वैसा ही है भी। सनान ही देश, जाति और समाज की अच्य सम्पत्ति, जलन्त गौरव और सामृहिक जीवन का चिन्ह है। इसीलिये शास्त्रों में इसकी भारी महिमा गाई गई है। भगवान पत्रञ्जिल चरक संहिता में लिखते हैं कि —

"अच्छायश्चेक गन्धश्च निष्फलश्च यथा हुमः । श्वनिष्ट गन्धश्चेकः निर्यत्यस्तथा नरः ॥ श्वप्रतिष्ठश्च नग्नश्च शून्यश्चेकेन्द्रियश्चना । मन्तब्धे निश्कृयश्चेव यस्यापत्यं न विद्यते ॥ बहुमूर्तिवंहुगुणो बहुन्यूहो वहु क्रियः । बहुचंद्ववंहुर्ज्ञानो बह्वारमा च वहु प्रजः ॥ माक्रल्योयं प्रशस्तोऽयं धन्योयं बीर्यवानयम् । बहु शाखोऽयमिति च स्तूयते ना वहु प्रजः ॥ प्रीतिवंतं सुखं वृत्तिर्विस्तारो विभवः कुक्वम् । यशो खोकाः सुखोदकांस्तुष्टिश्चापत्य संश्रिता । तस्मादपस्य मन्विच्छन्युणांश्चापत्य संश्रिता ॥"

"जैसे बिना छाया का भौर गन्धरहित या दुर्गन्धित वृक्त होता है वैसा ही पुत्रहीन पुरुष है। वह श्रप्रतिष्ठित है, नग्न है, शून्य है, एकेदिय है तथा निश्कृय है।"

"परन्तु पुत्रवान् ध्यक्ति बहुत गुणों श्रीर बहुत क्रिया वाला, बहुत ध्यूहों वाला, बहुत से नेत्रों श्रीर ज्ञान वाला, बहुत सी श्रारमा श्रीर बहुत सी प्रजा वाला होता है। वह माक्रस्य है, वह प्रशंसनीय है, वह वीर्यवान् है, वह कुटुम्बी कह कर पूजा जाता है। उसे प्रीति, बल, सुख, बृत्ति, विस्तार, विभव, कुल, यश, श्रानन्द सभी प्राप्त होते हैं। इसिंबिये लोग गुणी पुत्र की हुन्छा करते हैं।"

पुत्रहीना स्त्रियाँ तिरस्कार भीर रुन्देह से देखी जाती तथा उनका तिरस्कार किया जाता है।

प्राचीन उपाख्यानों श्रीर पुराणों में पुत्र के लिए बड़े र यज्ञ श्रीर श्रनुष्ठान करने के विधान हैं। भारी तपों का भी उल्लेख है।

यह बात बड़े २ वैज्ञानिक स्वीकार करते हैं कि किसी जाति अथवा देश की उन्नति उस जाति अथवा उस देश के लोक समुदाय की व्यक्तिगत उत्तमता पर निर्भर है। श्रवसे २-३ सौ वर्ष पहिले रोम-रिपब्लिक में भी ऐसे ही क्रानून बनाने का प्रस्ताव पास हुआ था कि श्रयोग्य स्त्री पुरुष

पुत्र न पैदा करने पार्वे । जिस से राष्ट्र का पतन हो जाय। उन्होंने ऐसे क़ानून बनाये थे जिस से सर्वे श्रेष्ठ सन्तान उत्पन्न हो । जिस से सारा राष्ट्र पवित्र और शक्ति सम्पन्न बन जाय।

भारतीय विधान शास्त्रों में विवाह की मर्यादा, कुल गोत्रों की छान बीन इसी आधार पर निर्भर है। वर कन्या के गुण, कर्म, स्वभाव मिलने ही पर विवाह होता था। संस्कार हीन, चरित्रहीन कुल में, चय या कुष्ट वाले कुलमें, सगोत्रियों में, विवाह नहीं हो सकते थे। श्रनुकूल पति पत्नी न मिलने पर श्राजन्म श्रविवाहित रहने का विधान था।

मेडले ने जो इटली का उत्कृष्ट विद्वान् था। उसने 'श्रिभिजनन' विज्ञान की नीव डाली थी। इसके बाद इंग्लेण्ड के विद्वान् सर फ्रांसिस गाल्टन ने इस सम्बन्ध में बहुत कुछ जिखा। उन्होंने जन्दन यूनिवर्सिटी को ६ लाख ७४ हज़ार रु० इसलिये दान किया था कि इसी विषय का श्रम्वेषण करने के लिए एक सुयोग्य प्रोफेसर रखा जाय।

यह बात श्रव सब समक गये हैं कि योग्य देश वाले श्रयोग्य देश वालों के मुँह की रोटियाँ झीन लेंगे। श्रीर श्रपने से दुर्बल देश वालों को कुचल कर श्रपनी रहा करेंगे।

गत ३ इज़ार वर्षों में बहुत से देश की जातियों का लोप हो गया है। अफरीका, अमरीका, न्यूजीलेयड आदि देशों के निवासी लोप होते जा रहे हैं। और अधिक योग्यता वाले देशों ने उनके स्थान पर अधिकार स्थापित कर लिया है। उन पुरानी जातियों का फिर से सितारा चमकेगा इस की कोई आशा नहीं की जा सकती।

भारत वर्ष स्वयं ही ऐसे हास का विषय है। जिसका उदाहरण प्रमाण के तौर पर दिया जा सकता है। गत र वर्षों में हिन्दुओं की संख्या यशिप बहुत धीरे २ घट रही है, परन्तु वह तपेदिक के रोग की भाँति भयानक श्रीर निराशाजनक है। यदि हिन्दू बच्चों की नस्ज न सुधारी जाय तो हिन्दुओं का सर्वनाश हो सकता है। यदि इस बात को ध्यान से देखा जाय कि किस भांति विदेशी जातियाँ भारत के हिन्दुओं को इटाती हुई भारत में फजती फूलती रही हैं तो इस सचाई पर कुछ न कुछ प्रकाश अवश्य ही पढेगा।

प्रजनन या सुसन्तान शास्त्र बहुत गम्भीर है। उसके बिये जीव विद्या, समाज शास्त्र और धर्म शास्त्र एवं आचार शास्त्र के ज्ञान की भी आवश्यता है। भारत के प्राचीन आचार्यों ने प्रजनन शास्त्र पर बहुत से महत्वपूर्ण प्रन्थ

बिखे थे। उनमें पुरुषों के बलवीर्य सतेन बनाये जाने श्रीर जनेन्द्रिय की निर्वजता दूर करने के श्रमोध प्रयोग थे। यह उस काल की बात है जब कि भारत के पुत्रों को सारे संसार का प्रबन्ध, हुकुमत और शासन करना पढ़ता था। और जल थल और श्राकाश में उसकी शक्तियाँ उद्ती थीं। तब उसे बहुत से बीर, मेधाबी पुत्रों की चाह थी। इसी कारण एक पुरुष को कई खियाँ रखने का रिवाज भी जारी हो गया था कि जिस से एक पुरुष सैकडों सन्तान पैदा करता था-वे सारे ग्रन्व रस्न ग्रन्त से २ इज़ार वर्ष पूर्व ही नष्ट हो गये । इस सम्बन्ध में महादेव के अनुचर नन्दी ने एक इज़ार श्रध्याय का एक कामसूत्र रचा था। उसी को रवेत केतु ग्रौहालक ने ४०० श्रध्यायों में संचिप्त किया था फिर उसे वाभ्रव्य ने १८० श्रध्यायों में संचिप्त किया था । श्रीर भी वहत से ग्रन्थों का उल्लेख मिलता है। बास्यायन का कामसूत्र श्चब भी मिलता है।

प्राचीन इतिहास हमें यह भी बताते हैं कि उन्होंने सन्तित सुधार के सम्बन्ध व्यवस्थापित करने के ऐसे नियम बनाए थे। जिस से उनका सामाजिह संगठन बहुत

ही सुन्दर हो गया था। इस प्रकार उन्होंने देश, काल, धर्म की ठीक सीमा बना रखी थी।

योरोपीय विद्वानों ने भावी सन्तति के शारोरिक और मानसिक सुधार के बहुत कुछ प्रयक्त किये हैं। परन्तु उनमें वह समाज संगठन नहीं उत्पन्न हुन्ना कि जिसके छाधार पर समाज में शान्ति की स्थापना हो सके। ज्यों २ योरोप के युवक सतेज और सुगठित होते जाते हैं, अशान्ति और अञ्यवहारिक असहनशीलता मानव समाज में बढ़ती जाती है। भारत ने जैसे बिना माथे पर बज्ज जाए राज्यों को त्याग देने वाले युवक पैदा किये, जीवन और मृत्यु, सम्पदा और विपत के समदर्शी पुरुष उत्पन्न किए, वैसे पृथ्वी पर कहीं भी नहीं उत्पन्न हुए।

वेद में जिखा है-

सुप्रजः प्रजाभिः स्यां सुवीरो वीरैः सुपोः पोषैः । नार्यं प्रजांमे पाहि शस्त पश्चम्मे पाद्यथर्यपितुंमेपाहि । यि श्व ३० ३० में ३७]

श्चर्थात् मैं विविध सुख से युक्त होकर उत्तम प्रजायुक्त होऊं। उत्तम पुत्र, वन्धु, सम्बन्धी श्रीर भृत्यों के साथ उत्तम वीरों के सहित होऊं।

मनु ने लिखा है-

प्रजनार्थं रित्रयः सृष्टाः सन्तानार्थञ्च मानवाः । तस्मात् साधारणो धर्मः श्रुतिः पत्न्या सहोदितः ॥ त्रर्थात् गर्भ धारण करने कराने के लिए स्त्री पुरुषों की सृष्टि है । इसिनये स्त्री पुरुष को संयुक्त रहना साधारण धर्म है ।

'पुं' नाम नरक से जो पिता की रहा करता है, वह पुत्र कहलाता है। 'पुनाति स्ववंशान् इति पुत्रः' सर्थात् ओ अपने वंश को पवित्र करे, वही पुत्र कहाता है। पुत्र अपने अच्छे कर्मों से १० पीदी आगे के अपने पूर्वजों को, दश पीदी पीछे की अपनी संतति को तथा स्वयं अपने आपको हस प्रकार कुल २१ पीदियों को मुक्त और पवित्र कर सकता है।

प्राचीन शास्त्रकार बताते हैं कि 'श्रपुत्रस्यगतिनांस्ति' पुत्र रहित की गति नहीं हो सकती।

इन वाक्यों से इस बात पर भारी प्रकाश पड़ता है । कि पुत्र का कितना महस्य भारत में माना जाता रहा है । इस महात्म्य का ठीक २ अर्थ न समक्त कर इसका दुरुप-योग भी खूब हुआ। योग्यायोग्य का ख़याज न कर सभी को पुत्र प्राप्ति की इच्छा उत्पक्त हो गई। परमार्थ और मुक्ति की साधना के विचारों ने साधारण कोगों को बहुत

अस में डाल दिया। और महिमा की कथा पढ़कर वे अपने को भी बिना पुत्र के धिकार योग्य समझने लगे।

सैकड़ों वर्षों से हिन्दुओं में श्राद्ध की परिपाटी चली श्रा रही है। लोगों का विश्वास है कि जो पुत्र पिता माता का श्राद्ध नहीं करता और पिरुडदान नहीं करता उसके माता पिताओं की सद्गति नहीं होती। इस विचार के श्राधार पर मनुष्यों ने न तो इस बात को देखने की परवा की कि पुत्र जीवेगा कि मरेगा। धर्मारमा हो या कि पापी. देशद्रोही, पित्रघातक व्यभिचारी, कपटी श्रादि जो कुछ भी हो, इसकी परवा नहीं। पिता माता यह भी नहीं सममना चाहते कि हम पुत्र को पढ़ा लिखा सकेंगे। उन की परवरिश कर सकेंगे। उन्हें श्रेष्ठ पुरुष बना सकेंगे भी या नहीं । वे केवल पुत्र पैदा करके धरती पर डाल देना चाइते हैं। जैसे कौवे, कुत्ते, विल्ली, बन्दरों के बच्चे पैदा होते श्रीर मस्ते हैं। इसका परिणाम यह हुन्ना है कि श्राज दिन लाखों व्यक्ति ऐसे हैं जिन्हें इस बात की कोई परवा नहीं कि उनका पुत्र कहाँ मारा २ फिरता है, क्या करता, क्या खाता पीता है। साथ ही, ऐसे पुत्रों की भी कमो नहीं जिन्होंने जीवित श्रवस्था में कभी माता पिता की सेवा नहीं की. उल्टा उन्हीं का जीवन चूस २ कर

खाया, पर पिता माता के मरने पर वे श्राद्ध करके पिता माता का सर्पण करते हैं। कैसी विडम्बना है।

पुत्र विता को नर्क से उदार करता है कि नहीं, इस बात पर हम विचार नहीं करना चाहते। न हमने इसे श्रांखों देखा न देवकर उसका श्रनुभव जिखने फिर यहाँ श्रांने की श्राशा है। हम तो सिर्फ सीधी बात यह जानन हैं कि सुख ही स्वर्ग श्रीर दुःख ही नर्क है। भय, चिन्ता, पराधीनता, कष्ट, रोग, शोक, ये दुःख हैं। इनसे मुक्त करा देना नर्क से मुक्त करा देना है। माता पिता की सुग-मता के लिए, कुल, जाति या स्वदेश के उद्धार के लिए, संसार के प्राणी मात्र के कल्याण के जिए बड़ों के शारम्भ किए कार्यों को पूर्ण करने के लिए कुल दोपक पुत्रों की शाल भी शावस्थकता है, श्रीर सदा बनी रहेगी, पर कुपुत्र से तो माताबन्ध्या ही श्रुच्छी। कहा है—

जननी जने तो श्रूर जन, क्या दाता क्या श्रूर । कायर पुत्र बनाय के, मती गंवाचे नूर ॥ नीति में भी लिखा है—

गुणिगणगणनारम्भे न पतित कठिनी ससंम्त्रमं यस्य । तस्याम्वायदि सुतनी वद वन्ध्या की रूपी भवती । त्रर्थात्-गुणियों की गणना-करती वार जिसकी स्रोर

श्रादर से सर्व प्रथम उंगली नहीं उठती। उसकी माता यदि पुत्रवती कही जाय तो फिर बाँक कौन कहायेगी।

मनमानी सन्तान पैदा करने ही के कारण देश पितत हो रहा है। सबसे श्रधिक शोक की बात तो यह है कि माता पिता श्रयोग्य श्रीर भयानक रीतियों से पुत्र पैदा करने के विश्वास भी रखते हैं।

क्या नर श्रीर क्या नारी सभी पुत्र की लाजसा में भटक रहे हैं। पहले बिना सन्तान कोई भी नहीं मरता था, श्रब सन्तान प्रथम तो उरपन्न ही होना कठिन। तिस पर जीती जागती रहना दुस्तर है। हमारी माताएँ इसी लाजसा में मर मिटती हैं। सहस्रों दुष्ट जनों की भी ऐसे श्रवसरों पर बन श्राती है, कोई पीर साहेब, कोई गाज़ी मियाँ, कोई सटयद साहेब, कोई पैग्रम्बर श्रादि को सन्तान उरपन्न का साधन बता देते हैं तो ये सन्तान के इच्छुक पागलों की तरह उन्हों के पास जा र उनकी भेंट पूजा में श्रपनी पसीनों की कमाई पोनी की तरह बहा देती हैं। ऐसे सैकड़ों माता पिता पापिष्ट नीच, दुराचारी विधर्मियों के श्रपतित्र चरणों पर श्रपने नेत्रों के श्रमूल्य मोती न्यौछावर करते श्रीर सन्तान की भीख माँगते जब हम श्रपनी पूज्य माता श्रीर बहनों को देखते हैं तो हदय फटने लगता है।

पर रुपया पैसा, ज़ेवर, धन सब कुछ लुटाकर भी वे श्रभा-गिनी की श्रभागिनी ही बनी रहती हैं। उनका सूखा श्रस्थिमय शरीर गण्डे तबीज़ों से भरा रहता है। इन सब को देखकर श्राँखें भर श्राती हैं। हा! श्रभागी भारत सम्तान! वीर प्रस्तियों की यह दुर्दशा! जिनके प्रताप का सारा संसार जोहा मानता था, वे भंगी, चमार, डोम, मुस्तबमानों के पैरों गिर कर सन्तान की भीख माँगती

द्वाता जा रहा है — निपूतों की संख्यायें बढ़ती जा रही हैं। जिनके पुत्र भी होते हैं वैसे पुत्रों से न होना श्रव्हा जिन माताओं ने राम भीष्म हृष्ण पैदा किये थे। हिमाजय की जिन स्वव्हन्द कन्द्राओं में किपज ब्यास श्रीर गौतम बैठे भगवान् भारत का यश गान करते थे। जिस देश की बनस्पति श्रीर हुतों के पत्तों को खा र कर गौतम श्रीर कखाद ने स्याय श्रीर वैशेषिक की गृह फ्रिजासफी प्रोद्धावित् की है, वही भृमि श्रव ऐसी पोच श्रीर निकम्मी सन्तान पैदा करने जगी है कि उसे सादर गृह मानने वाले श्रोज उन्हें मनुष्य समाज में श्रपने चरखों में स्थान देना श्रपनी हेठी श्रीर श्रपमान समसते हैं ? इसका क्या कारख है ? क्या हिमा-

बाय की वायु में अमृत नहीं रहा? भारत की भूमि क्या श्रव वैसे फल, श्रव, नहीं पैदा करती ? गंगा जल में क्या वही जल नहीं रहा ? यह सब तो है ? फिर हम मनुष्य क्यों नहीं रहे ? गुरु पन गया-मान गया-धन गया. बल गया. राज गया, मनुष्यत्व भी गया ? इसका कारण खोजना होगा। हमारी नस्त क्यों गिर रही है ? पुरुष को पैदा करने की शक्ति इस में से क्यों नष्ट हो गई ? क्या इस मनुष्य ! श्रादर्श मनुष्य ! संसार का सर्वोच्च मनुष्य पैदा नहीं कर सकते ? श्रवश्य कर सकते हैं - यदि इस चाहें । दुःख की वात है हमारी रुचि ही इस श्रोर नहीं है। भारत में ऐसे कितने पिता हैं जिन्होंने सन्तान उत्पन्न करना सीखा है। श्रीर कितने ऐसे स्त्री पुरुष हैं जो सन्तान के लिये ही सहवास करते हैं ? अवश्य ही इसके उत्तर में हमें शुन्य (०) मिलेगा। यह क्या राम और भीष्म की सन्तान के लिये भयानक बात नहीं है। हमारे पित गया हमारी इस पश्चता पर हमें जितना श्राप दें उतनाही थोदा है। इस प्राकृतिक नियम की श्रवहेलना के दगड में हमें निर्देश श्रीर कीडे मकोडों से भी नीचा हो जाना चाहिये?

अध्याय दूसरा

पुत्र रत्न कैसे उत्पन्न किया जा सकता है

-:x:---

श्राज संसार भर में सन्तान निरोधका सिद्धान्त ज़ोर शोर से चल रहा है। परन्तु मेरा यह कहना है कि इसकी श्रपेत्वा उत्तम सन्तान पैदा करना श्रव्हा है। क्योंकि उत्तम सन्तान की जितनी ही वृद्धि होगी उतनी ही अधम सन्तान की कमी हो जायगी। जो जाति जितने अधिक सर्वोत्तम पुत्र उत्पन्न कर सकती है वह उतनी ही शीव्र उसति कर सकेगी। इस सम्बन्ध में बर्मनी और फ्राँस के उदाहरण हमारे सन्मुख है। कर्मनी ने गत ६० वर्षों से इस बात की भरपूर चेष्टा की है कि वह उत्तम

पुत्र पैदा करे-इसके विरुद्ध फ्रांस ने जनसंख्या को सीमावद्ध करने की चेष्टा की हैं। श्वब यह प्रकट हैं कि जर्मन राष्ट्र श्रीर फ्रांस के राष्ट्र में कितना श्वन्तर हैं। यद्यपि गत महा-युद्ध में जर्मनी ने भयानक चित उठाई हैं। परन्तु जर्मन राष्ट्र फिर भी एक बार उन्नत होगा इस में तनिक भी सम्देह नहीं।

एक चीनी विद्वान् का कथन है 'कि जो राष्ट्र श्रधम पुत्र उत्पन्न करेगा, उसे विदेशी राचस भच्चगा कर जावेंगे' यह बहुत ही सत्य है!

प्राचीन श्रायों ने श्रपनो सन्तित को उत्कृष्ट बनाने की बहुत ही चेष्टा की थी, उन्होंने इसके लिये बहुत से सामा- जिक बन्धन श्रीर धार्मिक नियम बनाये थे। इसीका कारण है कि संसार की श्रनेक जातियाँ शताब्दियों तक पृथ्वी पर ज़ोर से उठीं श्रीर श्रन्त में नष्ट हुईं। श्रीर श्रव उनके श्रिरेतत्व का पता उनकी कृत्रों या पृथ्वी के उदर में छिपे पदार्थों से मिजता है। परन्तु भारत ने श्रपनी जातीयता को इस प्रवत्न श्रक में पिसकर भी सुरक्ति रखा।

श्राधुनिक वैज्ञानिकों ने 'पुत्र' विज्ञान पर जो गम्भीर गवेषणा की है। उसे आज हम भूज गये हैं। उन्होंने जीवन विद्या, नर विद्या, शरीर रचना विद्या, मानस-

शास्त्र, समाज शास्त्र श्रीर श्राचार शास्त्र श्रादिको एकत्र कर 'पुत्र' विज्ञान की सृष्टिकी है।

यह बात तो हम प्रत्यच देखते हैं कि प्रकृति एक ऐसी श्रटल सामर्थ्यवान् सत्ता है कि जिसके नियमों का उल्लंघन किसी भी प्राणी के लिये श्रसम्भव है। सुरज, चांद, हवा, प्रकाश, नत्त्रत्र, त्राकाश, पंचतत्व सभी अपना कार्य अवाध रूप से कर रहे हैं। जो श्रमीघ शक्ति इन श्रतक्ये नियमों के पीछे काम कर रही है। वही ईश्वरीय शक्ति है। इन्हीं दो शक्तियाँ से प्राकृत और ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त करना श्रीर उनके श्राधार पर चलना ही प्राणी के लिये श्रेयस्कर है. ख़ासकर मनुष्य के लिये. जो पृथ्वी का सर्वश्रेष्ठ प्राची है। और पृथ्वी की सब सम्पदाओं का स्वामी है। ज्यों २ मनुष्य की बुद्धि का विकास होता जाता है - वह इन दुरु इ नियमों के भेदों को जानता जाता है। श्रीर ज्यों २ ये रहस्य मनुष्य पर प्रकट होते जाते हैं। स्यों २ मनुष्य की विशेषता बढ़ती जाती है। श्रीर वह संसार में महत्व-पूर्ण और समर्थ व्यक्ति समका जाता है। मनुष्य जाति की भलाई के लिये इन नियमों का जान लेना बहुत ही जाभदायक है। जो जातियाँ इस भेद से बज्जात हैं अन्धेरे

में हैं। जिन्होंने इन नियमों को जान लिया है। वे संसार में उन्नत हैं।

पुत्र उत्पादन के लिये माता का गर्भस्थान प्रकृति की एक उत्तम प्रयोगशाला है। बालक रूपी पुतला माता के इसी सांचे में ढाला जाता है। उस के लिये जैसे उत्तम, मध्यम, श्रधम मसाले का व्यवहार होता है, वैसा ही यह पुतला तैयार होता है। इस निर्माण पर ४ वातों का ख़ास प्रभाव पड़ता है। प्राकृत रहस्य, संस्कार, श्रात्मशक्ति और शिला।

प्रकृति ने स्त्री और पुरुष को दो विपरीत जीवित शक्तियों से परिपूर्ण बनाया है। पुरुष पुष्ट, साहसी, मज़-वृत, क़दावर, वालों और डाढ़ी मूँछों से परिपूर्ण है और स्त्री कोमज, दयालु, लजा और भय से परिपूर्ण लोमरहित। एक में प्रदान है। दूसरे में खादान। दोनों एक सम्पूर्ण सत्व के आधे २ भाग हैं। इनकी सृष्टि के मध्यम में प्रेम और खानन्द के खादान प्रदान का माध्यम सबसे महस्वपूर्ण है। प्रेम और खानन्द का खादान प्रदान ही पुत्रोत्पादन कजा की जान है।

प्रकृति असंख्य प्राणिवर्ग की परम्परा को स्थाई रखने के पूर्ण यत्न करती है। एक बटबुक्त के उरपन्न करने को

करोड़ों बीज उत्पन्न किये बाते हैं। उनमें एकाथ ही बीज का मुच बनता है। एक बार सहवास होने पर ४ करोड़ रेंगने वाले जन्तु वीर्य के साथ बाहर धाते हैं, उनमें से एक जन्तु को डिम्ब प्रहण करके गर्भाशय में पोषित करता है कालात्तर में वही पुत्र बनता है।

मानव जाति के विस्तार श्रीर श्रस्तित्व के लिये प्रेम के भिन्न २ विभाग कर दिये गये हैं। जो मनुष्य की स्थिति विकास में सहायता देते हैं। किन्तु इन सबों से उत्कृष्ट प्रेम तो दग्पति का प्रेम हैं, वास्तव में यही प्रधान प्रेम हैं। यह प्रेम स्त्री श्रीर पुरुष दोनों की काया पजट देता है। उनके स्वभाव श्रीर श्राचरणों में, जीवन में परिवर्तन कर देता है।

श्रकृति के इस जादू से स्त्री पुरुप कहाँ तक प्रभावित होते हैं, यह यहाँ हमारे वर्गन का विषय नहीं। परन्तु इस में सन्देह नहीं कि पृथ्वी में ऐसा कोई स्वार्थ नहीं। जिसे पुरुप स्त्री के जिये तथा स्त्री पुरुप के लिये न त्याग सके। दम्पति का संगठन इसी प्रेम के आधार पर है जिस का शुभ परिणाम 'पुत्र' है।

यद्यपि एक व्यक्ति से प्रेम होने पर दूसरे से नहीं होना चाहिये। परन्तु यदि हठात् एक व्यक्ति का वियोग हो

नाय तो ? प्रकृति की वंशवृद्धि की धारा रुक जावेगी ! इसिंक्ये प्रकृति ने प्रेम की बहुत सी धाराएँ बढ़ा दी हैं। और एक ही व्यक्ति को बहुत सी श्वियों व पुरुषों से प्रेम करने की शक्ति भी प्रदान की है।

सौन्दर्य श्रौर गुख इस प्रेम को सिचन करते हैं। हमारा हृदय प्रकृति के संकेतों से चलायमान हुश्रा करता है।

हाँ तो वंश बृद्धि कार्य को निर्वाधता से चलाते रहने के लिये, एक के वियुक्त होने पर या मर जाने पर दूसरे से संयुक्त हो जाने के मूल में एक के बदले सैकड़ों व्यक्तियों को प्यार करने की भावना प्राणी को दी गई है। परन्तु मनुष्य मानसिक शक्ति के द्वारा इस प्राकृत चंचलता को संयम में रखता और मर्यादा तथा कर्तव्य के नाते प्रेम भावना को अपनी ही परिन या पित में नियुक्त रखता है। और जब २ अनधिकार व्यक्तियों की ओर उसका मन जाता है। वह विवेक से उसे संयमित करता है यही बह रहस्व मय अनंग का बशीकरण खेल है जो युवा युवितयों में व्याप्त है और जिसके मूल में सुन्दर पुत्र का अस्तित्व खिता है।

श्रानम्द की श्रोर मनुष्य स्वयं श्राकृष्ट होता है। यह उसकी प्रकृति है। फिर वह श्रानन्द चाहे एिंगिक हो या

स्थाई। इसिबये प्रकृति ने इस वस्तु में लोकोत्तर आनन्द को आदान प्रदान करने की शक्ति उत्पन्न करदी है। डा॰ फाउलर का कथन है कि प्रेम अपने प्रेम पात्रों का रूप गुण उत्पन्न करता है। इसका अर्थ यह है कि दम्पति परस्पर यह चाहते हैं कि वे अपने पति परनी के रूप गुण का ठीक अनुकरण अपने पुत्र में देखें। गरज-यौवन, सौन्दर्य और गुण से प्रकृति स्त्री और पुरुषों को एक दूसरे की ओर आकृष्ट करके प्रेम में लीन कर देती है और फिर उन्हें आनन्द के प्रलो-भन में विभक्त करके और ठीक परस्पर की स्त्रवि के अनुकरण की लालसा उत्पन्न करके ऐसे पुत्र के उत्पादन के लिए विवश करती है, जिसे पीढी दर पीढी तक वह नस्ल वैसी ही बनी रहेगी।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि उत्तम सन्तित तब तक नहीं उत्पन्न हो सकती जब तक दम्पित में उत्कट प्रेम, बासना, उमंग, श्रानन्द श्रीर उत्साह नहो। उत्तम स्थिति में ही उत्तम संतान उत्पन्न होती हैं। गर्भधान के समय दम्पित की जो मनो वृत्ति होती है। उसका गर्भ पर स्थिर प्रभाव पहता है।

श्राक्तिक तथा जातीय प्रवाह द्वारा उत्पन्न हुए मनुष्य का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में जो परस्पर सिख सिला

बना रहता है, उसी का नाम वंश परम्परा है, श्रर्थात् उत्तरोत्तर गुणों युक्त ही मनुष्यों का श्रवतरण कुल प्रवाह के नाम से प्रख्यात है।

मनुष्य शरीर के वह परमाणु जो अपने सदृश श्राकृति को दूसरे शरीर में धारण करते हैं, वही उत्तरीत्तर पीढ़ी दर पीढ़ी बचों में उतरते श्रीर प्रगट होते रहते हैं। इसी शक्ति के श्रनुसार बच्चों में वंश परम्परा से दोष या गुण उतरते हैं. जैसे - श्रांख की रहत, बाल, चमड़ा, कद वजन, गाने बजाने में, चित्रकारी में, साहित्य में, गणित में या स्मरण शक्ति में विशेषता, शारीरिक, तथा मानसिक, एवं हार्दिक बल, बोलने, सुनने, देखने में भ्रम्तर, पैतृक नशेबाजी तथा कुरीतियों की श्रोर फ़ुकाव, पैतुक रोग, चय, मृगी, उपदंश श्रादि, स्वाभाविक ही उनमें प्रगट हो जाया करते हैं। इससे जिनके माता पिता जिन २ रोगों में प्रसित होते रहे हों उनके पुत्रभो उस ध्यवस्था के श्रनुसार उसी रोग से प्रसित होते रहते हैं। या उक्त प्रकार से-गुणों से भरपर हो जाते हैं। अक्सर देखा गया है कि मनुष्य केवल अपने माता पिता ही से उत्पन्न नहीं हुन्ना करता। किन्तु जिस बीज से बच्चे की उत्पत्ति होती है, उसमें उसके पूर्वज वंश-धरों का श्रंश भी होता है, जैसे कई पुत्र माता पिता से

उरहृष्ट गुण वाले हो जाते हैं— उनमें उनके पितामह, पितामही, एवं नाना, नानी, आदि से गुण या श्रवगुण का चौथाई श्रंश श्रवश्य ही श्राता रहता है। जिससे उस सन्तान पर वही प्रभाव प्रगट हुशा करता है।

सन्तान में माता के गुणों का श्रधिकावेश होता है, स्रतः यह निश्चय है कि सन्तान माता के गुणों से ही श्रधिक स्रतंकृत होती है,पर इससे यह नहीं सममना चाहिये कि पैतृक गुण उसमें श्राये ही नहीं, किन्तु उनका विशेष श्राविमांव नहीं हुआ। ठीक इस रीति से किसी सन्तान में पैतृक गुणों की, किसी में मातृक गुणों की श्रधिकता पाई जाती है, एक की श्रधानता में दूसरा गीण हो जाता है।

अतएव यदि संतित का सुधार चाहते हो तो प्राकृतिक नियमों का ज्ञान, तदनुसरण करने या कराते रहने से कई पीढ़ियों के अनन्तर सब दोप नष्ट होकर सद्गुणों ही का प्रादुर्भाव हुआ करेगा। उनके प्रभाव से भावी सन्तान को कष्ट न भोगना पड़ेगा। एवं भारत जनता को पिंच्य कर माला का सिर उंचा करना या उसे रसातज के गढ़े में गिराना, ये दोनों कार्य हमारे हाथ में हैं। अतः बुद्धिमान् मनुष्य स्वयं विचारकर उस मार्ग पर चलें जो श्रेष्ठ स्थान पर पहुंचादे।

गाल्डन साहेब ने खोज की है कि सामान्यतः बच्चे की शरीर रचना का आधा भाग तो माता पिता दोनों मिलकर पूर्ण करते हैं। बाकी आधा पूर्व पुरुषों से या वंश परंपरा से आता है। जिसका ज्यौरा इस प्रकार है—माता पिता से प्राप्त गुण अवगुण का आधा अंश, अर्थात् प्रथक् चौथाई चौथाई अंश, इसी भाँति पितामह, पितामही, माता मह, पितामही इन चारों का चौथाई अंश, या प्रयेक का सोजहवाँ अंश। इसी प्रकार आगे भी गुण अवगुणों का सिलसिका चलता है। यह इस प्रकार हुआ—

माता पिता से प्राप्त हुन्ना स्वभाव	१ श्रंश २
दादा अथवा दादी से प्राप्त स्वभाव	¹ - श्रंश ४
नाना श्रथवा नानी ,, ,,	<u>१</u> श्रंश
परदादा श्रीर पर दादी ,, ,,	१ १६ संश
परनाना श्रौर परनानी ,, ,,	१ - श्रंश ३२

इस हिसाब में महत्व यह है कि प्रत्येक श्रंक पिछु जे श्रंकों के जोड़ के बराबर होता है। जैसे —

$$\frac{3}{2} = \frac{9}{8} + \frac{9}{5} + \frac{9}{16} + \frac$$

इसी भाँति दूर तक हिसाब चला जायगा ।

गाल्टन द्वारा निर्धारित यह व्यवस्था बहुत कुछ प्राचुमानिक है। परन्तु दाय में यह बिल्कुल ठीक बैठती है। यह निश्चित दाय कहाता है। इसके सिवा दो दाय और भी हैं एक – व्यावर्तक दूसरा — विक्षक्त ।

व्यावर्त क दाय में कभी मातृक और कभी पैत्तिक गुर्यों का लोप सा पाया जाता है। संतित में माता ही के गुर्यों का अधिकावेश होता है। इसका कारण ऐसा प्रतीत होता है कि संतान में माता का ही श्रंश अधिक है। पर इसका यह अर्थ नहीं कि उसमें पैतृक श्रंश है ही नहीं।

निर्दिष्ट या विलक्त या दाय में किसी विशेष गुया का विकास होता है जो न तो पूर्णतया पैतृक ही कहा जा सकता है धौर न मातृक ही। जैसे घोड़े गधे से ख़चर। हस श्रवस्था में कभी २ पुत्र में माता पिता से विलक्त गुया पाये जाते थे। पर खोज से पवा लगता है कि वे उसके किसी पूर्व पुरुष में श्रवश्य ही थे। विज्ञान वेत्ताश्रों का मत है कि इसका कारण यह है कि बहुधा गुया पीढ़ियों तक छिपे पड़े रहते हैं। श्रीर किसी प्राकृत कारण से वे विकसित नहीं हो पाते।

डा० डावेन्पोर्ट ने वंश परंपरा से श्राने वाले ४१
गुर्गों की गणना की है। श्राँस की रंगत, वाल, चमड़ा,
कद, वज्ञन, सँगीत, चित्रकला, साहित्य, गणित,
स्मर्गाशकि, शरीर बल, भाषण, श्रवण, दृष्टि, म्बभाव,
नशा, श्रपराध, रोग, चय, मृगी श्रादि।

लंदन से ऐसी कुछ पुस्तकाएँ प्रकाशित हुईं थीं, जिनमें श्रनेक परिवारों के वंश्रजों का स्थीरा दिया गया था। उसमें नकशों के ज़रिये इस बात को स्पष्ट करने की चेष्टा की गई थी कि गुयों श्रवगुयों, तथा रोग श्रादि से वंश परंपरा का कितना धनिष्ट सम्बन्ध है। श्रीर ये गुया दोष पीढ़ी दर पीढ़ी चल्लकर भी नष्ट नहीं होते। इससे

यह प्रमाणित होता है कि सन्तान माता से ही नहीं प्रस्युत् उस बीज से उत्पन्न होती है, जिसमें पूर्व वंश-धरों का भी भाग रहता है।

मनु ने श्रीर श्रन्य श्राचारशास्त्रियों ने माता के श्रमणिएएड श्रीर पिता के श्रगोत्र कुल में व्याहने का विधान किया है। तथा कुल, गोत्र, प्रवर, शासा, श्रादि सात बातों का दिभक्तीकरण है। श्रीर विवाह शादियों में हन सब बातों को जो देखने भाजने का विवेचन किया गया है। विधान शास्त्रों में लिखा है—

जो स्त्री माता की ६ पीढ़ी और पिता के गोत्र की न हो वही विद्वानों के लिए विवाह ने योग्य है। धारो दश कुल बताये हैं जिनमें विवाह नहीं करना चाहिए— वे मे हैं—

- १ जिस कुल में उत्तम किया न हो।
- २-- जिस कल में कोई उत्तम पुरुष न हो।
- ३ जिस कुल में कोई विद्वान न हो।
- ४ जिस कुल में शरीर पर बड़े र लोम हों।
- ५-जिस कुल में बवासीर का रोग हो।
- ६ -- जिस कुल में चय (यचमा) दिक का रोग हो।

- ७-- जिस कुल में ग्रहणी श्रादि शेग हो।
- म- जिस कुल में मृगी की बीमारी हो।
- श्—ि जिस कुल में श्वेतकुष्ठ का रोग हो।
- १०-- जिस कुद में गलित कुछ का रोग हो।

निम्न वर्णित कन्या से विवाह न करे-

- १-- पीले वर्ण वाली।
- २ अधिक अंग वाली, जैसे हैं अँगुली की।
- ३ जिसके शरीर पर बिल्कुल रोम न हों।
- ४ जिसके शरीर पर बड़े २ रोम हों।
- ४ व्यर्थ अधिक बोलने वाली।
- ६ खँजे [बिल्ली जैसे] नेत्रों वाली।
- ७--- नच्छ नाम वाली जैसे रोहिणी श्रादि।
- म नदी नाम वाली जैसे गङ्गा श्रादि।
- ध-पर्वत नाम वाली जैसे-विनध्याचला श्रादि ।
- १०-पत्ती नाम वाली-जैसे मैना, हंसा श्रादि।
- ११ सर्प के नाम वाली जैसे नागनी, उरगा श्रादि।
- १२ प्रेष्य नाम वाजी-जैसे दासी भादि।
- १३--भयानक नाम वाली-जैसे कालिका, चिएडका श्रादि। कैसी कम्या से विवाह करे---

- १-सुन्दर नामवाली, जैसे-मधुश्रवा, यशोदा, सौभाग्यवती।
- २-इंस और हाथी के समान धीरे श्रीर सलज चलनेवाली।
- ३-सूचम लोम, सूचम केश, सूचम वाँत वाली ।
- ४ मधुर भाषण भौर मृदु श्रंग वाली।
- ४- जो पिता के गोत्र तथा माता की पीढ़ी में न हो।

संसार में केवल मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जो हर समय कुछ न कुछ विचारा करता है। उसके छोटे से छोटे और बड़े से बड़े कार्यों का मूल विचार ही है। प्रथम मन की शक्ति चलायमान होती है फिर दूसरे श्रंग इस शक्ति की श्राज्ञा पर कार्य करते हैं। इस शक्ति की सहायता के बिना कुछ नहीं हो सकता।

इन विचारों का कम्पन श्राकाश में श्रान्दोलन उत्पन्न करता है। जैसे तालाब में एक छोटा सा कंकड़ फेंक देने से उसमें एक लहर उत्पन्न होती है उसी प्रकार विचार की जहर समस्त वातावरण में कम्पन उत्पन्न कर देती है।

'ईथर' एक तत्व है जो श्राकाश के स्थानापस्त है। इसमें श्रीर वायु मण्डल में एक सैंडिंक में ५० हज़ार तक कम्पन उत्पन्न हो सकते हैं। जिन में ४।५ हज़ार तक को संख्या को मनुष्य सुन सकता है। ईथर के परमाण इतने स्कम है कि सोने जैसे घन द्रव्य के एक परमाण में ईथर

के जाखों परमाणु हैं। प्रत्येक विचार जो मास्तिष्क में उत्पन्न होते हैं 'ईथर' पर प्रभाव डाजते हैं , इस प्रकार ईथर पर हमारे विचार श्रंकित हो जाते हैं । जर्मनी के एक डाक्टर ने तो उनके चित्र तक लिये हैं। सुनते हैं कि एक बार एक युवक अपनी प्रेमिका के विचार में मग्न था कि उक्त डाक्टर ने ईथर से उस कल्पित प्रेमिका का चित्र उतार लिया। स्मर्ण रखने योग्य बात यह है कि जल में उठी लहरें शीव नष्ट हो जाती हैं परन्तु ईश्वर में उत्पन्न हुआ कम्पन अमर रह जाता है। यही सत्य सिद्धान्त है जो गर्भस्थ शिशु पर माता पिता के विचारों का प्रभाव डालता है। यही वह गम्भीर सत्य हैं जिसके श्राधार पर श्रर्जुन पुत्र श्रभिमन्यु ने गर्भ ही में चक ब्यूह में प्रवेश करना सीख किया था-क्योंकि एक बार अर्जुन ने सुभद्रा से उस समय यह भेद कहा था जबकि श्रभिमन्यु गर्भ में था। इस लिये स्मर्ण रखना चाहिये कि गर्भाधान के समय से खेकर प्रसव तक माता के प्रत्येक विचार की छाप बच्चे पर पडेगी। और वह उसी श्राकृति, रूप रङ्ग, स्वभाव, योग्यता, शरीर सम्पति, वाका उत्पन्न होता है जैसे विचार उसे प्राप्त होते हैं।

प्राची शास्त्र के अध्ययम करने से इमको पक्षा लगेगा कि प्राचियों का आकार और स्वभाव उनकी इच्छा और

आवरयकता के अनुसार विकसित हुआ तथा बना है। उनके किसी आंग या अवयव का विकसित होना या लोप हो जाना उनकी मनः शक्ति पर निर्भर है। सिंह की विकराज मूर्ति उसके उम्र स्वभाव के कारण और गौ की शान्त मूर्ति उसके शान्त जीवन के कारण है। एक जान-वर को पालतू है उसमें और उसी जाति के जंगजी जानवर में बहुत अन्तर होता है। पालतू जानवरों का स्वभाव शान्त और जंगजियों का उम्र होता है। अनेक रेंगने वाले जीवों ने सैकड़ों हज़ारों वर्ष तक पैरों की इच्छा उत्पक्त करके वैर पैदा कर जिये, मझजियों ने पर उत्पन्न कर जिये, की हों ने भाँति २ के रंग और रूप उत्पन्न कर जिये। खता और पुष्पों में भी विचिन्न वर्णन हो गये। यह सब मानसिक शक्ति का प्रभाव है।

इन बातों से आप समम सकते हैं कि मानसिक शक्ति बक्चे के विकास में कितनी सहायक है। वीरबर नेपोबियन जब गर्भ में था तब उसकी माता ने प्रूटार्क सचेत वोर पुरुषों के जीवन पढ़े थे। वह तेज घोड़े पर सवारी किया करती थी। और अपने पति के आधीन सैनिकों पर रानी की भाँति हुक्म खलाया करती थी। उस मानसिक शक्ति

का विकास ही था कि उसे नेपौक्षियन जैसा वीर पुत्र श्राप्त हुन्ना।

'चारुसं, श्रीर 'किंग्सले, जब गर्भ में थे तब उनकी माताश्रों ने श्रपना मन वैराग्य की श्रोर फेरा था। श्रीर वह विरक्त की भाँति नगर का जीवन छोड़ श्राम में रहती थी। श्रीर सृष्टि सौन्दर्य में मन जगाती थी। यह काम उसने श्रपने गर्भस्थ शिशु पर प्रभाव डालने के जिये जान बूक कर किया था। फल स्वरूप किंग्सले महान् धर्माध्यक्त श्रीर सृष्टि सौन्दर्य पर प्रबल लेखक हुश्रा।

श्री कृष्ण श्रीर रुकिमिणी के प्रेम का ही यह फल था कि उनके पुत्र प्रद्युग्न श्रीर कृष्ण में बाल बराबर भी श्रान्तर न था। वे इस प्रकार कृष्ण से मिलते थे कि स्वयं कृष्ण को भी सन्देह होने लगा था कि क्या यह मैं ही हूँ। कृष्ण का रूप ही नहीं गुण भी पूर्णत्या प्रद्युग्न में थे।

एक श्रमेरिकन दम्पित ने एक सुन्दर बालक का चित्र खरीदा श्रीर जब स्त्री गर्भ वती हुई वह बहुधा उसे देखा करती थी। बालक उसी की श्राकृति पर हुआ।

एक श्रंग्रेज़ एक हवशी स्त्री से प्रेम करता था। यह स्त्री मर गई तब उसने गोरी स्त्री से विवाह किया। उससे स्त्रो पुत्र उरएस हुस्रा, वह हवशी स्त्री के समान था। इसका

कारण यह था कि गर्भाधान की किया के समय उसी हवशी स्त्री का विचार उसके मस्तिष्क में था। रोम का एक न्यायाधीश बहुत ही बदसूरत था, इसका प्रथम पुत्र भी ऐसा ही हुआ। न्यायाधीश सुन्दर पुत्र चाहता था, अतः उसने उस समय के विख्यात डा० गैलन की सम्मति ली। तथा उसने उसकी स्त्री के सोने के कमरे में एक सुन्दर बालक की तस्वीर बनवा कर टंगवादी। इस बार को बच्चा हुआ वह आशातीत सुन्दर था।

एक स्त्री बच्चे को सोने के लिये अफीम खिला कर कहीं चली गई थो। पर अफीम की मात्रा बढ़ जाने से बच्चा मर गया। स्त्री को अत्यन्त रंज हुआ। उसी दशा में उसे फिर गर्भ रह गया। परिखाम यह हुआ कि जो बच्चा हुआ। वह रोगी और कमज़ोर था। उसे जन्म से ही मस्तिष्क विकार था, दो वर्ष रोगी रह कर वह मर गया।

महासती मन्दालसा ने किस भाँति इच्छित पुत्र उत्पन्न किये थे यह भी सब पर प्रकट है।

ऋध्याय तीसरा

शिचा का दृष्टि कोगा

एक बार मैं अपने एक सम्मान्य मित्र के साथ जंगल की हवा खाने गया। सुन्दर हरी भरी पहाड़ियों के बीच में एक हरियाजे मैदान पर स्वच्छ जल की कुदरती छोटी सी मील थी। सोने की तरह दोपहर की सूर्य किरयों में उसका जल चमक रहा था। उस मील के ठीक बीचों बीच पानी के उपर एक ठेक निकल आई थी। उस पर बहुत ही सुन्दर सफेद रंग के कई जल पत्ती बड़ी सुन्दर पंक्ति में बैठे चहक रहे थे। उन्हें देख कर मेरे बुजुर्ग मित्र ने कहा—"श्रहा? देखों ये सुन्दर पत्ती एक पँक्ति में इकट्ठे बैठे

कैसे सुन्दर मालूम देते हैं। मैंने उन पर एक चाह की इष्टि डाली और फिर मित्र की तरफ्र तीव इष्टि से देखकर कहा—

"यह इनका सौभाग्य है कि ये ग्रॅंग्रेजी पढ़े तिखे नहीं हैं, नहीं तो ग्राज इनमें यह एकन्न होने की सुन्दरता न होती। इनमें से एक उस पहाड़ी की टेकरी पर बैठा चौंच रगड़ता होता, दूसरा उस बृत्त के ठूठ पर मख़ मारता। तीसरा वहाँ जँगल में भटकता, चौथा इधर उधर सिर्फ पेट भरने को फिरता होता। ये लोग अपनी २ बैठने की जगह में इद बनाते। उनके लिए लड़ते, मरते, इज्जत का ख्याल करते, ग्रदब कायदे से बैठते।"

मेरे मित्र मेरी बात पर हँसने जा। वे सैर करने आये थे। बहस करने नहीं, पर उन पित्रयों की वह सुन्दरता मेरी नजर से नहीं उतरती है। मैं श्रकसर जब पढ़े लिखे युवर्कों को पीला गात, खूला निस्तेज मुँह, गढ़े में धसी श्राँखें, पिचके गाल, गद् गद् वायो,, श्रौर काँपते हाथों से जिस तिस के दर्वाजे पर अपनी योग्यता की खुर्चन का वरडल जेब में भरे भटकता देखता हूँ। फटकार खाते, श्रौर निकम्मे, श्रनावरयक श्रौर नालायक बन कर धका खाते देखता हूँ। तो वे पन्नी मेरी श्राँखों में

तस्वीर बन जाते हैं। क्या मनुष्य के ही भाग्य फूटने को थे? क्या यह श्रपमान—तिरस्कार श्रीर कड़वे जीवन का शाप मनुष्य के बच्चों पर ही पड़ने को था। मेरी छाती जल जाती हैं—मैं बेचैन हो जाता हूँ।

एक दिन मेरे पूज्य पिता जी कहने जगे-न जाने संसार किस तरफ जारहा है। श्रीर इसका क्या होना है। प्रत्येक पीढ़ी की नस्ल गिर रही है। ग्रव से ४०-६० वर्ष प्रथम ही प्रत्येक पुरुष पूरा कहावर, पृष्ट, निरोग और परि-श्रमी था। प्रत्येक के चार चार, छः छः लक्कड़ के समान बेटे होते थे। कोई निपता नहीं था. एक जवान जब लकडी पकडता था. तब पचासों की मण्डली को भारी हो जाता था। दिन पर दिन लोग बिना सन्तान के हो रहे हैं। सन्तान होती भी हैं। तो मरी, गिरी, रोगी, हुर्वल, श्रपाहिज, श्रीर बेदम, - उन्हें वे स्कूल के मुर्गीखाने में पिटने और गालियाँ खाने को भेज देते हैं। बेचारे फुल से बच्चे आँस पीते हैं, गम खाते हैं, थर थर काँप कर दिन काटते हैं। ऐसी भी क्या आफ़त है, यह पढ़ाई क्या कुल का उद्धार करेगी, हमने तो इसमें वही मसल देखी कि-''सारी रात रोए एक ही मरा।"

श्रनेकों वार श्रपने बचपन मैंने पिता जी की जवानी

की बातें सुनी हैं। जिन्हें वे सदा अपने मित्रों से कहा करते थे। धीरे २ मैं उनका सार जान रहा हूँ, मैं अपनी आयु के और उनसे पीछे के जवानों को देखता हूँ। तो थक कर रह जाता हूँ। मानो मर्दानगी इन से रूठ गई है। उत्फुखता मर गई है, उठाव मसज डाजा गया है। मुर्दे, कमज़ोर, रोगी और टूटे हुए ये नौजवान घर घर में पढ़े डुकड़े तोड़ रहे हैं।

सारे संसार की सभ्य जातियाँ इस बात पर एक मत
हैं कि बच्चे माता पिता की सम्पत्ति नहीं हैं वे समाज की
सम्पत्ति हैं । समाज को जब जब जितने और जैसे बच्चों
की आवश्यकता हुई तब तब वैसे ही उरपन्न करने को
उसने सर्वसाधारण को उत्तेजन और सहायता दी ।
निकम्मे - दब्बु और उरपोक तथा श्रलपायु बच्चों को
समाज ने कभी जीवित नहीं रहने दिया। जो देश सुखी
समृद्धशाली होगा, उसकी जनसंख्या बदनी सम्भव ही
है, पर जनसंख्या की निस्सीम वृद्धि से जो समाज पर
आपत्तियाँ आती हैं, उसे रोकना भी बुद्धिमानी का काम
है। प्राचीन काल में भारत के सहयोगी श्रीस देश के
नेता कीट, सोलन, प्लेटो, और श्ररस्तु, आदि को —
बच्चों की उरपत्ति समाज की मुद्दी में रहे और निस्सीम

जनवृद्धि न होने पावे—इस सम्बन्ध में चेष्टा करनी पड़ी थी।

प्लेटो ने स्वतन्त्र राज्यों की स्वतन्त्र प्रजा के मनुष्यों की, और निवास स्थानों की संख्या १०४० निर्णात की थी। इस संख्या में कमो बेशी न होने पावे यह प्रबन्ध करना उस राज्य के मजिस्ष्ट्रेट का काम था। पिता के यदि एक से अधिक पुत्र हों तो वह उन्हें बिना पुत्र वालों को दे डाले—और पुत्री को ब्याह में दान देकर अपने एक पुत्र को ही समस्त सम्पत्ति का स्वामी बनावे। इस तरह पिता की मृत्यु के पीछे उस कुटुम्ब में एक ही पुरुष रह खायगा—और स्वतन्त्र प्रजा की संख्या समान स्थिर रहेगी।

मिनस्ट्रेट की श्राज्ञा के विरुद्ध विवाह करना, श्रधिक सन्तानोत्पत्ति करना, निर्धारित श्रायु के पूर्व या परचात् सन्तान उत्पन्न करना, राजाज्ञा के विपरीत चलना सममा जाता था और उन्हें दण्ड देने की न्यवस्था थी।

मिलस्ट्रेट की श्राज्ञा से सर्वोत्तम प्रजा की सन्तित शहर के बाहर उन दाईयों के पास भेज दी जाती थी जो इसी कार्य के लिये नियस थीं— और श्राज्ञा विरुद्ध विवाह करने वालों की-अयोग्य, रोगश्रसिक स्त्री पुरुषों की श्रथवा श्रधिक

सम्तान पैदा करने वालों की सम्तित के लिये मित्रस्ट्रेट की कठोर भाज्ञा थी कि वे ज़िन्दा ही किसी सुन सान जंगल में ज़मीन में गाद दिये जाँय।

प्राचीन श्रार्ष पद्धति भी कुछ ऐसी थी। उस समय भी सन्तान पर माता पिता का स्वत्व नहीं था। उस समय ज्यों ही बाबक समर्थ हो जाता था-त्योंही माता पिता उसे उपनयन करके मुरुकुल को सोंप दिया करते थे-जो कि देश भर के सब प्रकार के चुने हुए बीतराग महात्माओं का निवास होता था - वहाँ वे महापुरुष उसकी रुचि. प्रारब्ध, शरीर सम्पत्ति, जीवन, बल-श्रादि का सुचम वैज्ञा-निक परिशोध करके उसी के अनुकृत शिक्षा देते और अन्त में उसकी परिपक अवस्था में उसके गुण कर्मों की जाँच की जाती और अपने मन बचन कर्म की संघशक्ति को वह जिस प्रकार समाज सेवा में लगाने योग्य होता - उसी योग्य श्रेगी (वर्गा) में उसे प्रवेश करा दिया जाता था। सामाजिक सुन्दरता श्रीर प्रेम बनाये रखने के लिये यह कैसी सुन्दर रीति थी। राजा श्रीर रंक प्रत्येक का बाखक गुरुकुल विना जाऐ नहीं रह सकता था—श्रौर सब को अपना कुलगौरव त्यागकर भ्रात भाव से विनीत होकर गुरु सेवा और भिक्ता द्वारा विद्योगार्जन करना पड़ा करता था।

श्राज कितने अनाथ बालक वालिकार्ये गली गली भिन्ना माँगते फिरते हैं। श्रीर उन्हें घर की देवियां श्रीर दुकान के देवता किस प्रकार कुत्तों की तरह दुर्दु राया करते हैं - और उनके सुन्दर सुन्दर नौनिहाल किस प्रकार मलाई खाकर भृं ठा दौना उनकी श्रोर फैंक कर एकाध लात श्रीर एकाध दुर्वाक्य ठोक देते हैं। उस समय यह राज्सी दृश्य बहीं था। ज्योंही किसी बालकने-प्रिय मधुर स्वर से द्वार पर श्राकर पुकारा "माता भिचा" तो प्रत्येक गृह्णी की छाती में दूध उमराड श्राता था - उसे तुरन्त स्मर्ण होता था-उसका लड़का भी कहीं इसी प्रकार किसी द्वार पर किसी को "माता भिचा" कह रहा होगा-वह दौड कर श्रपने ही पुत्र की तरह उसे स्नेह करती श्रीर घर में जो कुछ होता उसकी गोद में डाल कर प्रचकारती थी। ब्राह ! कैसी स्वर्गीय जातीयता थी, क्या हो प्यारा संगठन था: कहाँ गया वह काल श्रीर कहाँ गया वह कम !!!

सम्पदा विहारी हुब्स श्रीर दिरद्र मूर्ति सुदामा की वह श्रक्षोंकिक मित्रता क्या गुरुकुल प्रणाली विना संभव हो सकती है ?

किन्तु वह सब क्रम बिगड़ गया। मनुष्य ने संसार में जन्म लेकर संसार का खाया है संसार का वह ऋगी है—

श्रपना प्रतिनिधि स्वरूप थोग्य पुत्र संसार की सेवा को देकर वह उन्ध्रण होता है-यही पुत्र शब्द का श्रथं भी है—पिरत्राण करने वाला—उद्धार करने वाला-पुत्र होता है। इसी लिये सन्तान को पैदा किया जाता है। पुत्र को उत्पन्न करना श्रीर यथा शक्य योग्य बनाकर गुरुकुल को सोंप देना श्रीर संसार में सम्मान पूर्वक रहने की योग्यता होने पर स्वयं सब कुछ उसे देकर वानप्रस्थ हो जाना यह प्राचीन पद्धति थी। पर जब क्रम बिगड़ गया श्रीर मनुष्य स्वार्थ का कीड़ा बन गया—सन्तान को श्रपने बुड़ापे में [?] सुख देने की लालसा से पालने लगा तो जन बल-श्रत्यन्त मीच श्रीर निकम्मा हो गया।

कारण — श्रव बच्चों को उपयुक्त शिचा नहीं दी जा सकती। श्रनेकों से हमने पूंछा-किहए श्रापका लड़का क्या पढ़ता है-तो जवाब मिला! श्रजी पढ़ा लिखाकर क्या हमें नौकरी कराना है-चिट्टो पत्री लिखना-हिसाब किताब जाँचना श्रा गया-बस हमारी दुकान को यही बहुत है। ऐसा ही उत्तर कन्याग्रों के लिए भी सुना गया-कि पढ़ा लिखा कर क्या दफ़्तर भेजना है! इत्यादि। यह कैसी नीचता और नामदीं का उत्तर है कि श्रपने स्वार्थ से हम एक होनहार बालक की समस्त बढ़वार रोक देते हैं, और

मन माने ढ़ंग से कांट छाँट कर उसके जीवन को श्रपनी गुजामी के उपयुक्त बना जेते हैं-क्या यह श्रस्याचार-घोर श्रस्याचार नहीं है ?

इसका परिणाम यह हुआ कि हमारे देश की बहुत बड़ी संख्या भी संसार के सामने मुल्यवानू साबित नहीं हुई। जर्मनी के ६ करोड़-इंग्लैयड के ४ करोड़-श्रीर फ्रांस के ४ करोड़ मनुष्यों का जितना मूल्य है, उतना एक श्रोर रहा, उससे पचीसवाँ हिस्सा भी मूल्य हमारे ३४॥ करोड़ मनुष्यों का नहीं है। हम बिल्कुल निकम्मे-वोदे-पोच-कायर श्रीर पाजी बच्चे पैदा कर रहे हैं. जो संसार के बाजार में निहायत निकृष्ट दर पर बिकते हैं श्रीर श्रब तो किसी भाव भी कोई नहीं खरीदता ! कैसे खेद की बात है कि जिनके पूर्वजों के पादस्पर्श को संसार सौभाग्य समकता था उनकी सन्तान को कोई किसी भाव भी नहीं ख़रीदता! पर इसमें दोष हमारा हो है; क्योंकि हर एक वस्तु को मूल्य तीन बातों पर निर्भर है- १ उपयोगिता, २ टिकाऊपन श्रीर ३ सुन्दरता । एक घड़ी श्राप ख़रीदिये, वह वक़्त देने में, सच्चेपन में, सुन्दरता में और टिकाऊपन में जितनी श्रव्ही होगी उतनी ही अधिक मुख्य में मिलेगी। अब हमें यह देखना है कि हमारे बच्चे इस कसौटी पर कैसे उतरते हैं।

पहले उपयोगिता को जीनियेगा - प्रत्येक महकमे में चाहे वह शारीरिक बज्ज सम्बन्धी हो चाहे मानसिकः भारतवासी को संसार में निकृष्ट स्थान मिलता है और यदि कोई उत्तम स्थान दे भी दिया जाता है तो वह सदा उसकी मर्यादा का कुरिसत प्रयोग करता रहता है। मैं कुछ इने गिने सजनों की बात नहीं कहता, जो वास्तव में उचाशयः डोते हैं-श्रभिप्राय सरसरी नज़र से है। माननीय मेकितयाङ के अनुसार अमेरिका का एक अमी ५ टन, इंग्लैंग्ड का १।। टन, भारत का सिर्फ़ ।। टन कोयला प्रति दिन खोद सकता है। अर्थात् एक अमेरिकिन् श्रमी दश भारतीयों के बराबर शरीर परिश्रम में उपयोगी है। इस लेख में चाहे जो अत्युक्ति हो-पर हम इसके मृत में समाई श्रवश्य पाते हैं श्रीर उसके कारण प्रत्यत्त हैं। सक प्रकार के शारीरिक श्रीर मानसिक बजों के लिये जातीयता. पुष्टि कर उत्तम भोजन, श्रन्छे स्वन्छ मकान, जाभ की श्राशा-निश्चिन्त मन श्रीर स्वतन्त्रता की श्रावश्यकता है-को भारत के बच्चों से कोसों दूर है। जिन श्रभागों को सात पुरत से सदा श्रम खाते खाते-कुत्तों श्रीर सुश्ररों से से भी निकृष्ट स्थिति में रहते रहते-मजेरिया-तिल्ली-जय-और ज्वास के रोग पैत्रिक सम्पत्ति के रूप में भाल पड़ पर लिख

दिये गये हैं उनके शरीर और मन की शक्तियाँ कहाँ ठहर सकती हैं? और वे उनका क्या उपयोग कर सकते हैं?

हमारे बच्चों को न शिचा का-न रचा का-न काम करने का - न सुख से रहने का-न श्रपने को पहचानने का सुभीता है तो वे क्या उपयोगी बन सकते हैं? श्रवस्था यहाँ तक गिर गई है कि संसार की सभ्य जातियों में भार-तीय कुली भी नाक भों सिकोड़ कर स्वीकार किये जाते हैं! कैसे मज़े की बात है - अपने घर के बड़े बड़े पर. श्रक्रसरी-प्रोक्रेसरी-इञ्जीनियरी श्रादि पराये हाथों में सोंप कर हम जब उनके घर मजूरो की भीख माँगने जाते हैं तो कुत्तों की तरह दुद्रियो जाते हैं! इस अपने घर में-अपने देश में-रह कर तीसरे दर्जे में सफ़र करते हैं, सदा सस्ता मोटा श्रम खाते हैं - दिन भर पसीना बहाते हैं श्रीर भरी जवानी में कुत्तों की मौत मर जाते हैं-श्रीर संसार के प्रवासी हमारे उसी दरिद्र घर में रिज़र्व फ्रस्ट क्लास में सफ्रर करते, उत्तम बंगलों का स्वर्गसुख लूटते और खाते २ जो बच रहता-उसे अपने बढ़े २ पाकिटों में भर कर अपने भाग्यवान घरों को ले जाते हैं। तब इम यह समर्भे कि हमारा घर ग़रीब-निकन्मा-और किसी काम का नहीं

है या यह समर्के कि हम ही किसी उपयोग के नहीं हैं ? प्रमाग तो पिछली हो बात के मिलते हैं।

भारतवासियों की पैतृक सम्पत्ति का मृत्य प्रतिजन १४ =) श्रीर श्रॅंभेज़ों का ४४००) द० है। भारत की जातीय सम्पत्ति ४४००००००००० [चोंच्वन श्ररब रू०] श्रॉंकी जाती है, पर श्रमेरिका की ३३१ श्ररब श्रीर चर्मनी की २४० श्ररब, भ्रेटब्रिटेन श्रायर्लेग्ड की २५० श्ररब रूपये श्रॉंकी गई है, हालां कि भारत की श्रावादो हन देशों से ४ या छःगुनी श्रधिक है!!!

सन् १८४० में प्रत्येक भारतवासी की श्रामदनी प्रति
व्यक्ति में पैसे थो। सन् १८२२ में सरकारी रिपोर्ट द्वारा फ्री
श्रादमी की फ्री दिन की श्रामदनी ६ पैसे ठहरी-श्रीर सन्
१८०० में डिग्वीसाहेब के हिसाब से यह घट कर कुल
)।।। रह गई। श्रमेरिका वालों की १।।।८) श्रास्ट्रेलिया
की १।।।८) इंग्लैण्ड की १।।) फ्रांस की १।) जर्मनी की १)
श्रास्ट्रिया की ।।८) इटली की ।।८) श्रीर हमारी सिर्फ ३
पैसे !! कहिये, हम कैसे उपयोगी श्रीर कमाज हैं ? यह न
समक्ता कि भारत दिन्द है इससे योग्यता होने पर भी
नहीं कमा सकते। यही भारत प्रतिवर्ष विदेशी श्रक्तसरों को
२२।। करोड़ रुपया तन्त्रा देता है। जो रिश्वत श्रीर

डानियों में पेट भर कर सारी बचत घर की भेज देते हैं।

वे लोग मूंठे हैं, जो कहते हैं कि भारत में समृद्धि नहीं हो सकती; भारतीयों का दिरद्र रहना प्राकृत है। प्रसिद्ध मौलसवर्थ का कथन है कि—

'भारत भूमि धन की खान है"

इसमें नाना प्रकार के खेती-खनिज-शौर उद्योग के लिये प्राकृतिक सामान हैं, उत्तम कोयला है, उन्दा मिटी का तेल है, लोहे और लकड़ी की उत्तमता देखकर इंग्लैंड वालों की राल टपक पड़ती है, सोना, चाँदी, तांबा, टीन और श्रनेक रतों की कमी नहीं है यहाँ तक कि रेडियम भी पुष्कल प्रमाण में पाई गई है। तिस पर भी भारत भूखों मरता है!!

सन् १८०१ ई० से १८२४ तक २४ सालों में सम्पूर्ण भारत में १४ लाख मनुष्य अकाल में भूखे तहफ तहफ कर मर गये। सन् १८२४ से १८४० तक इन २४ वर्षों में और भी अधिक अकाल का ज़ोर रहा। सन् १८४० से १८७४ तक (२४ वर्षों में) देश में ६ बार अकाल पड़ा और ४० लाख आदमी भूख से छटपटा कर इस कोक से कूंच कर गये। पर इसी सदी के अन्तिम २४ वर्षों में १८०४ से १६०० तक १८ बार प्रचरह देश न्यापी अकाल

पड़े, जिन में प्राय: २ करोड़ ६० जाख महा प्राया स्वाहा हो गये !!! इनमें से केवल पिछले १० वर्षों में ही १ करोड़ ६० लाख भारतीय भाई हाय ग्रज़ ! हाय ग्रज़ !! करते करते छटपटा कर मर गये !!! और इन की अन्तेष्ठी किया जंगली कृतों और सियारों ने की ! जो भूमि शस्य स्यामला कहाती है, माता श्रज़पूर्णा जहाँ सँसार को भीख देती हैं—उसी देश की यह कहानी है ! प्रकृति ने इस देश को इतना दिया है कि वे पदार्थ केवल इसे ही काफ़ी नहीं, सारे संसार को सुविधा से भेजे जा सकते हैं, पर कब ? जब इम श्रपनी उपयोगिता बढ़ावें और इकीं, बैरिष्टरो और बाबूगिरी को जात मारकर, गुलामी पर थूक कर स्वतन्त्र उद्योग धन्धों में योग हैं।

उपयोगिता की कहानी सुना दी गई अब टिकाऊपन को देख जीजिये।

पौष्टिक शुद्ध सात्विक भोजन का अभाव, बन्म से मृत्यु तक बनी रहने वाली दुश्चिन्ता—रहने के स्थानों में स्वच्छता की बड़ी भारी कमी, और संसार में सुखी रहने की योग्यता का अभाव-मूर्खता पूर्ण अनेकों कुरीतियाँ, गड़बड़, निराश जीवन—इन सब ने मिल कर हमारे जीवन की रस्सी को खोखला कर दिया है। अकाल और रोग और

दूसरे अनेकों उपायों से हम मृत्यु के निकट पहुँच रहे हैं— भकाज से मृत्यु के रोमांचकारी इश्य आप देख आये हैं। अब रोग से मृत्यु संकवा देखिये —

सन् १८६६ से १६०८ तक कुछ दश वर्षों के बीच में इस प्रकार मृत्यु हुईं—

पुरुष ३६६३८६४४ जनरसे ४४६६६३४० स्त्री ३७३४६४९१ हैज़ेसे ३८०७२६४ इक्ष्य ७६६८४१६४ प्लोगसे ४०१६४४३

१६०८ ई० में जो सारे संसार से भारत की मृत्यु-संख्य का मुकाबिला किया गवा था वह यह था—

भारद्रेखिया फ्री इज़ार	8.8
स्वीडन	१ १ .७
जर्मनी	16.1
इंग्लैएड	18.=
भ्रमेरिका	14.3
डेम्मार्क	13.9
श्रीर भारतव	र्ष में सतिये—

र्वगास १४.२४ संयुक्त प्रान्त ११४.%३ पंजाब १२१.४३

मध्यदेश ३८.१२ बस्बर्ह 35.25 मद्रास

905

कडिये. इस मुसीबत का भी कुछ ठिकाना है ? विकि-यम डिंग्वी साहिब का कथन है कि-

"भारतवासी रोगी ही पैदा होते हैं, और रोग से ही जानवधें की तरह मर जाते हैं ...,

श्राप कहेंगे-मरते तो सभी हैं- पर हमारा कथन तो यह है कि समय पर मरना किसी को नहीं श्रखरता, पर जब करने की उन्न होती है तभी हम मर जाते हैं। श्रंश्रेज़ों की आयु की श्रीसत ४० वर्ष है और हमारी १३ वर्ष ! इसका मूल्य देखिये-

जगत्प्रसिद्ध विवेदानन्द की मृत्यु १६ वर्ष की अवस्था में हुई। श्रीयुक्त दीनबन्धु मित्र की ४२ वर्ष में, कृष्ण स्वामी ऋईयर की ४६ वर्ष की श्रवस्था में। स्वामीराम तीर्थ की ४१ वर्ष की श्रायु में, इसी प्रकार धार्मिक राजनैतिक भ्रनेक नेता विद्वान गर्यों की मृत्य श्रक्प काल में हुई है। डारविन ने अपनी प्रसिद्ध 'विकास बाद' की प्रस्तक को ५२ वर्ष की उम्र में जिल्ला था। आर्ड केरियम साइन्स का अन्वेषण ७८ वर्ष की उम्र तक करते

रहे। सर विलियम कुक्स की श्रायु ७७ वर्ष की हुई, प्रसिद्ध श्रमेरिकन श्राविष्कारक एडीसन की श्रवस्था म् वर्ष की हुई। संसार के महापुरुष जिस उम्र में उत्तम कार्य कर सकने योग्य प्रतिभा श्रीर श्रनुभव प्राप्त कर सकते हैं उस समय तक हमारे देश के महापुरुषों की हिंडुयां भी गल सह कर मिट्टी हो जाती हैं। शोक!

फूल तो दो दिन बहारे जाँ कि जाँ दिखला गये।
हसरत उन गुञ्जों पे हैं जो विन खिले मुरभा गये।।
श्रव बगे हाथों—श्रपने सौन्दर्य का भी दिग्दर्शन कर बीजिये। सौन्दर्य ३ प्रकार का होता है—शरीर का आत्मा का, और हदय का। शरीर के सौन्दर्य का तो पूँ छना ही क्या है-सारे संसार में इस सौन्दर्य को काले छत्ते का ख़िताब मिला हुशा है! रहा श्रात्मा का सौन्दर्य-जो श्रास्तिकता, हदता और श्रात्मा की पवित्रता हारा श्राज्ञमाया जाता है; सो जिस देश में श्रसंख्य मत हों, श्रसंख्य देवता पूजे जाते हों- और किसी पर भरोसा न हो, श्रपने पहाइ से पाप को यस्त से छिपा जिया जाय और भाई की राईसी भूल के बदले धका देकर शत्रु बनाया जाय, बन्धुल-भीर सहदयता—सहानुभूति के बदले जहां मजूँरी माँगी जाय, वहाँ श्रात्मा के सौन्दर्य की तारीफ न करना ही श्रव्छा है। और हदय के

सौन्दर्य का चित्र तो आपके गृहचरित्र हैं—वह जैसे धृया-स्पद नीच, नीचतर—दुःखों के जमघर—श्रीर अत्याचार का केन्द्र बने हुए हैं उनका कोई चित्र खींचे तो वह आपके हार्दिक सौन्दर्य का चित्र होगा। पुस्तक में से कुछ चित्र फाड़ जेने के कारण एक जापानी पुस्तकालय से भारतीयों का प्रवेशाधिकार ही छिन गया था। खेद है, इससे अधिक कलुषित हृदय और क्या होगा।

श्रव आप ही कहिये कि आपके बच्चों की क्या कीमत हो सकती हैं श्रीर वे कैसे संसार में प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकते हैं।

बच्चे क्या खायेंगे—कैसे पलेंगे — किस भाँति शिचित होंगे—इस पर कभी हम विचार नहीं करते, जैसी जापर-वाही से विवाह करते हैं वैसी ही जापरवाही से बच्चे पैदा करते हैं—साफ तो यों है कि लोग व्यभिचार के जिये कियों के पास जाते हैं, बच्चे श्रपने श्रापही ज़बर्दस्ती उत्पन्न हो जाते हैं; वे बच्चे प्रष्ट-सुन्दर-उच्च कैसे बन सकते हैं। जोग समझते हैं कि उनकी श्रामद कम है-श्रधिक सम्तान को वे शिचित नहीं कर सकते—पर संयम का श्रभाव होने से वे श्रपनी कामलिप्सा में जागे रहते हैं—फलतः बेढब बदवार बद रही है।

भारत में दूध की कमी है और वह दिन दिन बदती ही जा रही है। देश में कुल ४ करोड़ गाय भेंस हैं जो ६ महीने दूध देती हैं, इस प्रकार दो करोड़ पशुओं के दूध पर ३४॥ करोड़ भारत वासी गुज़र करते हैं। श्रीसत निका-लने से १४ श्रादमियों को गुज़ारा १ गाय के दूध से होता है—जब दूध का ऐसा श्रभाव है तो दूध पर ही जीने वाले बच्चे कैसे जी सकते हैं?

इसका फल यह है कि १ वर्ष की श्रायु तक के बच्चे फ्री इजार ३३३ मर जाते हैं—श्र्यात हर ३ बच्चों में १ मर जाता है। कुल मिला कर प्रति वर्ष २८ लाख बच्चों की मृत्युं होती हैं! श्रीर यह संख्या दिन दिन बढ़ रही है।

भारत गर्म या मोतिवल देश है—जो वैज्ञानिक रीति से बच्चों के लिये हितकर होना चाहिये। चौर वहाँ की स्त्रियों को यूरोप की स्त्रियों की तरह कल कारख़ानों में भी काम नहीं करना पड़ता-केवल बच्चों का पालन भार ही रहता है। हमारे बच्चे दाई नहीं पालतीं, स्वयं मातायें ही पालती हैं—तब भी ३ बच्चों में १ मर जाता है—चौर हरलैयड में जहाँ बहुत ठएड पड़ती हैं—मातायों को दिन भर महनत मजूरी करनी पड़ती हैं— जहाँ धकसर किराये

की दाई बच्चों को पालती हैं—वहाँ १३० बच्चे प्रति हज़ार का भौसत है। अर्थात् आधे से भी कम!

सब देशों में मृत्यु संख्या कम होती जा रही है—पर भारत में बढ़ रही है। इंग्लैयड में प्रति हज़ार ७० भादमी किसी समय में मरते थे। वे श्रव कम होते होते १८६४ में ३०, १८८० में २८ और १६०१ में १४ मरने लगे।

पर भारत की मृत्यु संख्या बढ़ रही है। यहाँ १६: १ में फ्री हज़ार २६, १६०२ में ३१, १६०६ में ३४, १६०७ ३७, १६०८ में ३८ श्रादमी मरे। संयुक्त प्रान्त में तो ४३ तक मम्बर पहुँए गया है।

ये सब हत्याएँ हमारे सिर हैं-जिनका पालन हम नहीं कर सकते उन को मरने के जिये-सिर्फ़ खून चूसने के जिये उत्पन्न करना-महापाप-घोर पशुपना और घृणित असभ्यता है।

प्रसिद्ध विद्वान् मास्थस का कथन है कि —

"जब किसी देश के मनुष्यों को भर पेट भोजन नहीं मिलता तब उस देश में केवल दुर्भिष्ठ ही नहीं पड़ता। प्रत्युत ऐसे देशों में तरह तरह की तकलीफ़ें पैदा हो जाती हैं-बुरे रस्मरिवाज़ फैलते हैं और व्यभिष्ठार तथा अनाचार की वृद्धि होती है।"

इम यह सममते कि— स्कूल जाना, अंग्रेजी शिका पाना बचों के लिये जरूरी है। माता पिता का कर्तब्य हसी में पूर्ण हो जाता है, जो माता पिता बचों को अंग्रेज़ी स्कूलों में भेज देते हैं। मानो ने श्रादर्श माता पिता हैं। यहाँ पर स्कूल में होता क्या है? दुर्बल बच्चे, मनमारे, दर से काँपते, तरूते की बेंचों पर, सील भरे कमरे में श्रर्थ हीन और श्रनावश्यक बातों से परिपूर्ण, निकम्मी किताबों पर हठ पूर्वक दृष्ट जमाये बैठे रहते हैं, सामने दुर्भाग्य के अवतार, क्रोध के भैरव, पूरे मूर्ख, हृटी लियाकत की खुर्चन किये, जपजापती बेंत हाथ में लिये मास्टर साहेव मास्टरी की तौकरी बजाते हैं।

उनके श्रीमुख से श्रकाय बलाय, शुद्ध श्रशुद्ध जो निक्ले वह यदि लड़के की तस्काल श्रकल में जमकर न बैठ जाय, तो फिर सड़, तड़, पींठ पर बेंस पड़ती हैं — ग़रीब की कोमल खाल उपड़ जाती है, कमर दूवर हो जाती है। पर वह कसाई इस से भी सन्तुष्ट न हो उन्हें मुर्गी बनाता है। गाली तो मानो किसी गिनती की वस्तु ही नहीं है।

छोटे जबके पिटने के दर से और बड़े जबके इन्तिहास में फेल होने के दर से शुरू से भाखिर तक पढ़ते हैं। भौर

चाहे वे कुछ न सीखें, पर प्रेम की रसीली कविता, धाशिकी मलमुन के खत जिखना, माँग निकालना, बढ़े कालर की कमीज पहनना, बृद्ध चौर पतलून पहनना धवरय ही सीख खेते हैं। वह जहका यदि किसी कारीगर या श्रमी पिता का पुत्र हुआ तो अपने पैत्रिक कार्य में पिता का सहारा देना उसकी परम मानहानि की बात है। पिता किसी काम को कहते हैं तो तत्काल जवाब मिलता है- वाह, मुभे तो खेल में जाना है। वरना जुर्माना हो जायगा। और सचमुच जुर्माना हो भी जाता है। ज्यों र कचा जँची चढ़ती है— पुस्तकों की तादाद बढ़ती जातो है— गधे की तरह लद करके स्कूल जाते हैं और पागल की तरह दिन रात आँखें फोड़ा करते हैं।

श्रंभेज़ी शिक्षा ने हमारे मस्तिष्क से हमारे श्रतीत की स्मृति को मिटा दिया—हम क्या थे, यह भुला दिया। भले-मानस मैक्समूलर ने कहा—वेदों में किसानों के गीत हैं। हमारे स्कूल के मास्टर ने कहा हमारे पूर्वं मूर्ल, जंगली और श्रवारा थे। हम श्रसभ्य कालों की सन्तान हैं। हमने यह भी देखा—हमारा घर दरिइता की मूर्ति है। और बाहिर से श्राये हुए श्रंभेज़ सुन्दर बंगलों में बड़े ठाठ से रहते हैं। हमारे बच्चे धूख में पड़े खेलते हैं, उनके बच्चे

गुजाब के पुष्प के समान चटखते फिरते हैं। हमारी खियाँ चौके चूल्हे में जली जाती हैं, उनकी परी बनी फिरती हैं। हम दिख् भिखारी लुभा गये—उनकी श्रेष्ठता पर खलचा गये। पिछड़ा ज्ञान था, श्रतीत की शिचा देने वाला कोई न था। वर्तमान श्रत्यन्त निकृष्ट था। हम पतित हुए। हमारी यह धारणा बँध गई, कि हम इनको आदर्श मान कर श्रपना सुधार करेंगे। इनका श्रनुकरण करेंगे।

इसने पतलून बनवाई, कोट कॉलर-नेकटाई तैयार कराये और घोर गर्मी का कष्ट सहकर भी सबके सब पहनने शुरू किये। हमारे बच्चों ने अंग्रेज़ी खिलौनों से मन बह-लाया। श्रंग्रेज़ी काट के कपड़े उनके काले, दुर्वल और रोगी शरीर पर बहार दिखाने लगे। हमारी स्त्रियों ने बूट पहना, श्रंग्रेज़ी ढक्न की दुर्ती पर सादी चढ़ाई, घर में मेज़ कुर्सी जम गई। बूट पर पालिश करने के बुश और शीशी सजाये गये। धीरे २ हम काले श्रंग्रेज़ बनने लगे। मोर के पञ्च खोंस कर कौवा जैसे मोर बनता है। ये हमारे दुर्विन थे।

कोई ऐसा न था कि हमें आत्मबोध करावे। श्रॅंबेज़ी बोलना बड़प्पन की श्रौर गर्व की बात समसी जाने खगी। श्रंबेज़ों की नौकरी श्रादर की बात समसी जाने खगी।

दिल्बी में प्रख्यात कवि गालिब रहते थे। प्रारब्धवश ये महापुरुष श्रत्यन्त ग़रीब थे। बादशाह के उस्ताद जीक से इनकी एक कविता पर खटपट हो गईं थी। इस से बाद-शाह की नज़र इन पर नहीं थी। ग़रीब होने पर भी मन में बड़ा तेज़ बनाये रखते थे। जब दिल्ली में मिशन कालेज खुला और उसमें फार्सी के प्रोफेसर की आव-रयकता पड़ी, तब मिर्जा साहेब की-तरफ्र का ध्यान गया। इनसे प्रार्थना की गई। और इन्होंने स्वीकार भी किया। पहिले दिन ये तामजाम में बैठ कर गये । कालिज के द्वार पर जाकर चपरासी की मार्फ्रत साहब से सूचना कराई। साहब ने जवाब भेजा -भीतर चले श्राइये। साहब मिर्ज़ा के पूर्व परिचित थे। बोले-क्या साहब हमारे इस्तक्रवाल को दर्वाज़े तक न श्रावेंगे ? यदि न श्रावेंगे तो इस कभी भीतर न श्रावेंगे। साइव श्राये और हाथ मिलाया । पीछे हंसकर बोले-मिर्ज़ा साहब ! हमारी श्रापकी दोस्ती की बात आजग है: नौकरी की श्रलग है। पहले जब श्राप श्राते थे बतौर दोस्ती के आते थे। अब आप कालिज के नौकर हए बेतकल्लुफ्र चले श्राया की विये-सुमे इत्तला करने की क्या बरूरत है: मिर्ज़ा ने कहा - सरकारी नौकरी को मैं इस्क्रत

की चोज़ सममता था। मगर श्रभी पहला ही क़ब्म—श्रीर इज़त गई। सलाम —बन्दे को नौकरी से इस्तीफा है। उस्टे पैरों तामजाम पर चढ़ कर चल दिये।

यह घटना इस बात पर प्रकाश डालती है कि मिर्जा जैसे तेजस्वी पुरुषों को भी सरकारी नौकरी की प्रतिष्ठा पर एक बार विश्वास हो गया था। ये दिन थे जब भारत के बच्चे अंग्रेज़ी सरकार की नौकरी के जिए शरीर और पैसे का खून करके पढ़ रहे थे। ये दिन थे जब भारत के बच्चे श्रंग्रेंज़ी सभ्यता की कृपा कटाच पाने के लिए बड़े २ यस कर रहे थे। रईस जोग अफसरों को दावत खिलाना सौभाग्य समस्ते थे। स्त्रियाँ मेम साहब को लोकोत्तर वस्त सममती थीं। हमें श्रपने ऊपर घृषा थी। श्रपने ऊपर श्रविश्वास था। अपने को इस तुच्छ समकते थे। मनु-ज्यस्व के श्रधिकार प्राप्त करने के होंसले किसको होते ?-हम केवल श्रंप्रोजी सरकार के गुलाम बनने को ध्येय समकते थे। हम काले थे-हमें बताया गया था कि हम काले जंगलियों की सन्तान हैं। इसमें हमारा अपराध न था-इम छः सौ वर्ष से पिट रहे थे। कहाँ इमारा भारम-तेज रहता ? कहाँ हमारी पूर्व स्मृति रहती ?-कहाँ हमारा

वंश गौरव रहता-हम कितने पिटे, कितने लुटे, कितने कैंद रहे, कितने श्रापमानित रहे ??

उस दिन हमारे पास कुछ न था, हमें जैसा बताया गया था, इस वैसे ही हो गये थे। चौर हमें यह भी न मालूम था कि हम कैसों की सन्तान हैं—सो हम पूरे गुजाम होकर गुजामी की पूरी तैयारी कर चुके थे।

मनुष्य समाज के जिए शिक्षा प्राकृतिक दृष्टि के अनुसार अनिवार्य होनी चाहिए। क्यों कि वह जीवन का खाद्य है। शिक्षा के अनुसार हो देश की राजनैतिक अवस्था में, और देश की सभ्यता में उन्नति या अवनित होती है। यदि किसी जीति की शिक्षा देश काज के अनुसार वर्तमाक जीवन संग्राम हैं में खड़े करने योग्य नहीं हैं – तो उनसे शिक्षित हुए व्यक्ति जीवन संग्राम के भयद्वर युद्ध में कभी विजयी नहीं हो सकते।

संसार परिवर्तनशील है, श्रव से १००० वर्ष प्रथम हमारे देश की जैसी श्रावश्यकताएँ थीं, उनमें श्रव में श्रम्तर पड़ गया है। देश की श्रवस्था जैसी तब थी श्रव वैसी श्रव नहीं है, इसलिये शिक्षा प्रणाली भी नये नये श्राविष्कारों से विभूषित, नई नई श्रावश्यकताश्रों को पूरा करने वाली, तथा जीवनपद होनी चाहिये। उदाहरख

स्पष्ट है नदी का बहता हुआ जल सदा ताजा ताजा स्वच्छ एवं जीवनदाता बना रहता है, पर पोखर का स्थिर जल गन्दगी और बीमारियों का फैलाने वाला होता है।

जैसा कि उत्पर कहा गया है-शिका जीवन का खाख है, इसिखये शिका ऐसी होनी चाहिये, जिससे हमारे निस्य के जीवन का घनिष्ठ सभ्यन्थ हो।

यह सत्य है कि गवन में गए के प्रयान से शिका की दिन दिन बृद्धि हो रही है पर खेद की बात यही है कि उस शिका से हमारे जीवन का रासायनिक सम्मिश्रण नहीं होता। शिका की पद्धित-शैकी--विषय और प्रकार विदेशी होने से, भाव पराये होने से-वह ज्यों ज्यों हम श्रधिक शिक्ति होते हैं त्यों त्यों हमें जीवन से दूर ले जा रहा है। सम्यता के जिवास की तरह-हमारी शिका हमारे कोट पैन्टों के पाकेट में रखो रहतो है-ज्यों ही हम श्राफिसों से जौट कर घर भाते हैं, कपहों के साथ उसे भी उतार कर खुचटी पर टाँग देते हैं। हम चाहें वकीज हों या बैरिस्टर, जज हों या भीर भाजा श्रक्तस-भाकित के सिवा हमारा जीवन निरा गंवार जैसा बीतता है-हम श्रपनी विद्या को श्रपने स्त्री बच्चों के साथ मन को प्रकुश्चित करने के काम में नहीं जा सकते।

शिचा मन का भूषया है. श्रथवा मन के निवास का शाश्रम है; हम मन के उस श्राश्रम को श्रावस्थकता [?] के फेर में पड़ कर श्रथक्त संकुचित कर दालते हैं।

इमारा शरीर ३।। हाथ का है— और ३।। हाथ के ही
मकान में वह आ सकता है—पर उस में तुरन्त दम छोड़
कर मर जाना पड़ेगा। साढ़े तीन हाथ के शरीर को घूमने
फिरने योग्य— खुलासा मकान 'आवश्यक' है; उसी प्रकार
मन और मस्तिष्क को इतनी विस्तृत शिक्ता की आवश्यकता
है कि जिस में वे स्वच्छन्दता से विचार सकें। केवल
आवश्यक शिक्ता के फेर में मन को क़ैद करके सड़ा डालना
कहा ही भयानक है।

यह बूढ़ा भारत वह देश है जहाँ प्रत्येक विषय कवित्य हारा प्रकट किये गये हैं — जहाँ विज्ञान और योग — सूत्र बद्ध हैं — और कर्म कारड की पद्धति श्रखण्ड है — जहाँ की कल्पना पर संसार को हसद हो रहा है – वही देश है जहाँ के उच्च डिग्री धारी पुरुष नक्कल और अनुवाद को छोड़ कर स्वतन्त्र रचना नहीं कर सकते; उनका भाव — विषय बिल्कुल पराया होने पर श्रावेश का उदय नहीं होता। हरलेण्ड एक ठण्डा प्रदेश हैं – वहाँ का कोई किव मई मास में ग्रीष्म सीन्दर्ण का वर्ष न कर रहा है – क्योंकि वहाँ मई

में बसन्त का महा आता है-पर उस कविता को एक भारतीय विद्यार्थी मई मास में पत्नीनों से तर-शौर लुओं से भुरतस कर पहता हुआ वह धानन्द नहीं प्राप्त कर सकता, उसे भावावेश बिल्कुल नहीं होता—उसे कुछ स्फूर्ति-या मनोरंजन नहीं होता-वह केवल-परीक्षा में पास होने के भय से [?] घोट घाट कर मटर के टिक्कड़ों की तरह उसे गले से उतारता है-ब्राप ही कहें ऐसी निरानन्द मयी कविता को पढ़ कर क्या धूल विकासबुद्धि का उदय होगा ? जिस देश में अब क्वर्क पैदा होते हैं-जो केवल निरन्तर नौ घरटे गोरे प्रभु के चरणों में स्टूल पर बैठ-कर डेस्क पर भुके हुये-मख मारा करते हैं। क्या ये ही शिक्ति हैं ? श्रदाबतों के मुन्शो-मुहर्रिर-पेशकार-डिप्टी-तहसीजदार कितना अध्याचार और वेईमानी करते हैं-इसे भक्त भोगी ही जानते हैं। प्रजिस वोलों की तो बात ही निराक्ती है-यूनीवर्सिटियों के पदवी-धर-क्रानुनी शरीफ्र पेशा लोग-लोगों के श्रधिकारों की रहा करने के बदले-उनका सर्वस्व लूटते हैं-वेश्याश्रों की तरह धन के लिये अपने तन और आत्मा को बेचना ही इन की का दी है ?

इस पवित्र ड्यूटी शब्द का श्रर्थ श्रगर भारत के

शिचित समभते होते तो वे भी बापान की तरह ४० ही वर्षों में कुछ का कुछ हो जाते।

पर जो गुजामी के जिये पढ़ते हैं— नौकरी में जिनका सम्मान है— वे श्रभागे इससे श्रधिक ट्यूटी का क्या श्रथं समक सकते हैं?

शेक्सिपियर के नाटक और बैरन की किवता पढ़कर उनकी आखों में ऐसा सुरमा जग जाता है कि वे काजी आखों के स्थान पर नीजी आँखों और काजे केशों के स्थान पर भूरे बाजों को सुन्दर देखने जगते हैं, उनके हृदय में ना/यका की एक अद्भुत प्रतिमा अंकित हो जाती है। उनके मस्तिष्क में और ही प्रकार का गृहचरित्र खचित हो जाता है। प्यास उनको वैसी उत्पन्न हो जाती है, पर मिजती है उनको भोजी भाजी गाँव की सरजा मुख्या बाजिका, परिणाम यह होता है कि बाबू साहिब के मन से ही उनकी नवेजी उत्तर जाती है! ऐसे कितने ही गृहस्थ हैं, जो इस राज्यशी शिक्षा के कारण कट्ठ बने हुए हैं।

सारांश यह है कि इमारे जीवन का खेत जहाँ खड़-लड़ाता है, उसके श्रंकुर जहाँ उगते हैं, उससे बहुत दूर शिका का मेह बरस रहा है। इमारे जीवन श्रीर शिक्षा के

बीच में कोष और ज्याकरख का पुल होता है उसी पर हो कर हमें गुज़रना पहता है।

सारे संसार की सभ्य जातियाँ प्रपनी भाषा रखती हैं भौर उसी के द्वारा वे सब कुछ सीखती सिखाती हैं. पर इमारा दुर्भाग्य देखो, कि इम उसके बिये भी पराये मोइ-ताज हैं। एक बंगाली और पंचाबी परस्पर भाई होने के कारस एक दूसरे से हृदय मिसना चाहते हैं. पर उन के भावों को समकाने के बिये ७ इज़ार मील से परायी ज़बान श्राती है ? भीर हमारी मातृ भोषा गली कूचों में टकराती फिरती है। इसका कुफल प्रश्यच हो गया कि इमारी जातीयता धीरे २ नष्ट हो रही है, धर्म, विश्वास, शिथिज पद रहे हैं. जिन सामाजिक बन्धनों की बदौजत इज़ारों वर्ष से इम जिन्दा रहते श्राये हैं, उनकी बढ़ में की बा बग गया है, आज हम हिन्दु कहाते हैं, पर हिन्दुस्व का कोई चिन्ह इस में नहीं है। पराई भाषा, पराया वेष, पराया जीवन, पराया हृद्य, पराया मस्तिष्क, सब कुछ पराया है। जिस शिक्षा में सुम नहीं, जो बुद्धि के विकास में सहायता नहीं देती भौर जिसमें संकट दूर करने का उपाय दंद निकालने का बल नहीं, वह शिक्षा नहीं-कशिचा है।

एफ० ए० तक की शिका इतनी है जिस में उन्हें अंग्रेज़ी भाषा के भावों को किसी तरह समम्मने की योग्यता या जाती है। करीब १२ वर्ष के पूरे परिश्रम से बचा पहाँ तक पहुँचते र उसकी विचार श्रीर भावना की शक्ति कुछ भी काम न श्राने के कारण मुरमा जाती है। उसका विकास नष्ट हो जाता है, विदेशी पुस्तकों की भाषा यदि वह बल-पूर्वक रट र कर लीख भी खे तो भी भाव उसकी समम में नहीं श्रा सकते।

बी॰ ए० की श्रेगी में आकर एक दम भावना की जरूरत होती है, पर अब तक अविकसित रह कर जो भावना मुरभा नई थी वह अब कहाँ से आवेगी। निदान वह अभागा वहाँ भी नोट याद करके ही खेखकों का मतः जब समस्ता है।

माता-िपता के साथ सहकुटुम्ब बनकर रहना तो एक प्रकार से उन्हें असला हो जाता है। भीतरी जीवन में ही आग लगे यही नहीं, उनका बाहरी जीवन उस से भी अधिक सम्तक्ष हो जाता है।

जब वे एम० ए०, बी० ए० में दर्शन, न्याय, कविस्व, तर्क, साइन्स के महत्व पूर्ण, सबक पढ़ा करते हैं, तब वे श्रपने गंवार बाप, भाई, श्रदोसी, पदोसी को तुच्छ दृष्टि से देखा करते हैं। उन्हें मूर्ख समभते हैं- उन पर दया दिखाते हैं। धरती पर पैर नहीं रखते, अपने को अपने गरीय और मूर्ख देश से चार भ्राँगुल ऊँचा समभते हैं। पर जब पूरी किताबों को निगल कर, पास हो कर बाहिर श्राते हैं। श्रीर सार्टिफिक्ट के बण्डलों को दशकर साहबों के दफ़तरों में मक्खी की तरह भिनभिनाते गुलामी ढंढते फिरते हैं। श्रीर वहाँ या तो जगह नहीं मिलती या मिली तो फटकार, गाली, जुर्माने और डिस मिस के चपेट खाकर साल भर ही में ढीले हो जाते हैं। वे देखते हैं कि वे कवित्व, वे तर्क, वे साइन्स के सिद्धान्त कुछ भी काम नहीं आ रहे हैं। वह जगत भर का भगोल पढ़कर भूल भी गये. किसी काम न श्राया। श्रन्ततः वे श्रव श्रपनी योग्यता पर भरोसा न करके खशामद पर वसर करते हैं। श्रीर इसी के श्रासरे पर पतित जीवन को कारते हैं।

ऐसे पुरुष पुत्रवान् होंगे ? ये लोग धनवान् होंगे ? बुढापे तक जी सकेंगे ? मूठ बात है कोई भी देश ऐसे बेगैरत, श्रयोग्य, खुशामदी, और पेट्ट बवानों से श्रक्ती श्राशा नहीं कर सकता है।

एक बार मैंने छोटी बच्ची को अन्धेरे में विश्वी की आँख चमकती देख कर यह कहते सुना— अम्मा देख, बिल्खी के सिर में दो तारे हैं। एक बालक ने बड़े र बादबों को देखकर कहा था, देखो देखो ? यह बैल है। उस की आकृति सच्युच बैल जैसी थी। एक छोटी लड़की ने अपने पिता से खेतों पर श्रोस की बंद देखकर कहा था हाय ? हाय ? बिचारे रात भर रोये हैं। मैं यह प्छता हूँ - यह कल्पना, यह उपमा, यह अलंकार क्या साधारया है! यह विकाश का बीज क्या इन बच्चों की प्रतिभा का छोतक नहीं है। पर आप क्या समस्तते हैं, वह कन्या गार्गी और उभय भारती बनकर आर्य रमियायों का गौरव बदावँगी। और ये बालक क्या बड़े होकर व्यास, बाहमीकी और कालीदास बनेंगे।

नहीं ? वह कन्या किसी दिरित, गुलाम, शिचित इन्हें की जोरू बनकर शीत ठएड में ऋठे वर्तन माँजती होगी और वह बचा किसी श्राफिस में श्रफसर की ठोकरों में इन्हें की कुर्सी पर बैठ, मेज पर सुके हुए काग़ज़ों का मुँह काला कर रहा होगा।

भारत की सन्तान पैदा होते ही क्यों न मर गई । ये नौजवान हाथों में चूड़ी पहन कर क्यों नहीं घर में घुस

बैठते हैं। इनकी माता ने बाँक होने की दवा क्यों न खाली ? भारत प्यासा है ! प्यास के मारे तड़प रहा है। यही जवान उसे पानी पिलावेंगे ? इन्हीं को इतना होंसला — रुतवा — और वल होगा ? व्यर्थ है, आशा छोड़ो। भारत को मरने दो।

श्रार्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द ने कहा था—
'स एव देशः सौभाग्यवान् भवति यस्मिन् देशे ब्रह्मचर्यस्य
विद्यायाः वेदोक्तधर्मस्य यथायोग्यः प्रचारो जायते।''

श्रार्व समाज के पिछले नेताओं में स्वर्गीय दर्शनानन्द सरस्वती और महारमा मुन्शीराम जी ने उक्त श्रादर्श पर गुरुकुत खोले, पर उनसे श्राशा पूर्ण न हुई। वरावर १४ वर्ष तक श्राशा भरी चित्तवनों से देखने पर श्रन्त में मालूम हुशा कि गुरुकुत के गौरवान्वित स्नातक ७४) रु० की नौकरी के मुहताज हैं। और फिसल कर वहीं श्रा गिरे, जहाँ सव। महारमा हंसराज ने डी० ए० बी० कालेज खोल कर श्रंगरेज़ी शिचा-प्रणाली में कुछ स्वातन्त्र्य उरपश्च किया श्रीर श्रम्त में पण्डित मदन मोहन मालवीय ने विकट परिश्रम करके काशी में विश्वविद्यालय खोला। पर यह सब क्या था। उन्हीं विषाक्त जद्दुओं पर चाँदी का वर्क था। वहाँ के जदके भी गुलाम वनें, वहाँ के

विद्यार्थियों ने भी पारचात्य प्रसासी के सामने सिर सुकाया (

सरकार ने जब स्कूलों की स्थापना की थी तब उसका उद्देश्य इस समस्म नहीं सकते थे— श्रव समस्मे हैं। उसे गुजाम क्षक चाहिएँ थे। वहीं क्षकं उसने पैदा करने को ये कारख़ाने बना दिये थे। श्रंगरेज़ सरकार की जीत हुई, उसके मनोरथ सफल हुए, उसने भारत के प्रस्थेक जवान को बिया कर डाजा- प्रस्थेक जवान को अपना मुहताब, गुजाम, नौकर और भाशिक बना जिया।

माँ वापों ने छाती के दूध से बाबकों को पोसा, उन्हें शिखित, योग्य मनुष्य बनाने के बिए स्कूजों में भेजा, ग्राप भूखे रहे उन्हें पढ़ने का ख़र्चा दिया, श्रापने वर्तन विधड़े पहने, उन्हें साहबी पोशाक बनादी, श्रापने वर्तन बेचे उन्हें किताब ख़रीद दी। भीर बड़े चाव से, उत्साह से देखने बने वेटा पढ़ कर कैसा बन जायगा? कुलदीपक बनेगा। पर जब वह शिचित होकर श्राया, सब क्या देखा गया? इस शिचा ने उसकी श्रांकों की ज्योति मार ढाली है, उसकी जवानी का रस पीबिया है, उसे श्रधमरा बना दिया है। वह किसी काम का नहीं रहा—वह धोबी का

कुत्ता हो गया है। यह अपने देश और धर्म का भी आदर नहीं करता।

जिनके बवान बेटे जनाने हो गये, जिनके जवान बेटे पराई गुलामी करें, जिनके जवान बेटे पराये कपड़े पहनें, पराई भाषा बोलें, पराया काम करें, पराये ढंग से रहें उन माँ बापों को—यदि उनमें ग़ैरत है तो — सँखिया खा बेना चाहिये। इसके सिवा उन्हें अपनी लाज बचाने की और क्या आशा है?

वर्तमान शिक्ता के साथ इमारा चिरित्र-स्वास्थ्य श्रौर विकास का कुछ सम्बन्ध नहीं है, वे केवल परीका पास कराने की मशीनें हैं। पर दुर्भाग्य से ये मशीनें भी इतनी श्ररूप हैं—जिन पर हम सन्तोप नहीं कर सकते-इसका ब्योरा सुनिये-सारे सँसार के सभ्य देशों की अपेका भारत की शिक्ता किस दर्जे पर है—

श्रमेरिका में १ करोड़ २० लाख श्रावमी रहते हैं उन में १ करोड़ ६८ लाख विद्यार्थी पढ़ते हैं।

आस्ट्रेलिया में ४० लाख आदमी रहते हैं जिनमें १८ हजार विद्यार्थी हैं।

स्विटज़रलैंड में ३४ जाख में ४ लाख २ इज़ार। संयुक्तराज्य में ४ करोड़ ४२ लाख में ७४ लाख।

नेटाल में ४ लाख ४४ इलार में २६ इलार। समेनी में ६ करोड़ ४० लाख में ६० लाख विद्यार्थी पढ़ते हैं, पर भारत में ३३ करोड़ ४० लाख मनुष्यों में ४४ लाख ३ इलार (!!) विद्यार्थी हैं !!

सभ्य संसार के हिसाब से भारत में ६ करोड़ विद्यार्थी होने चाहिए थे, पर हैं कुल ४४ लाख? श्रर्थात् साढ़े ४ करोड़ बालकों की बुद्धि विकास के लिये देश में कुछ प्रबन्ध नहीं है। यह विवरण प्रारम्भिक शिका का है। श्रव हाईस्कूलों और कालिजों का हिसाब देखिए— भारत की जन संख्या ३१॥ करोड़ है और श्रमेरिका की केवल ६॥ करोड़। श्रर्थात् श्रमेरिका से कीगुनी के लगभग है। श्रव दोनों देशों की उच्च शिका की बात सुनिये—

भारत में सिर्फ़ 1३० कालिज लड़कों के हैं, पर अमे-रिका में ४६३ हैं। हिसाब से चौगुने हो कर १६७२ कालिज होने चाहिए थे. पर हैं १३० [?] अमेरिका में ज़ड़कियों के :१३ कालिज १६१० में थे पर उससे चौगुने भारत में केवज ७ !!

भारत में ३२० खियाँ काखिज में पढ़ती हैं, पर वहाँ १६६७ काखिजों में पढ़ती हैं [?] यहाँ ११६३४१ खियाँ इटक्र इटक्र कर कुछ खिख पढ़ सकती हैं

पर अमेरिका में ४३४४८० स्कूजों में पदती हैं, कुल भारत में पढ़े लिखे मर्ट १, ४६, ८०, ०८० और श्ली ६, ६६, ३४१ हैं कुल जोड़ १, ४६, ८४, ४२१ है और बाक्री २७७७२८४८४ विद्युक्त पद परधर हैं।

एक बार माननीय पं॰ मदन मोहन मालवीय जी ने अपने व्याख्यान में कहा था—

''भारत के कुल विश्वविद्यालयों में २८००० विश्वार्थी हैं, पर अमेरिका में २४००० प्रोफेसर हैं।''

सारांश भारत में भी खाख १ बादमी उच्चशिचा पाता है, श्रौर भी १० लाख में एक को विज्ञान [साईन्स] की शिचा दी जाती है!

कहिये — इस पतन की भी कोई हद है ? इसी शिका की उन्नति पर, इसी शिका के बल पर श्राप ४०० से श्रिधिक मतों और २४३ से श्रिधिक भाषाओं को एकता के सूत्र में बाँध कर युगान्तर उपस्थित करना चाहते हैं ? तब तो श्रापके साहस की बिह्नारी है। निस्सन्देह, ये प्राइमरी स्कूलों के विद्वान् , एकदम मिडिल पास विद्या वारिधि, हज़ारों वर्ष की पुरानी स्वार्थ परता को, हिन्दू मुस-क्सानों के भगड़ों को तोड़ कर, श्रद्धतों, नीचों, पतितों का उद्धार करके, नव्य भारत की जातीयता को खड़ा कर सकेंगे?

यह सारे संसार को सब प्रकार की शिक्षा सहायता करने वाले भारत का वर्तमान भवंकर स्वरूप है—जैसा ज़माना थ्रा रहा है—सारे विश्व की शक्तियों में जैसी रगड़ पट्टी मच रही है— उसे देख कर कीन कह सकता है कि भारत की एकान्तता स्थिर रह सकेगी ? और यह भी विश्वास नहीं कि सभ्य संसार हसे बोदा-निकम्मा-रोगी— अपाहज समक्त कर इस पर तरस खा कर इसे छोड़ दे। क्योंकि वर्तमान सभ्वता का सब से उच्च धर्म यह है कि शक्ति हो वो बीवित रही वरना मर आओ! बस तो भ्रव भारत की मृत्यु निरचित है-इस भयंकर रगड़ में-इस- ज़बईस्त चहना पहल में-इस भीड़ भड़के में भारत श्रवश्य कुचल जायगा-पिस जायगा!!

तीस कोटि भारत के जवाब हुटे कटे पूतो ! सावधान हो को ! तुम्हारे ६० करोड़ बिलप्ट हाथों की छत्र छाया में भी यदि देश डूब गया तो तुम्हारे श्रस्तित्व का क्या मूल्य रहा ? तुम्हारी हसी सुस्तो में-तैयारी करते करते - ही यदि—यह प्रशस्त शस्यश्यामला भूमि श्रतल पाताल में बा गिरी, सर्व नाश हो गया श्रीर तब चेते तो सब व्यर्थ होगा-अव-सर बीते हीरा पत्थर के भाव भी नहीं विकता । वह स्वर्ष श्रद्दालिका-वह स्वर्ग सुख-वह जातीयता-वह सौंक्दर्य-बो

हमारे करोड़ों पूर्वबों के ज्वलम्त भारमत्याग-गौरव और प्रतिभा का फल था-नष्ट हो चुका-भ्रव यह बाक़ी है-कि जातीयता का जो बाह्य भ्राडम्बर बाक़ी बचा है-वह भी भ्वंस हो जाय और फिर हमारे पुरखों की हड्डी पहचानने वाला भी कोई संसार में न रहे!

सभ्य संसार में १६ कर-सभ्य राज की प्रजा बनकर-सभ्यता में नाम जिल्ला कर केवज, हैंट, कोट पहनने, अंग्रेज़ी बोजने, खड़े हो कर मृतने, सिगार पीने, मेम मे ब्याह करने, से ही सभ्यता की मर्यादा को रचित नहीं रख सकोगे।

इस बोखलाइट को सारा संसार उपहास की दृष्टि से देखने जगा है, और मोर का पंख लगा कर कौवा कहने जगा है, यही नहीं बल्कि ढेले मार मार कर श्रपने दल में आये हुओं को तिरस्कार पूर्वक निकालने लगा है, तिस पर भी इम उसी चाल पर चलते रहें— यह बेगैरती नहीं तो क्या है?

शिक्षा का मूल उद्देश्य मानसिम, शारीरिक श्रीर श्रात्मिक उस्रति करना है। इसी से प्राणी में मनुष्यत्व उत्पन्न होता है। यद्यपि बालक जन्म से बहुत से पैन्निक संस्कार लेकर श्राता है। पर वास्तव में वह श्रयोग्यता और

श्रविद्या का पुंज ही होता है। माता पिता और गुरु ही उसे योग्य बनाते तथा श्रविद्या श्रम्थकार के पर्दे दूर करते हैं। बालक चाहे भी जितने उत्तम संस्कार लेकर जन्मे। चाहे भी जितना हृष्ट पुष्ट और नीरोग हों-बिना विभूतियों श्रीर गुक्तों से युक्त हुऐ वह मनुष्य की पंक्ति में नहीं बैठ सकता।

शिचा का प्रधान भाग केवल मनुष्य जाति के लिये है; बिना सिखाए उसे कुछ भी नहीं चाता, संसार भर के जानवरों के बच्चे जन्म जेते ही चलने फिरने उड़ने तथा खाने पीने लगते हैं। कुत्ता दो चार दिन में चलने फिरने लगता है। गिद्ध पैदा होते ही ऊपर आकाश में उड़ता है, सार यह हैं-िक प्रायः सभी संसार के प्राणियों को स्वाभाविक ही कुछ ज्ञान होता है। पर मनुष्य के बच्चों को सब कुछ सीखना पड़ता है। चौर प्राणि जितनी जल्दी बढ़ते और जिस उम्र में समर्थ हो जाते हैं, उस उम्र में मनुष्य के बच्चे नितान्य असमर्थ रहते हैं। इसका कारण क्या है?

बिल्ली, कुत्ते, बन्दर, श्रादि को चाहे कोई किसना ही सिखा खे, तो भी वह कोई ऐसा काम न कर सकेगा, जो अन्य बच्चे न कर सकते हों। इससे सिवाय जंगली बन्दर और पालत बन्दर में-जंगली हिरन और पालत हिरन में

तोता में नाओं में सिखाने से वैसा परिवर्तन और भेद नहीं हो सकता जैसा कि जंगली और सुतिषित मनुष्यमें होता है। कुत्ते आदि को तैरना आपही आप आजाता है, आख़िरकार कुत्ता एक ही ढंग से तैरता है, पर मनुष्य सीख कर सैकड़ों तरह से तैर सकते हैं, सच तो यों है—मनुष्य कर्तंच्य योनि है उसकी रचना ऐसी की गई है कि उसके होन हार की कोई सीमा नहीं। क्योंकि उसमें बुद्धि का विकास है।

बह सब कुछ बिना सिखाये नहीं बनता, इसिबये श्रिका देना परम श्रावश्यक है, लोग शिक्ता का ठीक श्रर्थ न जान कर स्कूल भेज कर कर बड़ी र डिग्नीऐं ही देना या कोई काम सिखाने ही को शिक्ता समक्तते हैं, पर वास्तव में यहीं पर शिक्ता की सीमा व हद नहीं है।

शरीर में आँख, नाक, कान, मुँह, आदि इन्द्रियाँ और बुद्धि है। उरपन्न होते ही बच्चा—आँखें खोलता है— हाथ पैर मारता है सुनता है, चीकता है, तभी से सीखना शुरू कर देता है। दर्शन शास्त्री बताते हैं, कि ज्ञान जीव का धर्म है, ज्ञान सब उसके हृदय में है, कोई गुरू किसी को बाहिर से बात किसी के हृदय में नहीं दूस देता, ज्ञान का बीज उसके हृदय में है, विकास पाकर

वही स्फुटित होता है, गुरु उन परदों को दूर करता है, भारमा का प्रकाश भारमा देख पाता है।

वीज में दृष्त का पूरा धाकार है, ज्यों ही हवा, मिट्टी पानी, धूप, गर्मी मिली वह प्रकट होकर विशाल स्वरूप का बन गया। उसी प्रकार ज्ञान का सारा बीन हृदय में है; शिष्ठक, समय भीर ध्रध्यवसाय की लरूरत है, शिष्ठा का अच्छा सामान उपस्थित है तो उसी नन्हे से बोज से पर्वताकार बृष्ठ निकस्न धावेगा।

श्रगर कोई बीच नहीं उगता, जल भुलस कर मर जाता है तो यह उसका दोप नहीं। उसे खाद पानी, गर्मी भौर भवकाश न मिला होगा। ठीक उसी प्रकार यदि कोई वचा मूर्ख, कुपढ़, कुचाली भौर नीच रह जाता है तो यह उसका दोष नहीं उसे शिका, समय, संस्कार का भ्रभाव रहा।

स्वभाव बड़ा प्रबल गुरु है, संस्कारों से वह सबल और निर्बल होता रहता है, कुसंस्कारों का यदि सम्पर्क न हुआ तो समस्तो बाजी मारली, वह बढ़ता चला जायगा। नहीं तो गिरता जाएगा। इसिखये स्वभाव का प्रयल श्रयस होना चाहिए। यह काम गुरु करेगा।

वेद में लिखा है-

'मातृमान् , पितृमान् , भाचार्यमान् पुरुषो वेद।' इस प्रकार प्रथम गुरु माता है। बच्चे के भविष्य भाग्य रूपी महत्व की नींव माता ही रखती है। जैसी नींव होगी, वैसा ही वहुमूल्य उसका जीवन बनेगा। इस नियम की परवाह न करके कोई यह कहे कि प्रथम गुरु का काम किसी और से कराया जाए तो यह भ्रमहोनी बात है—क्योंकि बच्चों की शिचा खियों से ही हो सकती है। सो भी सब से श्रम्छी माता से। संसार में सबसे श्रमुभवी बोग माता के गुरुत्व की प्रशंसा में जो भपने उद्गार श्रंकित कर गए हैं, वह जल्दी मिटने वाले नहीं हैं।

जिन्होंने नैपोलियन का नाम सुना है, जिन्होंने वीरवर श्रभिमन्यु धौर महावीर कर्या, श्रर्जुन की महिमा पढ़ी है, जिनके मस्तिष्क किपल, गोपीचन्द श्रादि की स्मृति से दीस रहे हैं, उन्हें माता के महत्व को बताना नहीं पढ़ेगा। उन सब का वर्णन करना मानों समय नष्ट करना है।

माता का धर्म है, उस पर भार है कि वह पुत्र का उचित रीति से लाबन पालन करे, उनके भावों का समम कर उत्तम शिक्षा दे। हृष्ट, पुष्ट, सुखी, श्रीर श्रष्ट्छे पुरुष

बनावे। राज प्रबन्ध का काम वैसी ज़िम्मेदारी का नहीं, जैसा कि काम माता की ज़िम्मेदारी का है। माता का आसन उत्तम हैं। माता का नाम मिटा दो तो संसार पशुश्रों से परिपूर्ण जंगल रह जाएगा।

सच बोलना, स्वच्छ रहना, समय पर काम करना, सुशील, तथा श्राज्ञाकारी बनना, यही मा की प्रधान शिचा है। केवल माता की श्रसवधानी से बचों में-जो कुन्दकर्जी के समान स्वच्छ श्रीर सुन्दर होते हैं, क्या २ कुस्सित दोष नहीं घुस जाते? श्रीर उनका भयंकर परिणाम कौन नहीं जानता।

माता के पास बच्चा लगभग पाँच वर्ष तक ही स्नेह में पलता पोषता है, पोछे पिता के हाथ में झाता है, मानों माता ने सुन्दर मिट्टी दे दी, खिलौना बनाने का सरंजाम पिता करना है। जिसको माता ने तैयार किया था-वह पिता पोषित करता है। पिता का कार्य यह है कि — कुल गौरव, स्वच्छ भावनायें, शुभ संकल्प, विनीत, भाव, सच्ची मित्रता, तथा उच्च आशाएँ तथा धार्मिक भावों के बीजों का आरो-प्या करे, कुल गौरव की स्थापना, के जिए ही आज दिन मूर्ति पूजा घर र चली है, प्रथम रामायया, महाभारत, गीता की कथा वार्ता घर र होती थी। उन अप्रतिस राम

कृष्णादि देवों की प्रतिमाएँ बनाकर पिता माता उनके सामने-उनकी विताकी बाज्ञा पालन, सत्यनिष्ठा, धर्मभीरुता, श्रादि दुर्घर्ष गुक्षों का कीर्तन किया करते थे श्रीर बच्चों के स्वच्छ हृद्य पर उस गौरव की उत्तक्ष लहरें श्रंकित हुआ करतीं थीं। उनके वैसे ही संस्कार रहते, वैसे हो वे खेल खेबते. वैसे ही कार्य करते थे। आजकल उनके स्थान पर नंगी श्रीर गन्दी तस्वीरों से, शौकीन श्रीर श्रसदाचारी माता पितात्रों के त्राचरणों से ही बच्चे कुसंस्कारी हो जाते हैं, उनकी भावनाएँ गिर जातीं हैं। श्रौर दो वर्ष की ही श्रवस्था में वे कुचेप्टाएँ करने लगते हैं। क्या यह उनका दोष है ? वास्तव में वे माता पिता ही घृषा श्रीर धिकार के पात्र हैं। जिन्होंने बचों की भारताएँ स्वच्छ नहीं बनाई। जब उनके भाव ही निकृष्ट हैं, तो संकल्प क्या स्वच्छ होंगे। जिन्होंने विद्या श्रीर दूसरी बातों का नाम नहीं सना, उन्हें क्या विद्वान श्रीर शूर बनने की श्राकाँच, होगी । वे श्रवश्य उद्दर्ड न होंगे तो विनोत भो न होंगे। श्रविनीत बालक सम्बरित्र नहीं हो सकता, और चरित्र हीन बालक उच नहीं बन सकता। फिर धर्म क्या करेगा।

. धार्मिक भावों के स्थान पर घार्य, जैन, सनातन, ग्रीर ईसाइयत के कटर भाव भरना में पसम्द नहीं करता।

ऐसा वरने से बचा अन्धविश्वांसी बन जाता है, हमारे देश में क्या-सारे संसार में। मूठे मत इतने न प्रचलित होते. यदि बच्चों के कच्चे मस्तिष्क में वे भाव न भर जाते, श्रीर जसे बिना बिचारे हो उन्हें स्वीकार करने को खाचार न किया जाता । फिर उन्हें दूसरे धर्म की सचाई समभने में संकोच मिमक रहता है। कितने ही मनुष्य ऐसे हैं जो खुले दिल से बात नहीं कह सकते. उसका कारण उसी मुर्ख शिचा का कुफल है। इसलिए उन्हें सार्वभौम धर्म बताना चाहिए। जैसे प्राणिमात्र पर दया करो. दीनों को हृदय लगाश्री, जो नीच हैं उन्हें बुरा मत कहा, प्रेम पूर्वक सबसे वर्ताव करो. ईश्वर को सर्वत्र जानो, इत्यादि ऐसी बातें हैं जिनका सचा सिक्का मस्तिष्क पर बैठ जाए तो वह जड़का बड़ा होकर सचा धर्म ढंढ निकालेगा। श्रीर उसकी तीसरी पीढी पर संसार में सार्व भौम एक ही धर्म होगा को किसी को श्रहितकर न होगा।

पिता के बाद श्राचार्य के पास बच्चे को जाना होता है, इसका काल श्रधिक से श्रधिक १० वर्ष होना चाहिए। यहाँ उसके सब भावों की शाखा प्रशाखा निकलती हैं। श्रब तक पूर्वाचार्यों से उसने जो कुछ पढ़ा सीखा है वह पुष्ट होता है। वहां की प्रधान बातें यथार्य ज्ञान, संयम, सार्वजनिक

हित, निरालस्यता, स्पष्टवादिता, और कुतर्क हीनता हैं। ये सब बातें यहाँ धीरे २ पुष्ट होतीं हैं। बच्चा योग्य बनता जानता है, श्राचार्य की बाखी से उसे सत्य ज्ञान मिलता है, श्रीर श्रविद्यान्धकार नष्ट होता है, उसको सेवा से गर्व श्रीर मान नष्ट होता है-तथा ब्रह्मचर्य से शरीर, मन, पुष्ट होता है। श्रीर एकान्त वास से श्रारमा-वाखी एक निष्ठ बन बाती है।

इस प्रकार काय, मन, वचन से ज्ञान और शान्ति का संग्रह कर के वह वीर अपने कुल का तिल क होकर जगत् में विचरण करता है। उसे उच्चता से रोकने वाला कोई नहीं है। यही शिचा का सुफल है। यही शिचा का उच्चतर दुर्ग है।

प्राचीन भारतीय परिपाटी के श्रनुसार जब बालक को विचारम्भ कराया जाता था तब उसे यज्ञोपवीत देकर यह उपदेश दिया जाता था —

"तू त्राज से ब्रह्मचारी है, नित्य सन्ध्योपासन कियाकर, भोजनके पूर्व शुद्ध जल का श्राचमन कियाकर । तुष्ट कर्मों को छोड़ धर्म किया कर । दिन में शयन कभी मत कर । श्राचार्य के माधीन रह के नित्य साङ्गोपाङ्ग वेद के लिये बारह २ वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य श्रर्थात् ४० वर्ष तक वा जब

तक साङ्गोपाङ चारों वेद पूरे होवें तवतक अखरिडत ब्रह्म-चर्य धारण कर । श्राचार्यके श्राधीन धर्माचरण में रहा कर । परन्त यदि श्राचार्य श्रधमीचरण वा श्रधमी करने का उप-देश करे उस को त कभी मत मान। श्रीर उसका श्राचरण मत कर । कोध श्रीर मिथ्या भाषण करना छोड़ दे। श्राठ प्रकार के मैधुन को छोड़ देना। भूमि में शयन करना। पलक्क श्रादि पर कभा न सोना । कौशीसव श्रर्थात् गाना. बक्ताना, तथा नृत्व चादि निन्दित कर्म, गन्ध चौर चक्षन का सेवन मत कर। श्रति स्नान, श्रति भोजन, श्रधिक निद्रा, श्रधिक जागरण, निन्दा, मोह, भय, शोक, का ब्रह्म कभी मत कर। रात्री के चौथे ब्रहर में जाग, श्रावश्यक शौचादि दन्तधावन, स्नान, सन्ध्योपासन, ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना चौर उपासना, योगाभ्यास, का घाचरण निश्य किया कर । जीर मत कर । मांस, रूखा, शुष्क, श्रव मत खावे, श्रीर मद्यादि मत पीवे। बैल, घोड़ा, हाथी, ऊंट श्रादि की सवारी मत कर । गांव में निवास, जूता श्रीर छत्र का धारण मत कर। लघुशङ्का के बिना उपस्थ इन्द्रिय के स्पर्श से वीर्य स्खलन कभी न करके वीर्य की शरीरमें रख के निरन्तर उर्ध्व रेता बन, ग्रर्थात् नीचे वीर्य को मत गिरने दे, इस प्रकार यत से वर्ता कर। तैलावि से

श्रक्त मर्दन, उबटना करना, श्रति खद्दा-इमली श्रादि, श्रित तीला-लाज मिरच श्रादि, कसेका-इरड श्रादि, जार— बवण श्रादि श्रीर रेचक-जमालगोटा श्रादि द्रव्यों का सेवन मतकर। नित्य युक्ति से श्राहार विहार करके विद्या ग्रहण में यलशील हो। सुशील, थोड़ा बोलनेवाला हो, सभा में बैठने योग्य गुण ग्रहण कर। मेखला श्रीर दण्डका धारण, भिक्ता चरण, श्रानहोत्र, स्नान, सन्ध्योपासन, श्राचार्य का विया-चरण, प्रातः सार्य श्राचार्य को नमस्कार करना, ये तेरे नित्य करनेके श्रीर जो निषेध किये वे नित्य न करने के कर्म हैं। 'यान्यनवद्यानि कर्माण। तानि सेवितब्यानि। नो इतराणि। यान्यस्माक "सुचरितानि। तानि त्वयोपास्यानि। नो

यान्यस्माक ्रॅं सुचिरितानि । तानि त्वयोपास्यानि । नो इतरागि । एके चास्मच्छ्रेया ्रं सो बाह्यणः । तेषां त्वया सनेन प्रश्वसितब्यम् ॥ ॥ तैत्तिरी० प्रपा० ७ । अनु०१ ।

ऋतं तपः सत्यं तपः श्रुतं तपः शान्तं तपो दमस्तपश-श्मस्तपो दानं तपो यज्ञस्तपो ब्रह्म भूभुं च: सुवर्ष ह्रौ तदुपा-स्वै तत्तप: ।।२।। तैत्तिरी० प्रपा० १०। अनु० ८।।

श्रथं—हे शिष्य ! जो श्रानिन्दत, पाप रहित श्रथीत् श्रन्याय श्रधमीचरण रहित, न्याय धर्माचरण सहित कर्म हैं; उन्हीं का सेवन त् किया करना। इनसे विरुद्ध श्रधमीचरण कभी मत करना। हे शिष्य! जो तेरे माता

पिता आचार्य आदि लोगों के अच्छे धर्म युक्त उत्तम कर्म हैं, उन्हीं का आचरण तू कर भीर लो उनके दुष्ट कर्म हों उनका आचरण कभी मत कर। हे ब्रह्मचारिन्? लो उनके मध्य में धर्मातमा श्रेष्ठ ब्रह्मवित् विद्वान् हैं. उन्हीं के समीप बैठना,संग करना और उन्हीं का विश्वास किया करना।

हे शिष्य ! तू जो यथार्थ का झहण, सत्य मानना, सत्य बोलना, वेदादि सत्य शास्त्रों का सुनना, अपने मन को अधर्माचरण में न जाने देना, श्रोत्रादि इन्द्रियों को दुष्टाचार से रोक श्रेष्टाचार में लगाना, कोधादि के त्याग से शांत रहना, विद्या आदि शुभ गुणों का दान करना, अग्निहोत्रादि करना और विद्वानों का सङ्ग कर जितने भूमि, अन्तरिच और सूर्यादि लोकों में पदार्थ हैं-उनका यथा-शक्ति ज्ञान प्राप्त कर, और योगाभ्यास-प्राणायाम द्वारा एक ब्रह्म परमात्मा की उपासना कर, ये सब कर्म करना ही तप कहाता है।।।।

ऋतन्च स्वाध्याय प्रवचनेच । सत्यन्च स्वाध्याय प्रव-चनेच । तपश्च स्वाध्याय । इमश्च स्वध्याय । शमश्च स्वध्याय । श्रम्नयश्च स्वाध्या । श्रमिहोश्रञ्च स्वाध्या । सत्य मिति सत्यवचारा थीतरः । तप इति तपोनित्यः पौरु शिष्टिः । स्वाध्याय प्रवचने एवेति नाकोमौद् गल्यः ।

तिद्धि तपस्तिद्धि तपः ॥ ३ ॥ तैत्तिरी० प्रपा० ॥ ७ ॥ अनु० ॥ ३ ॥

श्रर्थ — हे ब्रह्मचारिन्: तू सत्य धारण कर, पढ श्रीर पढ़ाया कर। सत्योपदेश करना कभी मत छोड़, भदा सत्य बोल, पढ़ श्रीर पढ़ाया कर। हर्ष शोकादि होइ, प्राणायाम योगाभ्यास कर तथा पढ़, और पढाया कर । श्रपनी इन्द्रियों की बुरे कामों से हटा, श्रन्छे कामों में चला, विद्या का ग्रहण कर श्रीर कराया कर । श्रपने श्रन्तः करण श्रीर श्रात्मा को श्रन्याया चरण से हटा न्यायाचरण में प्रवृत्त कर और करायाकर, तथा पढ़ श्रीर पढ़ाया कर । श्रक्षि विद्या के सेवन पूर्वक विद्या को पद श्रीर पढ़ाया कर । श्रम्भि होत्र करता हुश्रा पढ़ श्रीर पढ़ाया कर । सत्यवादी होना तप साय वचन न्याया चरण में कष्ट सहना, तप निश्य पौरुशिष्टि ग्राचार्य और धर्म में चल के पढ़ना पढ़ाना श्रीर सखोपदेश करना ही तप है। यह नाको मौद्गल्य श्राचार्य का मत है श्रीर सब श्राचार्यों के मत में यही पूर्वोक्त तप है, ऐसा तू जान ।। ३ ।। इत्यादि उपदेश तीन दिन के भीतर आचार्य वा बालक का पिता करे। बालक का पाठ्यक्रम ऋषि द्यानन्द ने प्राचीन परिपाटी पर इस भांति लिखा है-

पाणिनी मुनि कृत वर्णोच्चारण शिक्षा १ एक महीने

के भीतर पदा देवें । पुनः पाणिनो मुनि कृत श्रष्टाध्यायी का पाठ पदच्छेद श्रर्थ सिंहत म् श्राठ महीने में, श्रथवा १ वर्ष में पदा कर धातु पाठ और १० दश लकारों के रूप साध-वाना तथा दश प्रक्रिया भी साधवानी, पुनः पाणिनो मुनि कृत लिङ्गानुशासन श्रौर उत्पादि, गण पाठ तथा श्रष्टध्या-यीस्थ ग्रुल श्रौर तृच् प्रत्याद्यन्त सुबन्त रूप : छः महीनं के भीतर सधवा देवें, पुनः दूसरी बार श्रष्टाध्यायी पदार्थोक्ति समास शंका समाधान उत्सर्ग श्रपवाद श्रन्वय पूर्वक पढ़ायें। श्रीर संस्कृत भाषण का भी श्रभ्यास कराते लाँय, महीने के भीतर इतना पढ़ना पढ़ाना चाहिये।

तत्पश्चात् पत्रश्नलि मुनिकृत महाभाष्य-जिसमें वर्णोचा-रण शिचा, श्रष्टाध्यायी, धातु पाठ, गण पाठ, उत्पादि गण, लिङ्गानुशासन, इन ६ छः प्रन्थों की व्याख्या यथावत् लिखी है, डेढ़ वर्ष में श्रर्थात् कि श्राक्ष महीनों में इसको पढ़ना इस प्रकार शिचा श्रीर व्याकरण शास्त्र को ३ वर्ष १ पाँच महीने वा ६ महीने श्रध्वा ४ वर्ष के भीतर प्राक् कर सब संस्कृत विद्या के मर्भस्थलों को समभने के योग्य होवे, तत्पश्चात् यास्क मुनिकृत निघरह, निरुक्त तथा कास्यायनी मुनि कृत कोश ना डेढ वर्ष के भीतर पढ़कर श्रम्ययार्थ श्रासमुनिकृत वास्यबाचक सम्बन्धरूप यौगिक

योगरूढि और रूढि तीन प्रकार के शब्दों से अर्थ यथावत जानें। तत्पश्चात् पिङ्गलाचार्यं कृत पिङ्गल सूत्र छन्दो-प्रनथ भाष्य सहित ३ महीने में पढ और तीन महीनेमें रखोकादि रचन विद्या को सीखें, पुनः यास्क मुनि कृत, काच्यालंकार सुत्र, वाल्यायन मुनिकृत भाष्य सहित श्राकांत्रा, योग्यता श्रावृत्ति, श्रीर तात्पर्यार्थ, श्रन्वय सहित पढ़के इसी के साथ मनुस्मृत, विदुर नीति, श्रादि श्रीर किसी प्रकरणमें के १० सर्ग बाल्मीकीय रामायण के-सब १ वर्षके भीतर पर्दे श्रीर पढावें तथा एक वर्षमें सुर्य सिद्धान्तादि में से किसी एक सिद्धान्त से गणित-विका जिसमें बीज गणित रेखा गणित श्रीर पाटी गणित, जिसको श्रङ्क गणित भी कहते हैं पढ़े, श्रौर पहावे । निघरद्व से लेके ज्योतिष पर्यन्त वेदाङ्गों को चार वर्ष के भोतर पढ़े। तत्पश्चात् जैमिनी मुनि कृत सूत्र पूर्वमीमांया को, ध्यास मुनि कृत ब्याख्या सहित, क्याद मूनि कृत वैशेषिक सूत्र रूप शास्त्र को, गौतम मुनि कृत प्रशस्त वाद भाष्य सहित, वास्यायन मुनि कृत भाष्य सहित गौतम मुनि कृत सूत्र रूप न्याय शास्त्र, ज्यास मुनि कृत भाष्य सिंहत, पतञ्जलि मुनि कृत योग सूत्र योग शास्त्र, भागरी मुनि कृत भाष्य युक्त कपिलाचार्य कृत सूत्र रूप सांख्य शास्त्र, जैमिनि वा बौद्धायन श्रादि मुनि कृत

ब्याख्या सहित, व्यास मुनि कृत शारीरिकसुत्र तथा ईश, केन, कठ, प्रश्न, मण्डक, माण्डुक, ऐतैरेय, तैत्तिरीय, छान्दोग्य श्रीर बृहदारख्यक, १० दश उपनिषद् व्यासादि मुनि कृत व्याख्या सहित वेदान्त शास्त्र । इन ६ शास्त्रों को २ वर्ष के भीतर पढ़ खेवे। तत्पश्चात् ऐतरेय ऋग्वेद का ब्राह्मण्। श्राश्वकायन कृत श्रीत तथा गृह्य सूत्र और कल्प सुन्न, पद क्रम और ज्याकरणादि के सहाय के छन्द-स्वर पदार्थ अन्वय भावार्थ सहित ऋग्वेद का पठन ३ तीन वर्ष के भीतर करे। इसी प्रकार यजुर्वेद को कत पथ बाह्मण और पदादि के सहित, सामवेद को २ दो वर्ष. तथा गोपथ बाह्मण श्रीर पदादि के सहित श्रथर्व वेद को दो वर्ष के भीतर पढ़े। सब मिल के ह वर्षों के भीतर २ चारों वेदों को पढ़ना और पढ़ाना चाहिये। पुनः ऋग्वेद का उपवेद श्रायुर्वेद, जिसको वैद्यक शास्त्र कहते हैं। जिसमें धन्वन्तरि कृत सुश्रुत श्रीर निघग्टु तथा पत्तक्षित्व ऋषि कृत चरक श्रादि श्रार्थप्रनथ हैं इनको ३ वर्ष में पढ़े। जैसे सुश्र-तादि में शस्त्र लिखें हैं-बना कर सब शरीर के श्रवयवों को काट कर देखें। उसमें शारीरिक विद्या को साचात् करे। तत्पश्चात यजुर्वेद का उपवेद धनुर्वेद जिसको शस्त्रास्त्र विद्या कहते हैं । जिसमें श्रक्तिरा श्रादि ऋषि कृत

प्रम्थ हैं, जो इस समय बहुधा नहीं मिखते, ३ वर्ष में पढ़े और पढ़ावे। पुनः सामवेद का उपवेद गम्धवेवेद जिसमें नारद संहितादि प्रम्थ हैं। उनको पढ़ के स्वर, राग, रागिग्री समय, बादिन्न, ग्राम, ताल, मूर्छना, भ्रादि का श्रभ्याम करे।

पत्परचात् अथवं वेद का उपवेद अथवंवेद जिसको शिल्प शास्त्र कहते हैं। जिसमें विश्वकर्मा, स्वष्टा और मयकृत संहिता अन्थ हैं। उनको ६ वर्ष के भीतर पढ़ के विमान तार, भूगभीदि विद्याओं को साचात् करे। इन शिचा से लेके आयुर्वेद तक १४ चौदह विद्याओं को ३१ वर्षों में पढ़के महा विद्वान् होकर अपने और सब जगत् के कल्याण और उन्नति करने में प्रयत्न किया करे।"

यह क्रम एक चमस्कारिक क्रम है और इस पर विचार करने की मैं प्रत्येक हिन्दु विद्वान से श्रपील करता हैं।

मैं खुले तौर पर यह कहना चाहता हूँ कि यदि बालक का पालन पोषणा श्रौर शिक्षा का उचित प्रबन्ध न हो तो इसे जन्म देने से क्या लाभ हैं? परन्तु यह प्रश्न साधारण नहीं। बच्चों के लिये उत्तम खाद्य, रहने का स्थान, शिक्षा के लिये इच्य इन सबकी श्रावश्यकता राष्ट्र को प्री करनी होगी। यह माता पिता के लिये करना श्रावश्यक हैं।

भव प्राचीन भारत जैसे गुरुकुल नहीं रहे न श्रव वह समय है। न श्रव डारविन और माखध्स का समय है। श्राज सारी पृथ्वी मनुष्यों से भर गई है। गत वर्षों में श्रेष्ठ जातियों की जन वृद्धि रोकी गई है। इस रोक का श्रर्थ यह है कि उतनी ही सन्तान उत्पन्न की जाय—जितनी का पालन पोषण तथा शिचा राष्ट्र कर सके।

यदि ऐसा न किया जायगा तो नेपोि ज्ञियन के कथना-नुसार राष्ट्रों को बद हज़मी का रोग हो जायगा जिससे उसकी मृत्यु की ही सम्भावना है।

अध्याय चौथा

नागरिक जीवन की सम्हाल।

यह बात ध्यान में रखने योग्य है कि देहातों की अपोत्ता करकों और नगरों में युवक लड़के लड़कियाँ अधिक बिगढ़ते हैं। नगरों में भी पुराने निवासियों पर वहाँ की चमक दमक का उतना आर्कपक प्रभाव नहीं पड़ता, जितना कि किसी देहाती पर — एका एक नगर में आ जाने पर।

गांव के सीधे साधे जब्के-श्रपने गांव के छोटे स्कूल की पढ़ाई समाप्त करके जब निकट के कस्बे के टाउन स्कूल में धाते हैं तो उन्हें वहाँ कुछ चमरकार सा दीखता है। धच्छी २ इमारतें, मेब, कुर्सी, ठीक तराश के कपड़े धौर चटपटे शहरी साथी धौर चाय पानी। वे प्रथम कुछ संकोच में रहते हैं

फिर सब में मिल जाते हैं, शहर के कुछ लुच्चे लड़के अपना उक्लू साधते, कुछ ठगने या उनसे अप्राकृत पाप करने के लिये उन से मीठी र बातें बनाकर दोस्ती जनाते, उनके लिये कुछ सर्च करते और उन्हें फाँस कर अपने रक्ष में रग देते हैं। पतन का मार्ग इतना सरल है कि एक बार आदमी उस पर पड़ कर फिर रक नहीं सकता है, चलेढी जाता है। ये लड़के शीध ही उन में मिल जाते हैं और दुर्गु थों में फँस जाते हैं—क्योंकि ये प्राय: भो के होते हैं—इन्हें कुछ तजुर्वा भी नहीं होता। ये माता पिता की तरफ से सावधान भी नहीं किये जाते और कोई हितेषी इनकी सम्हाल भी नहीं रखता। बोडिंगमें रहने वाले लड़के परस्पर प्रीति करने लगते — स्पर्शास्पर्श बढ़ाते एक शैथा पर सोते—परस्पर छेड़ते और अन्त में अभाकृत दुर्व्यसनों से फँस जाते हैं।

एका एक किसी ऐसे बहुक के चेहरे की चमक मारी जाय, आवाज़ खरखरी और भारी हो जाय। उसमें भीरुता और एकान्त प्रियता आ जाय। स्फूर्ति और आनम्द्-मय मस्ती नेत्रों में न रहे। प्रात काज देर से उठने खगे। पाज़ाने में देर तक बैठा रहे। स्नानकरने और शुद्ध रहने में जापरवाह हो जाय। पढ़ने में और क्लास में फिसही हो

जाय तो समक लोजिये, वह दुर्ब्यसनों में फँस गया है, वह धवश्य वीर्य बाहर फैंकने लगा है। माता पिता को उचित है कि उस लड़के की शिचा बन्द करके उसे किसानी या किसी परिश्रम के धन्धे में लगा दे। कुछ परवा नहीं यह उनका बेटा मूर्ख रह जायगा। मगर वह जीता जागता मेहनती और कमांउ तो बना रहेगा ?

कालेज जाकर विद्यार्थियों के जीवन में रस पड़ जाता है—कालेज के कोर्स की किताबों में जब टेनी सन श्रौर सैक्सिपियर के प्रेम प्याले वे स्वाद ले लेकर पीते हैं, होस्टल के स्वच्छ कमरे में, गुदगुदे फूल के समान पलंग पर पड़े हुथे, भर जबानी की उन्न में जब वे उक्त काक्यों श्रौर कथाश्रों की संगममेर के समान रवेत या गुलाब के समान कोमल श्रौर चाँदनी के समान स्वच्छ प्रेम पुति जियों की मनही मन में तस्वीर बनाते हैं—नीली श्राँखों को श्रम्भेर में घूरते, सुनहरी वालों से स्वप्न में खेलते, करूपनाश्रों के राज्य में कोर्टशिप करते हैं। तब वे श्रपने संयम श्रीर मन की पिवत्रता को नहीं बनाये रह सकते। धीरे र कुछ उनके श्रम्तरंग मित्र बन जाते हैं ये लोग वे होते हैं जो साल दो साल प्रथम उस स्वप्न रस को चल खुके होते हैं और श्रव उन्होंने इधर उधर सचमुच एक दो धूंट चोरी छिपे

पी खेने का कुछ बन्दोबस्त कर बिया है। वे लोगप्रथम तो घापस में हँसी दिश्वगी करते हैं। कालेख में धाने जाने वाली-मजूरिन-नौकरनी घादि पर घाँख लड़ाने की फूंट मूट गणें लड़ाते हैं — और उपहास करते हैं। फिर रास्ते चलती खियों, पार्को में घूमने वाली मिसों, लेडियों की धालोचना का नम्बर घाता है—उसके बाद नाटक थियेटर बाइस्कोप के प्रसंग घाते हैं खहाँ घनेकों निर्वां घरय खुझम खुझा देखने और खुश होने को मिलते हैं। घरित्र और मानसिक बल बहुत दुर्बल हो जाता है। शीघ ही पुराने मित्र एक दिन खुल पड़ते हैं और वे घपनी गोपनीय जान (?) के कोटे पर उन्हें एक बार जरा मजाक के बिये के जाते हैं—फिर तो हर कोई स्वयं ही पहुँच जाता है।

नाटक, थियेटर, बाइस कोप और गन्दे उपन्यास तथा दूसरी फौश पुस्तकों नागरिक जीवन का सब से घाधिक ख़तरनाक रूप है। छोटे दर्जे के जोग, श्रीर कची उस्र के खी पुरुषों पर इनका बहुत बुरा प्रभाव पहता है। न्यर्थ उनकी काम वासना भड़क उठती है। प्रत्येक माता पिता और ध्रमिभावक को उचित है कि वह श्रपने घर की बहु बेटियों और बच्चों को इन गन्दे मनोरंजनों से बचावे। कोई भी

तमाशा थियेटर पहले स्वयं देखले श्रौर सबको दिखानेयोग्य हो तब दिखावे । सचा मनोरञ्जन गायन - चित्रकला, लंगल बगीचा - नदी किनारे अमया - या बाल बचों में हास्यबिलास है - प्रत्येक गृहस्थ को ऐसे मनोरंजन समय २ पर करते रहने चाहिये कि जिससे स्त्री बचों का जी घरसे ऊब न जाय। श्रौर वे मनोरंजन के लिये गन्दे उपन्यास या थियेटर श्रादि देखने की श्रोर रुचि न चला सकें।

छोटे बच्चों के बिगाइने वाले घरके नौकर होते हैं। इन का पूरा २ ध्यान रखना चाहिये। कहार, धीमर, खिदमतग़ार कोचवान—माली ब्रादि देख भाज कर बाजबच्चे दार धौर अच्छे ब्रादमो रखने चाढिये। ये लोग पैसा चुराने से अपनी शिचा शुरू करते हैं। बच्चों से पैसा चुरवा २ कर मिठाई का लाजच देते हैं—पीछे उन्हें तरह २ से फुसला कर उन में हिज मिज जाते हैं—बहुधा उन्हें श्रपनी कोठरियों में के जाते हैं धौर उन्हें कुरिसत चेष्टा सिखाते हैं धौर फिर उनसे अप्राकृत व्यवहार करते हैं। ये बाजक फिर सदा इन नौकरों से दरते और इनके अधीन रहने जगते हैं। माजिकों को इन पर कड़ी दृष्टि रखनी चाहिये।

बहुधा चलते पुर्जे मेहमान लोग शहरों की सैर करने भाते हैं। ये सब निबटे हुये हजरत होते हैं। रात को

संंर को चलती वक्त ये घर के किसी श्रादमी को साथ चल कर सैर कराने का श्राग्रह करते हैं। बहुत करके घर के लोग श्रपने सीधे साधे युवा पुत्र को साथ भेज देते हैं। ये श्रनजान हजरत दोही चार दिन में उस लड़के को ठीक २ सैर की चाट लगा जाते हैं।

पास पड़ोस के सम्बन्ध में भी इसी प्रकार की बातें बराबर होती रहती हैं। ख़ास कर पड़ौस की विधवा श्रौर कम्याश्रों पर बड़े शहरों में हमेशा पड़ौसी युवकों की श्रौर उनके पास श्राने वाली मित्र मगडली की कुष्टिए रहती है। प्रत्येक गृहस्थ को इन सब बातों की यथावत सम्हाल रखनी निहायत जरूरी है।



अध्याय बठा

---:0;----

धार्मिक शिचा और सात्विक जीवन

--: x :--

केवता ११ वर्ष की अवस्था में धर्म के नाम पर सिर कटाने वाले और दीवार में जीते चिने जाने वाले बालकों का जब में ध्यान करता हूँ तब यह विचार होता है कि क्या ऐसी पवित्र, हद और सार्त्विक शिचा सार्वजनिक रूप से मनुष्य समाज के लिये सम्भव भी है ? किस लिये महा समर्थ राम पिता के इतने आज्ञाकारी और मर्यादा भीर हुथे? ध्रुव और प्रह्वादने, शुक और सनस्डुमारों ने वह पवित्र सम्मान प्राप्त किया जो सिद्ध तपस्वियों तक को दुर्जभ था। केवल धार्मिक शिचा और सार्त्विक जीवन की सद्

माज इस स्कूल के किराये के टट्टू मास्टरों के उत्पर सुकुमार बचों की शिक्षा का भार सोंप कर निश्चिन्त हो जाते हैं। भौर वे लोग उसे बेत और गालियों को सहायता से यथा समय सब कुछ सिखा देते हैं—। प्रायः कुचेष्टाएँ स्कूल से ही सीखी जाती हैं। कैसे खेद की बात है कि पिता भ्रपने पुत्रों को परीक्षा में पास होने के लिये तो हतनी कहाई का बन्दोबस्त करतेहैं—परन्तु उन में सद्गुर्खों और उच्चता के भाव उत्पन्न होने की तरफ्र कुछ भी ध्यान नहीं देते।

सस्य भाषक, बढ़ों का सस्कार, नम्रता, दया, लजा भेम और सुशीलता का बील बच्चों में स्वमाव से ही होता है। यदि उन्हें भय दिखा कर साधारण बातों पर मूठ बोलने को लाचार किया न जाय-उनसे निकम्मी ठठोलिया न की लाँय। उन्हें शासन में किन्तु प्रेम पूर्वक रखा लाय। उन्हें रोगियों की सेवा-म्रनाथों से प्रेम, दिखों की सहा-यता की म्रोर प्रवृत्त कराया लाय तो प्रत्येक बालक एक महान् पुरुष बन सकता है।

परन्तु इसके स्थान पर होता यह है कि माता पिता खूब दिख़गी में 'पुत्र से काली गोरी बहू की' धौर कन्याओं से 'काने कुबड़े दूस्हे' की बात अवस्य करते हैं। पिता के

मित्रगण बहुधा पिता की मूँ छूँ उखाइने — डण्डे मारने — गाली देने की शिक्षा देते हैं।

इन सब का क्या परिणाम होता है—इस पर वे कभी विचार नहीं करते । बहुधा नंगे लड़के लड़कियों में मिल कर खेलते हैं— और धनेकों कुचेष्टाएँ अपनी शिश्नेन्द्रियों के द्वारा करते हैं । मूर्ख मा बाप देख भी लेते हैं तो हंस्र देते हैं ।

घरों में देवताओं और पूर्वजों की प्रतिमाओं को स्था-पित करने का मुख्य श्रमिश्राय यही था कि उनके चिरश्नों को समय २ पर सुन कर बच्चों को उधर श्राक्षित कराया जाय— और उन महान् चिरश्नों की बच्चों के चिरश्नों पर छाया डाली जाय। परम्तु बहुधा ऐसे उदाहरण देलने को मिले हैं कि पिता देवदर्शन को चलने लगे— और गृहिणी ने श्राप्रह पूर्वक बच्चे को लेजाने को कहा— प्रथम यो यही जवाब दिया गया कि वहाँ—कोई नाच तमाशा तो है नहीं, मन्दिर में इस इन्नत को किस लिए साथ लेकर जाऊँ? परम्तु खी और बच्चे की इठ से खेभी गये तो मन्दिर में जा कर एक पैसा बच्चे को दे कर मूर्ति पर चढ़ाने को दिया और चले श्राये। दूसरे ही दिन किसी रण्डी के नाच की महफिल का न्योता श्राया—श्राप भी बढ़िया वस्न पहन

चिल्लेदार दुपटा कन्धे पर डाझा-पान खाया, इतर लगाया और बच्चे को सलमे की टोपी और रेशमी फूलदार वस्त्र पहना कर ले गये। वेश्या मटकवी आई। खुद पान की सरतरी और इन्न दान खे कर खड़े हो गये। बेटे के हाथ में रुपया देकर कहा—'बेटे, उंगली पर रख कर देना।'

स्रव बच्चे को विचारने का समय श्राया — वह सोचता है— वहाँ मन्दिर में नये थे- तब बिदया वस्त्र भी नहीं पहने थे। वहाँ इतनी रौनक भी नहीं थी। उसके पिता जी ने इतनी खातिर भी न की थी। वहाँ एक पैसा चढ़ाया था— यहाँ एक रुपया ? जरूर वह छोटी देवी थी और यह बड़ी देवी है।

पाठक ! आप सोचें कि ये संस्कार अबोध बालक के हृदय पर क्या प्रभाव डाल सकते हैं ? एक समय था लक घर २ हवन यक्त होते थे — ऋषि महात्मा आया करते थे – और गृहस्थ अपने बच्चों को उनकी चरण रल देकर कृतार्थ होते थे। सिर्फ वातावरण से ही बच्चे वीर, तेजस्वी और धर्मात्मा बनते थे। पर अब सब कर्म काण्ड नष्ट हो गये। पिताओं के चरित्र भी डूब गये। मनुष्य में कामकोध लोभ मोह की हुतनी माया बद गई कि सैर सपाटे के अव-

सर पर अकसर बण्चों को खेल— सीनेमा आदि में ले जाया जाता है। स्वच्छ वायु, बगीचा और प्राकृत सुन्दर स्थानों पर उन्हें बहुत कम जाने का अवसर मिलता है— और उन्हें उन सुन्दरताओं के सम्बन्ध में कुछ बताया तो जाता ही नहीं है। इसिलए वे तमाशे देखने के शौकीन हो जाते हैं। और इवा खोरी पसन्द नहीं करते।

वर्षों के वस्त्र भी भ्रानावश्यक चटकी से भीर ऐसे बनाये साते हैं कि उनके मन में व्यर्थ का धमण्ड भीर बनावट का भाव पैदा हो जाता है—वे गरीब बच्चों से भ्रपने को उच्च समझते श्रीर उन्हें चढाते हैं। गरीब बच्चे उनसे सजलते श्रीर ईपां करते हैं। कमी उन्हें प्रेम भीर सहानुभूति से रहने की ही शिक्षा नहीं दी जाती।

ऋध्याय सातवां

सदाचार।

--:0:--

मानव-समाज की सब से बहुमूल्य वस्तु आचार है। कोग यह कहते हैं कि संसार में विद्या सब से श्रेष्ठ, है, विद्या के सन्मुख संसार की समस्त सम्पदाएं और शक्तियां सुक जाती हैं। परन्तु में कहता हूँ कि श्राचार एक ऐसी वस्तु है जिसके सन्मुख विद्या का मस्तक सुक जाता है। प्रारम्भ में कोग धन शक्ति या विद्या के द्वारा सम्मान पाते हैं—परन्तु यदि वे श्रचारवान् नहीं निकलते हैं तो शीघ उनका पतन होता है और उनकी शक्ति, विद्या और धन किसी तरह उन्हें सम्मानित नहीं कर सकता। संसार का सब से अधिक नीच दुराचारी रोम का वादशाह नीरो था, जब रोम

महानगरी जल रही थी-तब यह मजे से बांसरी बजा रहा था, इसने अपनी माता, पुत्री और बहिन तक से भी दुष्कर्म किया। लाखों मनुष्यों को सिंह प्रादि जन्तुचों से फड़वा डालना इसका निस्य का मनोरश्नन था। तिस पर भी यह पिशाच उस समय का समस्त रोम भर में सब से श्रेष्ठ विद्वान और तत्ववेत्ता था ! रावण के विषय में प्रत्येक हिन्दु जानता है-यह व्यक्ति महात्मापुजस्य ऋषि का नाती और कुबेर का सम्बन्धी था। उच्च श्रेणी के बाह्मण वंश में था। राजनीति श्रीर वेदों का चुरन्धर पण्डित था-इसने वेदों पर श्रलौकिक भाष्य किया है। भगवान राम ने श्राग्रह पूर्वक लक्ष्मण को इस के पास मृत्युकाल में नीति-शिचा प्राप्त करने भेजा था। इसके परिवार में विभीषण जैसे धर्मात्मा और सुलोचना जैसी पतित्रता खियाँ थीं। इस की सामर्थ्य और वैभव की तो कोई हद न थी। फिर भी यह श्रादमी घोर दुराचारी था, लम्पटता के कारण वह श्रेष्ठ कुल का होने पर भी राज्ञस कहलाया श्रीर बन्ध आन्धवों के साथ मारा गया।

भगवान् राम सच्चे श्रचारवान् पुरुष थे, उन्होंने किंदिन से किंदिन समय पर भी श्रपना बङ्प्पन प्रगट किया था। कृष्ण को भी मैं परम श्रेष्ट श्राचारवान् समकता हूँ। जो

पुरुष घनघोर युद्धस्थल में योड़ों को मल दल कर पानी पिलाने की हिम्मत रखता है, जो विकट युद्ध प्रसंग के अवस्य पर गीता का परमतत्व कहने की योग्यता और धैर्य रखता है। जिसके हृदय में भगिनी प्रेम की महा प्रतिष्ठा है— जो पाप और अनाचार के विध्वंस करने के लिये प्रभास और कुरुषेत्रों के मैदानों का सूत्रधार बन सकता है वह कभी हृन्द्वियका गुलाम नहीं हो सकता।

भागवत में खिखा है कि खियाँ उनके प्रेम भिक्त में मतवाखी हुई उनके पीछे र फिरतीं थीं। मैं पूछता हूँ कि कृष्ण भी किसी खी के पीछे पागल हो कर फिरे ? दुराचारी खोग खियों के पीछे फिरा करते हैं कि खियाँ दुराचारियों के पीछे फिरा करती हैं। फिर उन खियों के पिक फिरा करती हैं। फिर उन खियों के पिक फिरा करती हैं। फिर उन खियों के पिक किसी महात्मा की पवित्रता पर विश्वास हुये—क्या को है भी श्रादमी अपनी बहू बेटियों को किसी गैर श्रादमी के पास जाने दे सकता है ? कोई कितना ही बहा महात्मा या बहा श्रादमी हो पर उसके साथ भी कोई अपनी खियों का दुराचार नहीं सह सकता। महात्मा गान्धी को भी खियाँ बहुधा घेरे रहती हैं। जिस परिवार में वे जाते हैं उसकी खियाँ उनसे कोई परदा नहीं करतीं। प्रायः श्रकेली

सियाँ उन के दर्शनार्थ जाती हैं। बहुत सियों ने गान्धी भक्ति के गीत बनाये हैं भौर वे गली २ उत्सवों पर गाया करती हैं। एक बार दो तीन सौ वेश्यायें उनके दर्शनार्थ आई थीं। श्रीर उन्होंने उनका उपदेश श्रवण कियाथा। इन सब का कोई पापात्मा वही श्रर्थ लगावे—को दिन्य पुरुष कृष्ण के लिये लगाया गया तो क्या उसकी जवान काटी जा सकती है ?

शंकर, बुद्ध और द्यानम्द वास्तव में कुछ अलौकिक विद्वान् न थे। यह सम्भव है कि उस काल में उनसे श्रेष्ठ विद्वान् संसार में हो। स्वयं शंकराचार्य के गुरु श्रीमत्पाद गोविन्दा चार्य की उतनो पूजा नहीं हुई जितनी उनकी। इसका मुख्य कारण सिर्फ इन महा पुरुषों का आचार ही था। आचार के ही बल पर उन्होंने वह सम्मान और अतिष्ठा प्राप्त की। लोकमान्य विक्रक बी० ए०, एल० एल० बी० थे और महात्मा गान्धी वैरिष्टर है। परन्तु इन देव तुल्य व्यक्तियों की पूजा इनकी विद्या के कारण नहीं हो रही है। इनका उत्कृष्ट चरित्र बल ही उनकी इस पूजा का कारण है। मनुष्य को चाहिये कि वह हर तरह अपने सदाचार की रक्षा करें। शास्त्रकार कहते हैं "आचार: प्रथमो धर्मः।" आचार सब से मुख्य धर्म है।

भगवान् मनुने भाचार सम्बन्धी कुछ सुन्दर उपदेश दिये हैं । जो प्रत्येक मनुष्य को मनन करने योग्य हैं ।

"मनुष्यों को सदा इस बात पर ध्यान रखना चाहिये कि जिसका सेवन राग ह्रेष रहित विद्वान लोग नित्य करें-और जिसका अन्तःकरण अनुमोदन करे-वही धर्म करणीय है। इस संसार में श्रतिकामात्मता श्रव्ही नहीं है और श्रति निष्काम होना भी ठीक नहीं है। सचा ज्ञान योग और कर्म योग यह सब कामना ही से सिद्ध होता है। काम संकल्प का मूल है श्रीर संकल्प से पुरुष कार्य होते हैं। यम-धर्म-व्रत सब संकल्प से ही होते हैं। निष्काम की कोई किया नहीं है। वेद, स्मृति, सदाचार और अपनी श्रन्त:करण की स्वीकृति यह चार प्रकार धर्म के हैं। जो द्यर्थ श्रीर काम में श्रसक्त हैं उनके लिये धर्म ज्ञान कहा गया है। विद्वान पुरुष को चाहिये कि विषयों में जाती हुई इन्द्रियों को दौड़ते हुए घोड़े के समान रोक कर संयम से रखे। इन्द्रियों के प्रसंग से श्रनेकों दोषों का प्रकटीकरण होता है - उन्हें दबा रखने ही से सिद्धि प्राप्त होती है। काम की तिम भोगों में कदापि नहीं होती। घी डाजने से तो श्राग्न सदा बढ़ती ही है। इस बिये इन्द्रियों को वश में करके और मन का संयम करके सब अर्थों की उत्तम

प्राप्ति करे । सुन कर, छूकर, सूंघ कर जो मनुष्य न प्रसन्न हो, न ग्लानि करे— वही सन्ना जितेन्द्रिय हैं।

प्रसिद्ध परमहंस श्री रामकृष्ण महात्मा ने कभी दृष्य श्रीर स्त्री का स्पर्श नहीं किया। कहा जाता है कि गाढ़ निद्रावस्था में भी यदि उनके शरीर से घातु श्रीर स्त्री का स्पर्श कराया जाता था तो उनका शरीर धनुषाकार श्रकड़ने स्वगता था।

- , श्रनेकों ग्रन्थों में श्राचार के इस प्रकार नियम लिखे गये हैं जो सब युवकों को पालन करने योग्य हैं।
 - १ वेद, गौ, ब्राह्मण, गुरुजन [माता-पिता-श्रौर शिचक श्रादि] बृद्ध, सिद्ध, श्राचार्य श्रौर श्रिधितियों की सदैव पूजा श्रौर सस्कार करे।
 - २-हिकाल सन्ध्या और श्रमिहोत्र करे।
 - ३ किसी के साथ बुराई न करे, बुराई करने वास्ने की भी सवा भजाई की ही चिन्ता करे।
 - ४—सबको अपने ही समान समसे। किसी को कष्ट न दे, सबको प्रसन्ध रखने का उद्योग करे; जिसमें आप प्रसन्ध हो और दूसरे को दुःख पहुँचे ऐसा काम न करे, संसार में सब सुखी हों—सब निरोग हों, सब कल्याया का मार्ग देखें, ऐसी धारया सदामनमें रक्खे।

- स्— सबका बन्धु कोधितों को शांति दाता, डरे हुन्नों को श्राश्वासन देने वाला, शरणगतों का रचक श्रौर साम्य प्रधान होना चाहिए। दूसरों से श्रपने लिए जिस बर्ताव की इच्छा रखता हों उनसे वही बर्ताव करे।
- पराया धन-भूमि, स्त्री श्रादि पर मन न चलावे।
 व्यभिचार से सदा दूर रहे।
- ७— मल मूत्रादि वेगों को कभी म रोके। परन्तु काम, कोध, लोभ, मोह श्रादि मानसिक वेगों को सदा रोकता रहे। इन्द्रिय रूपी घोड़ों की लगाम सदैव खिंची रखे, नहीं तो किसी श्रांधेरे खड़े में ले गिरेंगे।
- म---समय पर, हितकारी, थोड़ा, युक्ति युक्त, सत्य श्रीर मधुर भाषण करे।
- क्यूसरे की निन्दा, चुगली, कटोर भाषण, निरथ क बकवाद श्रीर बीच में बोलना [वात काटना] इससे सदा दूर रहे।
- १०-किसी को श्रपना शत्रुया श्रपने को किसी का शत्रु न कहे। भिन्न २ स्वभाव के मनुष्यों से उनके श्रनुकूल हो श्राचरण करके उन्हें प्रसन्न करे।
- ११-शरीर रचा का सदा ध्यान रक्खे। कोई काम ऐसा

नहीं करना चाहिए जिससे तन्दुरुस्ती को धक्का पहुँचने का दर हो, एक बार भी शरीर रोगी हो जाने से उसे बहुत हानि पहुँच जाती है। बीमारी के ज्ञागातार धक्के तो शरीर को बिल्कुल बेकार कर देते हैं। इस-जिए सदैव निरोग रहने का प्रयन्न करना चाहिए।

- १२-बेदब साहस के काम नहीं करने चाहिए। जैसे अपनी शक्ति से श्रिधिक बोम उठाना, बड़ी नदी को भुजाओं से तैरना, श्रपने से अधिक बलवान् से खड़ना श्राम्य स्थानों में घुसना श्रादि।
- १३-बुहारी की धुल शरीर पर न पड़ने दे। धूप, धूर्झाँ, धूल, पूर्व की हवा, कठोर वायु, श्रीर पाला, या बरफ गिरना इनसे बचाव रखे।
- 18 निकलते हुए इबते हुए और ग्रहण लगते सूर्य को न देखे। अन्य भी चमकदार वस्तुओं को न देखे।
- १५-अपवित्र, पृणित, अप्रिय और दुर्गन्धित वस्तुओं की की श्रोर न देखे — न उन्हें छुये।
- १६-राख, भूता, बालू-ग्रबसी श्रादि पदार्थ श्रीर गन्दे पदार्थों के देर पर न चर्डे।
- १७-बोमे को सिर पर उठाकर न ले जाय।
- १८-रात्रि में वृत्त के नीचे न सोवे।

- ११-देवस्थान, चैत्य, श्मशान, बगीचा, सूना मकान, जंगस इन म्थानों में रात्रि वास न करे।
- २०-पराये घर भोजन करने में सावधान रहना चाहिए।
- २१-श्रम्भि में न तापे, विशेष कर पैरों के तलवे न सेके :
- २ नंगा न नहाएं श्रीर बिना जाने जल में न घुसे ।
- २३-शराब, भंग, चरत, चुरूट, हुका, चाय, काफो, श्रादि न पीवे।
- २४-पापी, दुराचारी, गर्भ गिरानेवाले, पतित, पागता ग्रीर देशद्रोही का संग न करे।
- २६-सदा मध्यम वृत्ति में चले। किसी काम में श्रति न करे।
- २७-बहुत स्थाने मालिक की नौकरी न करे।
- २८-प्रत्येक कार्य का समय विभाग नियत करे। श्रीर सोते वक्त दिन भर की चर्या श्रवश्य नोट करतो।
- २६-को चाहते हों कि हमारी सन्तान सदाचारी हों उन्हें चाहिए कि कभी दुराचार न करें।
- ३ पहने हुए कपड़े पहनने से, एक विस्तर पर बैठने से या सोने से, लगाये हुए चन्दन में से चन्दन लगाने से, पहनो हुई माला पहनने से, साथ भोजन करने से, भूठा खाने और हाथ मिलाने से, संसर्गल रोग उड़ कर लग जाते हैं। इन विषयों में खूब सावधान रहना।

ऋध्याय ऋाठवां

---o::::o---

यौवन का विकास

--- ;---

१२ वर्ष की श्रायु होने पर लड़का, श्रौर १० वर्ष की श्रायु होने पर लड़की, यौदन में प्रवेश करती हैं। इस श्रायु में उनके शरीर में परिवर्तन श्रारम्भ हो जाते हैं। कम्या की श्रायु में १६ वर्ष की श्रायु तक, श्रौर लड़के में २४ वर्ष की श्रायु तक ये परिवर्तन जारी रहते हैं। इसके बाद श्रायु परिपक्त हो जाती है।

यौवनकाल के परिवर्तन— इस आयु में लड़के-सड़की की बगल और पेड़ पर बाल जमने लगते हैं। कंठ स्थर बदल जाता है। बालकों की लिंगेन्द्रिय बढ़ जाती है। और अब्दकोश में वीर्य उत्पन्न होने लगता है।

यद्यपि उनमें इन बातों का प्रादुर्भाव होता है। पर श्रभी पूर्यावस्था में बहुत देर होती है। कन्वाश्रों के स्तन बढ़ने लगते हैं। श्रीर उन्हें रजोदर्शन भो होने लगता है।

उनका मानसिक प्रभाव — इस श्रवस्था में प्रायः सहके लहिकयाँ तनिक भी संसर्ग दोष से काम सम्बन्धी चिन्तन करने जगते हैं। इस प्रकार की बातों में उन्हें चाव मालूम होता है। वे प्रगट या गुप्त ऐसी बातें सुनना या ऐसी पुस्तकें पढ़ना पसन्द करते हैं। यदि तनिक भी श्रवसर मिला, तो कुटेव सीख जाते हैं।

गुदेन्द्रिय सम्बन्धी सायधानी— बचों को होटी श्रायु से नंगा रखने या उनकी जनेन्द्रियों को साफ न रखने से उन स्थानों में मैल जमकर खुजली चलने लगती है। श्रीर प्राय: बच्चे उस स्थान को मसलने या खुजाने लगते हैं। धीरे २ उन्हें इन्द्रिय स्पर्श का चस्का लग जाता है। गोद में लेने पर भी वे कुटेव सीख जाते हैं।

देनिक चर्या का खास प्रवन्ध — इस त्रायु में साव-धानी से बालकों की दैनिकचर्या का प्रवन्ध करना चाहिये। उन्हें खुब शारीरिक त्रीर मानसिक परिश्रम में स्नगाये रखना चाहिये। जितना ही त्रधिक वे शारीरिक त्रीर भूमानसिक प्रिथम। करेंगे, उतना हो उनकी शक्तियों में

विकास होगा । उन के विचार शुद्ध भौर चिंतन साखिक बनाने को ऐसी सभा सोसाइटियों भौर ऐसी पुस्तकों का श्रध्ययन कराया जाए, जो इस विषय पर सर- जता से प्रकाश डाजती हों।

वालक के स्वभाव पर माता-पिता की वयस का स्वभाव-प्रो० रेल्ड फोल्ड ने अभी हाल में एक चित्ताकर्पक भेद ज़ाहिर किया है। जिसका यह भाव है कि जिन बाजकों के माता-पिता बढ़ी वयस के होते हैं। उनकी दिमार्गी शक्तियां जन्न माता पिता के बाजकों से अधिक उन्नत होती हैं। संसार के महापुरुषों में से श्रधिक वही हैं -जो पक्की उमर के माता-पिता से उत्पन्न हुए हैं। श्रापने कुछ श्रंक भी एकत्रित किये हैं। जिनके श्रध्ययन से पता चलता है कि पचास साल से अधिक उमर के माता-पिता के बाजकों में महापुरुषों की श्रीसत संख्या सामान्य रूप से सबसे श्रधिक होती है। छोटी उमर की माता-पिता के ताबके प्रायः कठोर, दुष्ट श्रीर विषय वासनार्थों के दास होते हैं। श्राजकल ६० प्रति सैकड़ा श्रभ्यस्त श्रपराधी नौजवान माता-पिता से उत्पन्न होते हैं। यह आवश्यक नहीं कि नौजवान माता-पिता के सभी बाजक ऐसे ही हों। हाँ यह ज़रूर है कि वयस्क माता-पिता के बालकों की प्रवृत्ति

अपराध की श्रोर कम ही हुशा करतो है। नीजवान माता पिता से बालक जवानों का जोश, बेपरवाही, श्रनधिकार चेष्टा श्रीर वासनाश्रां की एक श्रव्ही संख्या विरसा में खेता है। श्रीर यही इसके स्वभाव बनाने में श्रधिक भाग खेते हैं। इसी कारण ऐसे बाजकों का वीर, श्रपराधी, अथवा सफल सिपाही बनने की चोर चिषक सुकाव होता है। इसके विरुद्ध वयस्क माता-पिता से बालक को शांति, बुद्धिमत्ता. मितव्ययिता, श्रीर उत्तम स्वभाव का विरसा मिलता है।

इन्हीं प्रोफेसर साहिब ने अपने श्रंकों के श्राधार पर एक नक्शा तैयार किया है। जिससे पता चलता है कि भिषा २ प्रकार के पुरुष कितनी २ वयस के माता-पिता के यहाँ उत्पन्न हुए । नेपोल्लियन, ब्रांट [भ्रमेरिकन प्रधान] सिकन्दर आजम, रुज़वैल्ट, और फ्रीइक वी ग्रेट ३१ साब से कम वयस के माता पितान्त्रों के यहाँ पैदा हुए। चित्र-कार, बोलक श्रीर सुचम विद्याश्रों के श्राचार्य प्रायः ३१ से ४० साल के माता पिता के बालक होते हैं। गेटे. स्पिलर. शेक्सपियर, रेफल, एवार्ड, मैकाले, गोल्डस्मिथ, इत्यादि इसी भाग में शामिल किये जा सकते हैं। ४१ से ५० वर्ष की वयस के बीच प्राय: देश के नेता पैदा होते हैं.

यथा – विस्मार्क, कामवेल, ग्लेडस्टोन, श्रीर कीटो, इसी वयस के माता-पिता के यहाँ पैदा हुए।

स्कूली शिद्धा-आप श्रपने प्राणों से प्यारे गुलाब के फूल के समान सुन्दर और कोमल बच्चों को प्रातःकाल उठते ही जलदी से उंडा, बासी खिला, श्रौर कपड़े पहनाकर स्कूल भेल देते हैं। पर भाप यदि कभी उस स्कूल में जाकर देखें, तो आपको दीखेगा कि वहाँ के मनहुस-कमरे में सील भरी धरती पर लकदी की बेंच पढ़ी हैं। भौर श्रापका बचा श्रपने साथियों के साथ, नीची गर्दन किए, मैली पुस्तक पर दृष्टि गाड़े श्रपने पत्ते दुबले पैर हिला रहा है। सामने साचात् यम-स्वरूप मास्टर साहिब मैले वस्त्र पहने, सपलपाता बेंत लिए गःज गरज कर उनके हदयों को हिला रहे हैं। बच्चे बिचारे उन भाड़े के टहू मास्टर साहिब के बेंत के भय से बिलकुल श्रक्ति पूर्ण हदय से सुखे चने के टिक्क की तरह पाठ को गले से उतार रहे हैं।

श्रभागे बच्चे जब स्याही से कपड़े श्रीर बस्ते को मैला करके शाम को फीके श्रीर उदास मुख लिए घर श्राते हैं। श्रीर दोपहर की रक्खी हुई बासी रोटी खाते हैं। तब तो इनके प्रति करुगा की इति श्री हो जाती है। परम्तु जब वे श्रपने मस्तिष्क में श्रगक्को दिन के पाठ याद करने की

चिन्ताओं से उतने ही खदे देखे जाते हैं, जितना कि कोई कर्ज़दार दिन्द्र, जिसे उन्ध्र्या होने की कोई आशा ही नहीं, तब उनकी भयक्कर स्थिति पर विचार उत्पन्न होता है। पर ऐसा विचार जाखों-करोड़ों माता पिताओं में से किसी एक को भी नहीं होता। बहुआ तों ऐसा ही होता है कि बच्चे को ज्योंही जरा हंसते, खेजते या उत्थम मचाते देखा, कि बस या तो उसके स्वयं ही कान मज दिए जाते हैं, और या मास्टर के भयक्कर नाम की उन्हें स्मृति दिखाई जाती है। हर हाजत में मास्टर का नाम उनके जिए एक भेडिये के नाम से कम नहीं।

क्या ऐसे निर्दय और विवेक हीन माता पिताओं से मैं पूछ सकता हूँ कि उनका यह प्यार कितने मूल्य का है ?

आप जब किसी बकरी के या बन्दर अथवा गाय के छोटे बच्चों को मनोहर ढंग से उछल कूद करते देखते हैं। तब कितनो प्रसन्नता मन में अनुभव करते हैं। परन्तु बच्चे को सदा रोनो सूरत बनाए, किताबों में भुके बैठाए रखना ही आपको प्रिय मालूम होता है।

क्या वास्तव में पुस्तक और स्कूल ऐसे महत्व की चीजें हैं जिन पर भोले भाले बच्चों की प्रसक्तता, श्रानन्दः भौर स्वास्थ्य निज्ञावर किया जा सकता है। क्या श्रापको

इस तरह उदास, दुर्बल और चिन्ताग्रस्त बच्चों को देखकर करूका नहीं होती है?

अगर बवान होने पर आपका पुत्र बहुत पद लिख गया, परन्तु तन्दुरुस्ती खो दी, तब क्या सम्भव है, िक वह अपने जीवन में सुखी हो सकेगा ? श्राज चारों तरफ़ काखों युवक, जो इन गुलाम रकूलों की टकसाल के बिख-कुल खोटे ऐसे सिक्के हें जो बिना बट्टा दिये चल ही नहीं सकते, हमारे सामने हैं। हम इन्हें देखकर कहते हैं कि इन पद पत्थरों को तैयार करके हमने कौम को, नस्ल को मिट्टी में मिला। दिया।

क्या श्राप श्रव से इज़ारों वर्ष पूर्व के गुरुकुकों की पांचत्र स्मृति को मन में धारण करेंगे? जिनका उल्लेख इम श्रन्यत्र कर श्राये हैं। जहाँ राजवुमार श्रीर द्दिद पुत्र एक श्रासन पर, एक ही गुरु के सम्मुख बैठकर, स्वच्छंद वायु में, बृच के नीचे, परम गहन, श्रासमलव का मनन करते थे। जहाँ कृष्ण जैसे जगतमान्य पुरुष्णित्तम से दरिद्र सुदामा ने मैत्री लाभ की थी। जहाँ जैमिनी श्रीर पाणिनी का निर्माण हुश्रा। जहाँ शुकदेवजी श्रीर श्रष्टावक जैसे महाज्ञानियों का निर्माण हुश्रा, जिन गुरुकुकों के स्तम्भ रूप व्यास, वशिष्ठ श्रीर कपिल जैसे

\$

महा तपोनिष्ठ महाप्राया पुरुष थे। जिन्होंने जगत् से परे भी कुछ जान किया था जो सदैव ग्रगोचर द्रव्यों को देखते थे। जिनके जिए कुछ भी दुर्जभ न था।

वे भारत के बच्चे, जो इन गुरुकुल की छुद्र छाया में बैठ कर अपना भविष्य निर्माण करते थे। आज १४), २०) रु॰ के वेतन भोगी, अपद, अनाड़ी, क्रूर और तन मन से मैले मास्टरों के बेंत के भय से अच्छाभ्यास करते हैं। इाय भारत की तक़दीर ?

संसार भर के स्कूलों में जाकर देखिये, कि वहाँ बच्चों को कैसी सुन्दर रीति से, कैसे मनोरंजक ढंग से, कैसे प्रेम, भादर श्रीर सरलता से पढ़ाया जाता है कि सुनकर हैरानी होती है।

बच्चों का घर में जी नहीं जगता, वे दौड़कर स्कूल जाते, धौर बहुत खुश रहते हैं। श्रध्यापक को वे मन से प्यार करते हैं। वे बच्चे ध्रपने खिलते हुए मस्तिष्क से शीघ्र ही संसार के सिर पर राज्य करते हैं।

मानव समाज का उत्कर्ष और विकास न देवल धन, बल और योग्यता की घुड़दौड़ में बाजी मारने का है। प्रस्युत् उसे मौलिकता और आत्म बलयुक्त बनाना भी आव-रयक है। और वह तभी हो सकता है कि उसका शरीर पूर्ण स्वस्थ और आत्मा पूर्ण शिक्ति हो।

ऋध्याय-नवाँ

व्यायाम ।

व्यायाम करने से शारीर सुडील और स्थिर होता है। श्रद्ध थक जाने से फालतू कामचेष्टा नष्ट हो जाती है—नींद श्रद्ध श्राती है—मन स्थिर रहता है। भुक्त श्राहार का ठीक र परिपाचन होता है। श्राजस्य दूर होता है बल और उत्साह की वृद्धि होती है। परिश्रम, थकान, प्यास, गर्मी सर्दी श्रादि सहने की शक्ति उत्पन्न होती है, हन्द्रियाँ वशीभृत हो जाती हैं, ब्यायाम करने वालों को कभी कठिनाह्यों में घबराना नहीं पड़ता। बृद्धावस्था उनके पास नहीं फटकती। जो पुरुष श्रवस्था, रूप और गुणों से हीन भी हैं उन्हें भी व्यायाम सुन्दर बना देता है। व्यायाम

करने वाले यदि कभी कचा पका - या उल्टा सीधा भी भोजन कर लेते हैं तो उसे भी पचा जाते हैं। उन्हें कभी श्रजीर्ण या दस्त की अथवा कब्जी की शिकायत नहीं रहती। गहरी नींद भाती है स्वम पास नहीं फटवते। बग्धी मोटरों में खिचडने वाले. सदैव घत मीठा श्रादि तरमाख उडाने वाले. अभीर मोटे और मेदस्वी हो कर वेडौल हो जाते हैं। दिमाग़ी मेहनत करनेवाले वकील. बैरिस्टर, जज. ग्रन्थ-निर्माता, श्रखबारों के सम्पादक श्रादि मन्दाग्नि-चय और निद्रा नाश में फंस कर दुनिया से जल्दी ही चल बसते है। व्यायाम से मन की चंचलता नष्ट हो कर और शरीर थक कर व्यभिचार की फालत इच्छा नष्ट होती है--श्रीर व्यायाम के अभ्यासी मनुष्य के श्रङ्ग प्रत्यङ्ग इतने हुई हो जाते हैं कि उसे एक बार के ही विषय भीग में इतनी तमि हो जाती है कि फिर उसे बहुत समय तक उस प्रकार की श्रभिलाषा नहीं होती।

व्यायाम की एक मात्रा— श्राधा वस रख कर व्यायाम करना चाहिये। अब श्वास ज़ोर २ से श्राने लगे, शरीर थक जाय श्रीर मस्तक पर पसीना श्राजाय तब ही व्यायाम बन्द कर देना उचित है।

करने से श्वास, कास, सय, ध्यास, श्रहित, रक्त पित्त, श्रम, ज्वरादि रोग पैदा हो जाते हैं श्रीर शरीर सूख जाता है। इसजिये बलाद्ध से श्रागे व्यायाम कदापि नहीं करना।

व्यायाम निषेध — उपर कहे हुए रोगों में श्रीर भोजन करने के पीछे एवं रात्रि में व्यायाम नहीं करना चाहिये।

न्यायाम का प्रारम्भ न्यायाम का प्रारम्भ धीरे र करना चाहिये। पहले दो चार हमते वे थकेंगे। हर वक्त हाथ पैरों और पसिलयों में दर्द रहेगा। परन्तु दो सप्ताह या एक सप्ताह बराबर अभ्यास करने से फिर थकावट न होगी। न पसिलयों या हाथ पैर दूखेंगे। व्यायाम करने के पाँच सात मिनिट बाद ही शरीर ऐसा हो जाया करेगा, मानो कोई परिश्रम का काम ही नहीं किया है। फिर कोई बड़े परिश्रम का काम करने पर कभी भारी थकान भी न चढ़ेगी।

विख्यात प्रोफ्रेसर राममूर्त्ति ने व्यायाम सम्बन्धी कुछ महत्वपूर्ण उपदेश लिखे हैं। जो इस प्रकार है -

- १--- व्यायाम का श्रभ्यास धीरे २ करना, एक दम बहुत श्रभ्यास नहीं करना चाहिये।
- २ जो ज्यायाम किया जाय-वह बहुत धीरे २ अङ्गों पर पूरा २ ज़ोर डाल कर करना चाहिये। जल्दी के धौर भटके के साथ य्यायाम करने से कोई लाभ नहीं होता।

3-व्यायाम को प्राचायाम के साथ मिलाकर करना चाहिये. इस प्रकार से श्वास को बाहर निकालो (श्वास नाक से ही छोड़ना और भरना चाहिये) और बाहर रोको. फिर धीरे २ खुब श्वास रोको । छाती-फेफड़े में श्वास भर कर तब व्यायाम करो। धीरे २ एक क्रिया करो श्रौर उसको एक ही श्वास में पूरी करने को कोशिश करो। यदि श्वास टूट जाय तो कोई हर्ज नहीं। फिर भर लेना चाहिये। श्रीर धीरे २ किया करनी चाहिये। किया समाप्त होने पर श्वास छोड़ देना चाहिये - श्रीर फिर भर लेना चाहिये। और फिर किया करनी चाहिये। इस प्रकार व्या-याम करने से सीना चौड़ा होता है। फेफड़े-दिल, पसलियाँ मज़बूत होतीं हैं। दम बढ़ता है। जल्दी थकान नहीं श्राती। श्रीर बल बढ़ता है। यथार्थ में बल वायु में ही है। वायु को बश में करने से ही मनुष्य बलवान हो सकता है। प्राणायाम के साथ मिला कर व्यायाम करने से धीरे र वाय वश में होने लगती है।

४ व्यायाम करते समय ग्रपना मन सब श्रोर से हटा कर व्यायाम में ही लगाना चाहिये। श्रीर यह धारणा मन में रखनी चाहिये कि हम इस किया से बरावर बलवान् हो रहे हैं। श्रीर भीमसेन वा हनुमान के समान बलवान् हो लावेंगे। इन पुरुषोंके चित्र भी सामने रखना उत्तम है।

४ - व्यायाम करने के पीछे धीरे २ टहल कर पाँच सात मिनिट सुस्ताना चाहिये। उस के पीछे ठंडाई पीनी चाहिये। ठंडाई बादाम १०, धनिया १ माशा, काली मिर्च र दाने; इलायची छोडी दो। ये सब शाम को थोड़े जल में भिगो कर रख देनो चाहिए। व्यायाम के पीछे ठएडाई तैयार करनी चाहिये। बादाम के छिलके उतार कर श्रीर सब चीज़ों को एक साथ सिल पत्थर से बारीक पीस कर थोडे से पानी में घोल कर छान लोना चाहिये। छानने का वस्त्र भिन-भिना होना चाहिये। फिर थोडी मिश्री मिला कर पी लेना चाहिये। इस ठरडाई से कसरत के पीछे होने वाली ख़रकी दर हो कर तरावट श्रा जाती है। मौसम ठएडा हो तो थोड़ी सोंठ मिला लेना चाहिये। श्रीर ज़रा गुनगुना करके पी जाना चाहिये। धारे २ दो दो बादाम बढाने चाहिये और एक सेर तक बढा देने चाहिये। उसी हिसाव से श्रन्य चीज़ें भी बढ़ा लेनो चाहिये।

६—व्यायाम करने वालों को मांस नहीं खाना चाहिये। इससे सुस्ती, क्रूरता, तथा श्रनेक श्रवगुर्णों की बृद्धि होती है।

तेल मालिश—बहुधा पहलवानों को कहते सुना है कि "सौ लड़न्त श्रीर एक मलन्त" तेल मालिस करने से

शरीर की कान्ति पुष्टि होती श्रीर दृदता बदती है श्रीर बज वीर्य की श्रस्याधिक वृद्धि होतो हैं। रोम कूप खुज जाते हैं। उनके रास्ते तैस्न भीतर घुस जाता है। सुश्रुत में लिखा है-

जलसिक्तस्याववर्द्धन्ते यथा मृतिकुरास्तरोः। तथा धातुविवृद्धिस्तु स्नेहसिकस्य जायते।

"जैसे बृह्य की जड़ में जल देने से डाली पत्ते श्रीर श्रंकुर बदते हैं, इसी प्रकार तैल मर्दन करने से शरीर के भागु बदते हैं।"

तैल मालिश सारे शरीर में श्रच्छी तरह करनी चाहिये। विशेष कर सिर में। हाथों में, छाती, पसली, रीड़ की हड़ी श्रौर त्रिकस्थान में। पैरों में श्रौर पैर के तलुश्रों में खूब मालिश की जाय। शिर में तैल मालिश करने से दिमारा पुष्ट होता है। श्रौर पैरों में तैल मालिश करने से मेश्रों में ज्योति बढ़ती है। छाती श्रौर पसलियों में मालिश करने से सेता फेफड़ा झौर दिल मज़बुत होते हैं। पृष्ठ वंश श्रौर त्रिक में मालिश करने से बुढ़ापा जल्दी नहीं श्राता।

मालिश करने को तिल या सरसों का तेल ही श्रच्छा है। तिल का तेल सर्वोत्तम है। परन्तु शतावरी तैल मालिश करने संबहुत पुष्टि श्रीर कान्ति की बृद्धि होती है। शता-बरी तैल का नुसखा यह है।

शतावार । खरेटी की जड़ । गंगेरन । शालपर्णी । पृष्टपर्णी । अरंड की जड़ । असगन्ध । गोखरू । बेल की जड़ कांस की जड़ । पियावांसा । ये ११ औषध ६ ।६ तोला । जी कुट करे । इन्हें दो सेर पानी में पकावे । जब तीन पाव पानी रहे, तब उतार कर छान ले । इस में १ सेर तिल का तेल । १ सेर गाय का दूध । १ सेर सतावर का रस । १ सेर पानी, सब मिला कर एक कढ़ाई में भरे-इसमें नीचे लिखी औषधी की लुगदी पानी से पीस कर मिलादे ।

सतावर । देवदारू । जटामासी । तगर । सफैद चन्दन । सोंफ । खरेटी की जड़ । कूट । इलायची छोटी । कमल । बाराही कन्द । मुलहटी । श्रसगन्ध । प्रत्येक एक-एक तोला । इन सब को मन्दाग्नि सं पकावे । जब तेल माश्र बच रहे — उतार कर छान ले । यही शतावरी तैल है । बहुत ही उत्तम है ।

अध्याय दसवाँ

बाल विवाह।

बालविवाह की निकृष्ट श्रीर षृणित प्रथा ने जिसना बहा श्राघात हिन्दूजाित को पहुँचाया है उतना किसी ने नहीं पहुँचाया। ब्रह्मचर्य की प्रशस्त्र रीति का मुलोच्छेदन करने वाला, सबसे प्रबल श्रीर तेज कुल्हाहा बाल विवाह है। मनुष्य जाित के कट्टर शत्रु, तन्दुरुस्ती के भयानक विष सदाचार के प्रबल विरोधी, बालविवाह ने जब से संसार की मुकृट हिन्दू जाित में श्रपना प्रवेश किया है, तभी से उसे चौपट कर दिया है, मुकृट की मिण मुकृट से गिरकर पैरों से कुचली जाने लगी, श्रीर सब से बड़े शोक की बात तो यह है कि इस प्लेग श्रीर हैंज़े से भी भयानक रोग को श्रभागे

हिन्दू सदा ग्रानन्द से स्वागत करते रहे हैं। इसके भयंकर परिणामों को लिखते सचमुच लेखनी थरांती है। रोमाञ्च हो ग्राते हैं, इमारी सारी इजत, तमाम ग्रावरू, सारा बढ़प्पन ग्रीर हमारे सिर की पगड़ी तक इस डायन प्रथा ने पृल में मिला दी है, कहाँ तक इम रोवें, इसके परिणाम को देख कर सारे शरीर में इज़ारों विच्छू काटने जैसा दर्द होता है। १४ वर्ष के बच्चे ग्रीर १० ग्यारह वर्ष की बालिकायें जिस देश में मा बाप वनकर इस महान् पद को कर्लिकत करे, उस देश का क्यों न सत्यानाश जाय ? पकने से पहले ही जिसके खेत को कुचल कर वर्षाद कर दिया गया हो, उस कम्बद्धत किसान की बदनसीबी का भीकुछ ठिकाना है ? जिस के फूल खिलने से प्रथम ही मसल कर मोरियों में फैक दिये गये हैं। उसके दुर्भाग्य पर शत्रु को भी दया ग्रावेगी।

आपने क्या देखा नहीं हैं, छोटे २ बच्चे दूलहा दूलिहन बनकर विवाह करने चले हैं। बच्चा श्रभी घोती पहनना नहीं सीखा, लड़की गेकर रोटी माँगती है श्रीर वे हसी नादानी की श्रवस्था में गृहस्थ की ज़बरदस्त गाड़ी में श्रपने ज़ाजिम मा बागों हारा जोत दिये जाते हैं। बड़े श्रभागे ही बच्चों को ऐसे ज़ाजिम मा बाप मिलते हैं, जिनकी वह खुशी

उस कसाई की खुशी से किसी प्रकार कम नहीं हैं, जो अपने सामने तहपते जानवर को देखकर होती हैं।

विवाह की बात दूर रहे, उनके संस्कार में भी यही विषेत्री स्प्रिट भरी जाती है, क्यों बेटा कैसी बहु लावेगा। गोरी या काली। बेटा यों ही तोतली बाणी से कह देता है 'ताती, मा बाप ही--ही करके हँस देते हैं'. बच्चा भी ताली बजा कर हँस २ कर बारम्बार ताती २ कह कर पुका-रता है। बच्चा हँसी को समभता है हँसी की वजह को नहीं। जिस बात को सनकर सभी हँसते हैं - उसा बात को बार २ कहना उसे श्रच्छा लगता है। जन्म से ही प्रभाव कुसंस्कार का रहता है, विवाह होते ही रगड़ने मात्र की देर है-रगड़ा लगा, फक से सारी शक्ति भस्म हो गई। जीवन की ब्राशाएँ धूल में मिल गईं। न तो उसे संसार का तज़र्वा है भ्रोर न उसके प्रवत प्रवाह में ठहरने की शक्ति ही है-- श्रीर नहीं उसे भविष्य का ज्ञान ही है। हो कहाँ से ? उसे ऐसा होने का अवसर ही नहीं दिया गया ? वह अनाथ गरीब संसार की तपती भट्टी में भस्म डोने की भोंक दिया जाता है। शोक !!

इसके भयंकर परियाम को कौन नहीं जानता? सारा भारत इस बाग में तप रहा है। तमाम समुदाय में

यह भाग भद्दक रही है—दिन रात मौन तेल की चिन्ता में यह श्रमूल्य जीवन जर्जर हो रहा है। हमारा जीवन जो विषमय हो रहा है, सदा मौत की भोख जो हम माँगते हैं—इसका कारण क्या है? यह दुःख कहाँ से हमारे जपर श्राया हैं-इस सबका उत्तर है बाल विवाह।

लंडके लंडकियों के बाल विवाह, विषय भीग की श्रधिकता, श्रीर व्यभिचार की प्रवृति से मनुष्य में वीर्य की कमी और निर्वेखता आगई है। जिससे एक तो गर्म स्थिति हो कम होतो है। दूसरे गर्भ रह भी जाय तो ची ख हो जाते हैं, श्रथवा सन्तान होकर तुरन्त मर जाती है। जो भाग्य से बच भी रहे तो यह दशा है कि श्रस्यन्त निर्वेख. निस्तेज, स्वर फटे बाँस के जैसा। सूरत बन्दर की, प्रमेह की बहुतावत, स्मर्ण शक्ति का नाश, कम श्रकत, श्रांखों के श्रन्धे, चश्मों के ख़रीदार, सदा के रोगी, वैद्य डाक्टरों के यार, चुपड़ी रोटी खावें तो खट्टी डकार, पाव भर दूध पीवें तो दस्तों की भरमार, किसी को बादी का विकार, मुटापे का भार, थोंद के भार से चलना दुश्वार, पेट लटकना, घुटने पकड़ कर उठना, बालने में हाँपना, धमकी से काँपना, किसी का पेट पटक रहा है-कमर कमान हो रही है--गालों में गढ़े. श्रांख भीतर बैठी कोस भर मार्ग चलना महाभारत

की लड़ाई, नीचे से कोठे पर चढ़ना पहाड़ की चढ़ाई है। यह जवानी की दशा है? यह हमारी खिलती फुलवारी का नमूना है। बुढ़ापे की दशा को श्राप समक्त ही लं-बुढ़ापे का स्थापा श्रव जवानी में ही अुगत जाता है—श्रव ३४ वर्ष का पुरुष बढ़ा कहाता है। श्राप ही कहिये, ऐसे स्त्री पुरुषों के वंश कैसे चलेंगे? श्रीर चलेंगे तो कै दिन जीवेंगे? मिश्रों! हसी से पीढ़ी दर पोढ़ी सन्तान कम होती जा रही है।

वचपन हो से काम कजा को भइका कर जिनकी मनो मृतियाँ गन्दी कर दी गईं हैं—वे श्रपने बच्चों के रुधिर में इस विषेते प्रभाव को उतार देते हैं। जिससे उनकी सन्तान बचपन ही से विषयी, लग्पट, श्रीर श्रधर्मी हो जाती हैं। उनकी जड़ में उत्पन्न होते ही कीड़ा लग जाता हैं— और जब वे फलते, फ़्लते, श्रपनी सुगन्ध को संसार में फैजाते, श्रपने प्रताप से भूमण्डल को कँपाते, उससे प्रथम ही सुर्का कर संसार से उठ जाते हैं। उनकी हार्दिक, स्नायविक, मानसिक दुर्वलता उन्हें श्रधम श्रीर नीच ही बनाये रखती हैं।

हमारे पुत्र के शरीर में उत्साह नहीं है, बल नहीं है, साहस, बीरता नहीं है। और दुनियाँ के किसी भी फलको

भोगने में जमता नहीं है। ये सब संकट बाल विवाह द्वारा ब्रह्मचर्य का नाश करके ही क्या हमने मोल नहीं ख़रीदे हैं।

हमारी नस्त बर्वाद हो गई, जिन्दगी घट गई, तन्दु-रूस्ती मिटी में मिल गई। रह गई हड्डी की ठठरी, रह गई अधमरी देह, इसका क्या कारण है ? वही तुन्हारे ज़ाकिम माँ वापों का प्यार । और वही बहू देखने की जाकसा !!!

पन्द्रह सोलह वर्ष की उम्र हुई है बच्चा स्कूल में उँचे दें में पहुँचा है, दिमाग़ी मिहनत का ज़ोर है—उधर गौना हो कर भी श्रा गया। बच्चे की जान पर बलैया लेने वाली उसकी मा श्राँचल पसार कर, दाँत निकाल कर गिड़ गिदा कर, कहती है। हे विश्वनाथ बाबा! हे काली भवानी? हे चौराहे की चामुखडा श्रव तो पोते का मुँह दिखा दे? यही नहीं, उसकी तैयारी भी होने लगीं। दोनों बोड़ी एक कोठरी के श्रन्दर बन्द करदी गई-इधर दिमागी मिहनत, पढ़ने का ज़ोर, उधर खाने की तंगी, घी दूध का नाम नहीं—उधर पोते होने की जालसा। इन सब में बच्चा पिस मरा। हाड़ की ठठरी रह गई। मा कहती है शबी देखो, बच्चे को क्या हो गया है? पीला पड़ता जाता

है। किसी सैरयद वैरयद का छाया तो नहीं पड़ गया है ? किसी शाह साहेब को ही दिखलाओ ?

बाप देवता बोल उठे. पढ़ने में बड़ी मिहनत है । श्रव इम स्कूल न भेजेंगे। बहुत पढ़ गया है, इतना तो इमारे घर में कोई पढ़ा भी नहीं था? बस हो गया-तालीम का द्वार बन्द हो गया और सरवानाश का हार सोलह आना खुल गया. रोग भी बढ़ता ही गया । अन्त में शीघ्र ही राम २ बुख गई। जब कली खिलने के दिन आये थे जब उसकी सुगन्ध फैलनो थी - उससे प्रथम ही वह कुचल द।ला-मसल डाला गया। सो भी प्यार करने वालों के हाथों से, उस पर न्योछावर होने वालों के हाथों से । तब वही माँ बाप छाती पीट कर रोते हैं। हाय बेटा । अन्धों की लाठी छिन गई-तब उनका रोना आकाश फाइता है। वे श्रभागे नहीं समझते कि उन्हीं के नापाक हाथ उनके मासूम और बेगुनाह बच्चों के खुन से रंगे गये हैं, उन्हों ने अपने पैर में कल्हाड़ी मारी है - कोई शक्ति है ? जो उन के दामन से उस खून के दारा को छुदा सके ।

भाइयों तुन्हें अपनी दथा का बढ़ा अभिमान है, पर सच तो यह है कि तुन्हारी बराबर संसार में कोई क्रसाई और करूर नहीं है। छोटे २ भुनगे, चोंटी, कीड़े, मकोड़ों,

कन्वे, कुत्तों भादि पशुस्रों के लिए तुम्हारे पास दया का भरहार भर रहा है। पर अपनी सन्तानों पर यह जलम कि उनकी सारी आशाश्रों को अचल कर, उनकी उठती जवानी पर कुछ भी तरस न खाकर, उन्हें हाय ऐसी बरी मौत मार रहे हो कि क्रसाई गाय को भी न मारेगा। कसाई एक ही हाथ में साफ्र कर देता है, वह बेचारी दुख से इट जाती है। पर तुम तो एक वर्ष की दुध पीती कन्याओं को विधवा बनाकर पापों की नदी बहा रहे हो। उन्हें रोम २ में विष पैदा करने वाले दुःख सागर में धकेल कर जीते जी दुःखान्नि में भून रहे हो। उनके तदपने को देखकर जो पुरुष की उत्पत्ति समक रहे हो-इतना होने पर भी तुम्हारा परथर का कलेजा नहीं पिञ्चलता। क्रमहारी छाती पर साँप नहीं लोट जाता ? ये जो 3 करोड़ विभवाएँ तुम्हारी छाती पर मूँग दल रही हैं-कोई चुपचाप सर्व श्राह भर कर भारत को रसातल पहुंचा रही है। कोई धींवर, क्रसाई के साथ मुँह काला करके हिन्द वंश की नाक कटा रही हैं, फिर भी बो तुम ऋषि सन्तान कहबाने की इच्छा रखते हो, श्रय भी जो तुम्हें श्रपने रक्त और वंश का अभिमान है तो शर्म है और लाख २ शर्म है।

ऐसा कीन सा कठोर हृदय मनुष्य होगा जो ३ करोइ

विधवाओं को देख कर दहल न उठे। यह देश पर श्राई हुई श्रापदाश्रों का पूर्व रूप है। जर्मनी में ६८ लाख विवाहिता स्त्रियाँ हैं, इंग्लैंड में २॥ करोड़। परन्तु भारतमें ३ करोड़ विधवाएँ ? जिनमें बहुत सी दूध पीती बच्चियाँ भी हैं।

प्राचीन काल के विवाह के नियम अति उच थे।

विवाह का जैसा गम्भीर महत्व पूर्ण वर्णन वैदिक पद्धति में है वैसा संसार की किसी मज़हब या जाति में नहीं है। वेदों में पुरुष को "अ(जन्तोऽप्नयः" प्रधांत ग्रागि के समान प्रकाशित, ऊपर जाने वाला, उन्नतिशोज,उष्ण श्रीर तेजवान् बताया है श्रीर स्त्री को ''विरश्मयः' प्रकाश को सो जाने वाली कहा है। देखिये —

यो वः शिवतमोरम स्तस्य भाजयतेह नः उशतीरिवमातरः।
।।यजुर्वेद ११-५२।

इसका श्रभिप्राय यह है कि दोनों स्त्री पुरुष एक दूसरे के सहायक होकर एक दूसरे के स्वभाव श्रीर ध्राचरणों का ध्रनुकरण करें श्रीर परस्पर सद्गुणों को धारण करें और मैत्री भाव से धायु पर्यन्त रहें।

सिनी वास्ति प्रथुष्ट के या देवामसि स्वस्य जुहस्य हव्य माहृतं प्रसां देवि दिष्टिद्विनः। ।।यजु० ३४-१०॥

हे देवि ! तुम ब्रह्मचारिग्णी और विदुषी बन कर उत्तम विद्वान् पति को चुनो और आनन्द पूर्वक गृहस्थाश्रम में प्रवेश करके उत्तम प्रजा उत्पन्न करो।

इसी प्रकार वेदों में विवाह के सम्बन्ध में अनेक आदेश मिलते हैं कि विवाह का आदर्श दो समान आस्माओं का संगठित करना है, जिससे समाज सेवा में सुविधा हो।

यह विवाह युवा अवस्था में ही होना चाहिए। जैसे -तमस्मेरा युवतयो युवानं मर्म्यु ज्यमानाः परियन्स्यापः। स शुक्रेभ: शिक्कभो रेवदस्मे दीदायानिक्मो घृतनिर्धिगप्सु।

॥ ऋ० म० २ : स० ३४ । म० ४।

श्रधांत् ब्रह्मचारिणी श्रीर विदुषी ख्रियाँ २० वा २४ वें वर्ष वाली-जैसे जल वा नदी समुद्र में प्राप्त होती हैं— वैसे हमको प्राप्त होने वाली युवा पति को प्राप्त होती हैं— वह ब्रह्मचारी शुद्ध गुण श्रीर वीर्यवान् हमारे मध्य में शुभ कर्म श्रीर तुल्य स्त्री को प्राप्त होवे जैसे श्राकाश में सल्ल को शोधने हारा विद्युत श्राग्त है।

वधू रियं पति मिच्छुन्येति य ई वहाते महिधी मिपिराम् । श्रास्य श्रवस्याद्रथः श्रा च घोषत्पुरू सहस्त्रा परिवर्तयाते ।। ।।ऋ॰ म॰ ४। स॰ ३७। म॰ ३।

श्रथीत् हे मनुष्यों ! को गुण्यवती परीचित वर की इच्छा करने हारी प्रिया की को प्राप्त होता है—श्रीर को वधू स्वामी की इच्छावाकी स्व सदश प्रिय पति को प्राप्त होती है। वे पुरुष की इस गुहाश्रम में श्रस्थनत विद्या धन धान्य युक्त हों। श्रीर वे दोनों रथ के समान प्रिय वचन बोलें, श्रीर वे इज़ारों श्रम कार्यों को सिद्ध करते हैं। पाठक देखें-कैसा उच्च श्राशय है। विवाह काल की प्रतिक्राओं पर भी ध्यान देने से ऐसा ही महान् श्राशय उदित होता है।

श्रों गुम्णामि ते सौभगस्वाय हस्तं मया पत्या जरदृष्टिर्यथासः। भगो श्रयंमा सद्दांता पुरन्धिर्मत्वा दुर्गाहृपस्याय देवाः॥

हे वरानने ! जैसे में ऐश्वर्य सुसन्तानादि सौभाग्य बृद्धि की बढ़ती के लिए तेरे हाथ को प्रहण करता हूँ — तृ सुभ पति के साथ बुढ़ापे तक सुख से रह । तथा है वीर ! मैं सौभाग्य की वृद्धि के लिए श्रापका हस्त ब्रह्मण करती हूँ । आप मेरे साथ वृद्धावस्था तक प्रसन्न तथा श्रमुकूल रहिये । आप और हम दोनों परस्पर पति-पत्नि भाव से प्राप्त हुए, सकत्न ऐश्वर्य युक्त, न्यायकारी, सब जगत की उत्पत्ति कर्ता, नाना जगत रचिता परमाथमा और ये सब सजन

विद्वान् गण गृहाश्रम के लिये श्रापको मुस्ते देते हैं। श्राज से श्राप मेरे श्रीर मैं श्रापके हाथ विक चुके। श्रों श्रहं विष्यामि मयि रूपमस्या वेददित्पश्यमनस्य कुलायम्। म स्तेयमद्भि मनसोदमुच्चेस्वयं श्रन्थानो वरुणस्य पाशान्॥

जैसे मन से कुल की वृद्धि को देखता हुआ मैं तेरे रूप को प्रेम से प्राप्त और ज्याप्त होता हूँ। वैसे तू भी सुम में होकर अनुकूल व्यवहार कर। जैसे मैं मन से भी इस तुम बधू के साथ चोरी को छोड़ता हूँ, और किसी उत्तम पदार्थ का चोरी से भीग न कहँगा। स्वयं थककर भी व्यवहार में विष्न स्वरूप दुर्व्यसन के बन्धनों को दूर कहँगा वैसे तू भी किया कर।

श्चों-समजन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ । सममातरिश्वा संधाता समुदेष्ट्री दधातु नौ ॥

श्रर्थात् - हम दोनों, इन विद्वानों के सामने प्रतिज्ञा करते हैं कि हमारे हृदय दो प्रकार के जलों के समान मिल बायेंगे। जीवन के लिये जैसे प्राण वायु है, सृष्टि के लिये जैसे सृष्टिकता हैं उपदेश के जिये जैसे श्रोता हैं, वैसे ही इम पति पत्नी एक दूसरे के प्रिय होंगे।

इन सभी प्रमाणों से विवाह की उत्कृष्टता प्रतीत होती है।

इस सुन्दर परिपाटी को खोप करने के लियेस्मृति चादि धनेक ग्रन्थों की सृष्टि की गई। इन सभी ने समाज का गिराने की भरपूर चेश की।

सबसे प्रथम वौधायन ने विवाह की मर्यादा को शिथिल किया। मनु ने लिखा हैं कि रजस्वला होने के ३ वर्ष वाद तक कन्या माता पिता की प्रतीचा करे। पीछे वह स्वयं विवाह करने में स्वतन्त्र है। पर इतनी शर्त बढ़ा दी कि कन्या 'निग्नका' तथा ब्रह्मचारिणी हो। बौधायन ने 'निग्नका' का अर्थ सहवास योग्य १६ वर्ष की, किया है। सस्यवत और शैनिक ने भी यही अर्थ किया।

सातवीं सदी में श्रमरकोष में निनका का श्रर्थ—
"श्रनागतार्तवा" किया गया । श्रर्थात् जिसका रजोदर्शन न हुआ हो । यानी १२ वर्ष की कन्या को श्रिष्ठकारी
विवाह का बनाया।

गोस्वामी रघुनन्दन जी ने इसका अर्थ १२ से भी कम सिद्ध किया।

दूसरे स्मृतिकारों ने लिखा—"कन्या के स्तन उक्कत होने से प्रथम ही विवाह करना—या रजस्वला होने से प्रथम ही रजस्वला होने पर विवाह किया जावे तो विवाह दान देने वाला धौर लेने वाला दोनों नर्क में पहते हैं।

दोनों कुल के गुरुजन विष्ठा के कीड़े बनते हैं। अतएव बाल्यावस्था ही में विवाह करना चाहिये।

श्राह्मरस स्मृति में खिखा है कि "यदि पिता अपनी कम्या को १२ वर्ष हो जाने पर विवाह नहीं करता तो वह अपनी कन्या के रज को पीता है। यही बात स्पष्ट यम-स्मृति में लिखी है।

राजमार्तगढ में जिखा है कि 'पिता माता और वड़ा भाई यदि कन्या को रजस्वला होते देख ले तो नर्क को जाता है। वह कन्या दूपित हो जाती है। यदि कोई ब्राह्मग उसके साथ विवाह करे तो वह पतित हो जातो है। द्विजों को उसे श्रपनी पंक्ति से निकाल देना चाहिये। शीघ्रतोध में लिखा है —

श्रष्टवर्षा भवेद्गौरी नववर्षाच शेहिगी। दृशवर्षा भवेरकन्या अतकर्ध्वं रजस्वला ॥

श्राठ वर्ष की कन्या गौरो, नौ वर्ष की रोहिणी श्रौर इश वर्ष की कन्या होती है। इससे बाद रजस्वला संज्ञा होती है। उसे देखकर ही माता पिता भाई को नर्क हो जाताहै। गोस्वामी रघुनन्दन जी ने भी १० वर्ष की कन्या का विवाह करने की बात जिस्ती है।

बृहस्पति संहिता में ३० वर्ष के पुरुष की कन्या से विवाह करने का आदेश हैं:

दत्तस्मृति में विका है-

उद्विहेदष्टवर्षमेव धर्मा न हीयते ।

श्रर्थात् श्राठ वर्ष की कन्या का विवाह करने से धर्म नहीं जाता।

श्रम्त में गिरते २ बंगाल के गोस्वामी रघुनन्दन जी श्रपनी स्मृति में लिखते हैं कि विवाह का उत्तम समय ७ वर्ष है वह गर्भ की तिथि से गिनना चाहिए। इस प्रकार ६ वर्ष श्रीर ३ मास ही विवाह का काल निश्चय हुआ।

वही महा पुरुष रघुनन्दन जी फिर जिखते हैं— अयुग्मे दुर्भगा नारी युग्मेतु विधवा भवेत्।

यदि २ पर विभाग न होने वाले संख्या के वर्षी में विवाह होगा, तो वह मन्द भाग्या होगी श्रीर इसके विपरीत वर्षों में विधवा होगी। तब न युग्म न श्रयुग्य में विवाह करे। दुख मास की कन्या का ही विवाह करदे।

इस प्रकार से इन मनुष्य के कल्याण के परम शत्रुधों ने स्वच्छन्दता से घटते २ कुछ मास की कन्या का विवाह ही धर्म सम्मत बताया। सच पूछो तो ये ही स्मृतिकार भारत की अधोगति के उत्तर दाता हैं। कहाँ तो वैदिक

समय का २४, ३२, ४८ वर्ष का विवाह काल ? और कहाँ १२, १०, ८, ६ और कुछ मास ही की आयु रह गई ? हाय ! हमारी मातृ शक्ति को इन बुद्धि भृष्ट स्मृति कारों ने यों पैरों से कुचल डाला।

श्रव यह बात विचारने की है कि इस बाल विवाह का बुरा रिवाज़ क्यों देश में फैबा। प्रकृति का नियम है कि बिना जरूरत कोई वस्तु पैदा नहीं होती। श्राज कल के नये शोध के विद्वानों की राय है कि भारत गर्म देश है और वहाँ कन्याएँ बहुत जल्द रजस्वला हो जाती हैं। यहाँ तक कि बङ्गाल में ३२ वर्ष की माताएँ सबूत में पेश की जाती हैं। भारत श्रीर संयुक्त प्रान्त में १० वर्ष की लड़-कियों को गर्भ रह गया है श्रीर कह्यों ने ठीक ही समय पर बचा उत्पन्न किये श्रीर दोनों नीरोग तथा जोते जागते रहे हैं।

डाक्टर चक्रवर्ती का कथन है कि वे बाल्यावस्था से एक ऐसी कन्या को जानने हैं, जिसने दस वर्ष की श्रवस्था में बच्चा जना।

⁺⁻Medical Juirsprudence for india by R. Chevers. Page 673.

ड।क्टर वेली—कक्षकत्ते के एक रईस की 11 वर्ष ४ मास की लड़की को खड़का पैदा हुआ।

डाक्टर श्रीन—ढाका में मैंने १ लड़की को १२ वर्ष की श्रायु में गर्भवती पाया। बच्चा होती वार लड़की मर गई।

डाक्टर कन्हेंयालाल दे—बङ्गाल में श्राम तौर पर १२ वर्ष की लड़कियाँ गर्भवती पाई जाती हैं।

इन प्रमाणों से पता लगता है कि देश में बालमाताओं को कभी नहीं है। श्रव यह देखना है कि श्रन्य देशों में क्या हाल है। भारत अन्या देश होने से जल्द कुमारियाँ ऋतुमती होती हैं यह प्रकृति का सर्वत्र ही एक नियम है।

ग्रायुर्वेद का वाक्य है-

'द्वादशात् वस्तरादूर्धमापञ्चाशत समास्त्रियः । मासि २ भगद्वारा प्रकृत्यैवार्तवं स्जेत् ॥'

श्रधीत् १२ वर्ष से ४० वर्ष की श्रायु तक महीने २ रजसाव होता है। यह १२ से ४० तक की श्रविध ऋषियों ने जो बताई है सो किसी देश के जिए नहीं, सब देशों के जिए समान भाव से हैं, चाहे वह गर्म हो, चाहे सर्द। समस्त पृथ्वी की कन्याएं इसी श्रवस्था में रजस्वला होती हैं। इसी की पुष्टि में प्रसिद्ध ढाक्टर हाल्टिक जिखते हैं—

"So for as is known, there is no difference as to the time of the first menstruation among the different races of human beings, it is no earlier under the same circumstances in the Negroes than in the white female.

Dr. F. Holtiek.

श्चर्थात् बाँच करने पर ज्ञात हुआ है कि संसार की सब जातियों की कन्याएँ लगभग एक ही अवस्था में रज-स्वजा होती हैं। यदि अफ़ीका के हबशी की लड़की और यूरोप से ठएडे देश की गोरो लड़की एक ही तरह पाली बाँय तो दोनों एक ही साथ ऋतुमती होंगी।

×िमस्टर राबर्टसन ने खूब जाँच कर निश्चय किया है कि भूमगढ़ल के सब देशों में लड़कियाँ एक ही आधु में रज-स्वला होती हैं।

इंग्लैंड के मैनचेस्टर लाइंगइनो श्रस्पताल [Manchister lying in Hospital England] में ३४० लड़िकयों की परीचा ली गई, श्रीर वे निम्नलिखित श्रायु में रबस्वला हुईं —

XThe Origin of Life Page 303.

तादाद कन्या	कितनी श्रायु में रजस्वला हुई
१० कन्या	११ वर्षकी श्रास्युमें
۹٤ ,,	17 ,, ,,
4 ₹ "	13 ,, ,,
≂ k "	18 ,, ,,
₹७ "	1½ " "
ωξ ,,	18 ,, ,,

→ भारत में २७ मोरी खड़िकवाँ इस अवस्था में रज-स्वला हुई।

४ बार्कियाँ १२-१३ वर्ष के बीच में।

अग्रांस के राजा फ़िलिप ने इंग्लैंड की राजकुमासी को १२ वर्ष की आयु में वरा । आपकी दूसरी कुमारी का विवाह ६ वर्ष की आयु में हुआ ।

Medical Jurisprudence by R.Chevers.

⁺Dr. Fayrer Calcutta European Femel Orphan asylum.

इंग्लेंबड के राजा रिचर्ड दूसरे का विवाह फ्राँस की कुमारी "इसावेख" से हुचा तो उस समय राजकुमारी की आयु कुल म्वर्च की थी।

पुलिज़बेथ हार्डविक [Countess of Shrewsbury] का विवाह १३ वर्ष की श्रायु में हुआ।

इंग्लैंड के राजा हेनरी सप्तम के अत्यन्त निर्वत होने का यही कारण था कि उनकी माता का विवाह कुल नौ वर्ष की अवस्था में हुआ था। और जब हेनरी का जन्म हुआ तो उनकी माता [Lady Margaret] की आयु कुल दस वर्ष की थी। साउथेम्पटन के अर्ल की जहकी "आडरे" का विवाह हो चुका था, जब १४ वर्ष की अवस्था में उसकी मृत्यु हुई। एक विद्वान जिखते हैं—

"The whole Pereage might be gone through with similar results.....the disgracefully early unions."

अर्थात् इक्नलैंड के कुल उच्च कुल के लोगों की यही दशा थी कि वे अस्यन्त छोटी अवस्था में विवाह करते थे। और उस देश में भी भारत के समान छोटी अवस्था में गर्भ धारण होता था। मुसलमानों के नवी ने आयेशा से ७ वर्ष की अवस्था में विवाह किया। और जब वह आठ

वर्ष की हुई तो विषय किया। मुसलमानी क्रानून में ७ से ऊँची अवस्था की लड़की से विषय जायब है। किसी नौ या दस वर्ष की कन्या में विवाह के चिन्ह प्रकट होजाँय तो वह बाजिए समसी जाती है।

इन अनेक देश और जाति के उदाहरणों से यही सिद्ध हुआ कि भारत में लड़कियाँ छोटी अवस्था में रजस्वला होती हैं तो इसका यह अर्थ नहीं है, कि देश की जलवायु गर्म है, वरन् भूमण्डल के प्रत्येक देश वा जातियों के लिए इस बारे में एक ही नियम है। वास्तव में बाल विवाह के कारण और ही हैं और वे ये हैं—

- १ देश में श्रज्ञान श्रीर स्वार्थ का फैलना ।
- २-- स्त्रियों के अधिकारों को छीन लेना।
- ३ गुड़ियों से खेलना, उनकी शादी करना, गुड़ू -गुड़ों को एक साथ सुलाना और उनके बच्चे होने के खेल खेलना।
- ४--- बच्चों के मुख पर उनके विवाह की बातें करना, बिससे उनको यह ध्यान पैदा हो जाय कि वे श्रव समाने हो गये हैं। उन्हें वहू या दूलहा मिलोगा।
- ४—बार २ दूल्हा, सास की बात कहना, गालियाँ मी वैसी हो भद्दो देना, जिसमें दुल्हा आदि का जिक हो।

- ६ ब्याह शादियों और उत्सवों में मन को विगाइने वासे बुरे २ गीत गाना-फ़ौश दिक्कगी और हाव भाव करना।
- ७ बालकों के सामने सखी सहेबियों से बेहूदी विषय सम्बन्धी कहानी सुनाना सुनना।

द्र-वच्चों का विवाह करके उनका श्रापस में मेख जोल होने देना, या साथ सोने देना श्रादि कारणों से लड़कियाँ जल्द सयानी हो जाती हैं श्रीर जल्दी ही रजस्वला हो जाती हैं। इसीखिए उन्हें बालिबवाह करके और वर्वाद करना कदापि उचित नहीं हैं। श्रल्पायु का गर्भ धारख माता, पिता और पेट की सन्तान तीनों के खिये श्रस्यन्त हानिकारक होता है। वहुधा ऐसी श्रवस्था में गर्भपात हो जाता है। गर्भधारिणी को जन्म श्रवस्था में गर्भपात हो जाता है। गर्भधारिणी को जन्म श्रवस्था में गर्भपात हो जाता है। श्रीर बहुधा मृत्यु हो जाती है। यदि बच्च भी रही तो बचा उसका कोमज श्रक्त चूस २ कर उसे निर्वेख कर देता है, दूसरी तीसरी बार वे ऐसी निर्वेख हो जाती हैं कि कभी जीवन पर्यन्त श्रारोम्य नहीं रहतीं। किसी न किसी श्रसाध्य च्रय, प्रस्ति, गठिया, प्रदर, रक्त गुरुम, श्रुख श्रादि रोगों में फँस जाती हैं।

डाक्टर डी॰ सी॰ सोम ने मेडीकल कान्ग्रेस कलकत्ते वक्का

में वर्णन किया था कि २४ बाल गर्भवतियों की जांच गई। परिवास यह हुआ।

- १ लड्कियों का गर्भ गिर गया।
- ३ लड्कियाँ बच्चा जनती बार मर गईं।
- ६ लड़कियों के जनने के समय अत्यन्त कष्ट हुआ, श्रीर उनके पेट से बचा श्रीज़ार से निकाला।
- ४ को प्रसृत का रोग हो गया।
- २ लड़कियाँ बचा पैदा होने से निर्बल होकर मर गई।
- ३ लड़िकयाँ दूसरी बार बचा जनने पर मर गईं।
- २ तीसरी बार बन्ना जनती बार मर गईं।

जो बचीं उनमें से १२ की तन्दुरुस्ती जन्म भर को बिगइ गई। अर्थात् कुल २४ में से १० मर गईं, १२ जन्म रोगिणी होगईं और कुल दो बाइकियाँ अच्छी रहीं।

सरकारी रिपोर्ट से ज्ञात हुआ कि छोटी उम्र में जो बच्चे पैदा होते हैं, उनमें १००० में ३३३ बच्चे एक ही बर्ष की आयु में मर जाते हैं। यानी हर तीन में एक बचा मर जाता है। सिस्टम आफ मेडीशन में डा॰ अलवर्र कहते हैं कि "भारत में सब देशों से अधिक जोग पेशाय की बीमारी से मरते हैं, फी सदी ६५ युवक इस रोग के रोगी हैं।

भारत की तन्दुरुस्ती ३० या ४० वर्ष में खराब हो जाती है; इसका कारण यह है कि जदकपन की शादी से उनका शरीर जीण हो जाता है और फिर ग़रीबी के कारण जरूदी ही बाज बच्चों की फिक्र का बोभा ऊपर पड़ जाता है, इससे उन्हें अत्यन्त मानिस्क कष्ट उठाना पड़ता है। इसका नतीजा यह होता है कि उनकी तन्दुरुस्ती बिगड़ जाती है।

इस प्रकार लड़िकयों की सामाजिक और शारीरिक परिस्थिति के आधार पर बाल बिवाह की प्रथा जारी की गई। फलतः लड़िकयों का उपकार होना तो दूर, उनकी शारीरिक और मानसिक सारी शक्तियाँ नष्ट हो गई। तिस पर ३ करोड़ लड़िकयाँ विधवा होकर बैठ गई। यह प्रथक्।

जड़कों का इस प्रथा से समूज ही नाश हो गया, और भाज देश भर ग़ारत हो गया।

भाइयों ! यदि जाति और समाज को बला प्रदान करना हो तो इस भयानक प्रथा को दूर कर दो। अपने बच्चों पर तरस खाद्यो और उन्हें जीवित रहने दो, इस इत्यारे बालविवाह से उनकी रक्ता करो।

त्रारोग्य-शास्त्र

उत्तर भारत के श्रेष्ठ विकित्सक और महान् प्रन्थकार— स्राचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री के-

१० वर्ष के दुर्धर्ष परिश्रम का श्रमर फल।

द० ष्रध्याय । २५० प्रकरण । १५०० से द्राधिक विषय । ४०० के लग-भग इकरंगे तथा बहुरंग मूल्य वान् चित्र । ८०० से अपर बड़े २ (२०×३०=८) पृष्ठ । उत्क्रष्ट दुरंगी छपाई । क्रोमतो, मजबूत, देशी आवइरो-फिनिश काग्रज । पक्षी, सुनहरी कारीगरी की बढ़िया जिल्द । पचासों वर्ष तक प्रन्थ नहीं नष्ट होगा । न कागज में कीड़ो लगेगा ।

ग्रन्थ का प्रत्येक ऋचार

प्रत्येक सद्ग्रहस्थ के जिये प्राणों से बढ़कर क्रीमती है। एक एक बात हज़ारों रुपयों के काम की है। सैंकड़ों बार पढ़ने पर भी ग्रन्थ सदैव श्रापको पढ़ना पड़ेगा।

गत १०० वर्षों में

इसकी टक्कर का कोई प्रन्थ हिन्दुस्तान की किसी भाषा में नहीं निकला। यह ग्रन्थ हिन्दुस्तान की ६ भाषाओं में भ्रमुवाद किया जा रहा है। तथा भारत के भिन्न २ प्रान्तों के शिक्षा विभागों ने स्कूलों, कालिजों और जायबेरियों के लिये स्वीकार किया है।

मूल्य बारह रुपये।

विषय सूची

श्रध्याय पहला (स्वास्थ्य-विज्ञान)

प्रकर ए

- १ स्वास्थ्य-रत्ता का महत्व।
- २ स्वास्य्य ख्रोर सोंदर्य नैरोग्य शरीर की स्वभाविक माप,स्वस्थ जबके-जबकियों का कद और वज़न ख्रतुमान से, स्वस्थ पुरुषों का वज़न और कद, स्वस्थ स्त्रियों का वज़न और कद।
- ३ स्वास्थ्य रचा के नियम-वाग्भट का कथन ,स्वास्थ्य रचा के वैज्ञानिक नियम, अन्न, जज, वायु और प्रकारा, मज-मुत्रादि त्याग का नियत काल, सर्दी-गर्मी से रचा।
- ४ दिन-चर्या-प्रातःकाल जागना, मल-त्याग, हाथ-मुँह घोना, दाँतन या मंजन, जौर, संध्या वंदन, सुगन्ध घारण, वायु-सेवन, वायु के गुण, नेत्रांजन, रत्न घारण, वेगों को रोकने से हानि, इनके उपाय।
- ४ ऋनुचर्या-विशान-वसंत-ऋनु-लक्तेण, गुण, पथ्यापथ्य, ग्रीष्म-ऋनु-लक्त्य, गुण, पथ्यापथ्य, वर्षा-ऋनु, पथ्या-पथ्य, शरद, हेमंत, शिशिर, साराँश।

अध्याय दूसरा (शरीर-विज्ञान)

प्रकरण

- जीवन-कार्य-चौबीस तत्त्व, जीव क्या है, जीव-कोष,
 प्राच क्या है, जीवन क्या है, मृत्यु क्या है।
- २ त्रिद्रोष-वायु, वायु के रूप, पित्त, पित्त के रूप, कफ, कफ के गुबा, प्रकृति, वात-प्रकृत के मनुष्य, पित्त-प्रकृति के मनुष्य, कफ-प्रकृति के मनुष्य।
- ३ त्वचा-स्पर्शेंद्रिय, केश श्रीर त्वचा, गंजापन ।
- ८ हिंडुयाँ-हिंडुयों की संख्या की सारिखी, हिंडुयों की जाति, हिंडुयों के जोइ।
 - ४ माँस-पेशी।
 - ई स्नायु-चेतना-गाँठ, शिरा श्रीर धमनी ।
 - प्रमम्भ्यल श्रीर के मुख्य संस्थान।

अध्याय-तीसरा (शरीर-यंत्र)

प्रकर्या

- १ शरीर के तीन मुख्य विभाग—सिर श्रीर उसके यंत्र।
- २ फुप्फुस या फेफ ड़ा झौर श्वास-प्रश्वास किया वज्ञन और श्राकृति, श्वास-नली या टेट्सा, लंबाई श्रीर गदन,श्वास-किया,श्वास की विशेषता, श्वास और प्रश्वास द्वारा क्या २ पदार्थ बाहर निकलते तथा भीतर जाते हैं, सीधे बैठना और खड़े होना, मुख से श्वास जेना, धूझ

- श्रीर रवास, रवास के जिये मुख्य वार्ते, घर कैसे हों, पालतू जानवर ।
- ३ हृद्य थ्रौर रुधिराभिस्तरण—रक्त, वायव्य पदार्थ, वर्ण-भेद, रक्त का परिमाण, उपादान, रक्त की किया, रक्त की गति, रक्त में जीवन है।
- अ आहार-नालिका-पाचन-यंत्र और पाचन किया-भोजन किस तरह शरीर का पोषण करता है— आहारनालिका, पहला भाग, दूसरा भाग, तीसरा भाग, चौथा
 भाग, पाँचवाँ भाग, बाहरी सहायता, भोजन पचने में
 कितनी देर लगती है, विष्ठा, विष्ठा में क्या होता है, मल
 दुर्गंधित क्यों होता है।
- ५ गुर्दे (मृत्र-यंत्र) कार्य, श्राकृति, किया, गुर्दे रक्त की शुद्धि किस भाँति करते हैं, मृत्र का परिमाण ।
- ६ प्लीहा (तिल्ली) थ्रोर यकृत (जिगर)— वज़न श्रौर श्राकार, यहत, क्रोम।
- मस्तिष्क—वजन, भिक्की और स्नायु, सुपुम्ना और पिंगला नाडी-मंडल, मस्तिष्क की रक्ता, मन।
- म नेत्र श्रीर कान शांख की बनावट, देखना, नेत्रों की रहा, कान, कान की बनावट, शब्द कैसे सुन पहता है, कान की रहा।
- ९ नासिका श्रीर जिह्ना- ब्रायेंद्रिय, जिह्ना।

- २० दाँत ग्रोर नाखून—दाँसों की बनावट, रोगी दाँत, दाँत सड़ने के कारण, दाँत की रचा कैसे की जाय।
- ११ पुरुष-जननेद्रिय श्रौर उसकी रत्ता— जननेद्रिय की उपयोगिता,पुरुष-जननेद्रियकी श्राकृति, इसकी बनावट; श्रंडकोष, जननेद्रिय की रक्षा, यौवन का श्रागम, स्वम-स्राव, कुटेव ।
- १२ स्त्री-जननेंद्रिय श्रीर उसकी रत्ता—स्वी-जननेंद्रिय की विशेषता, स्वी-जननेंद्रिय का श्राकार, स्वी-जननेंद्रिय की बनावट, कामादि, योनि, बृहदोष्ठद्वय, चुद्रोष्ठद्वय, भगाँकुर, सतीच्छ्रद, विटप, जरायु (गर्माशय) स्तन, स्वी-जननेंद्रिय को रत्ता।

श्रध्याय चौथा (गर्भाधान श्रौर प्रसव)

प्रकरग

- १ गर्भाशय
- २ ऋतुकाल-ऋतुकाल में सावधानी, श्रसावधानी के दोष, ऋतु-स्नाता, गर्भाधान।
- ३ गर्भ।
- ४ गर्भ रहने का चिह्न—मासिक धर्म बन्द होना, गर्भाशय का सिकुद्दना, बच्चे के दिल की धड़कन, गर्भ में पुत्र-पुत्री का निर्णय, दौहद-लच्च्या, वर्ण भौर नेत्र, गर्भ का रक्त-संचार।

- ५ गर्भिग्गि के रोग छौर उसकी चिकित्सा—गर्भं<mark>पात</mark> को रोकना।
- ई गिर्भिगा के पालन योग्य विशेष नियम भोजन, स्नान, स्थायाम, शुद्ध वायु तथा धूप, मन की दशा, गर्भावस्था में मैथुन।
- गर्भाकाल—प्रसव, प्रसव की तैयारी, सृतिकागार में कौन रहे, वाई कैसी हो, प्रसव की पूर्व सुचना, दूसरी, तीसरी।
- <mark>= वस्तुऐं जो प्रसव के समय हा</mark>जिर रहनी चाहिए।
- प्रसच प्रथम स्पर्शन, द्वितीय स्पर्शन, तृतीय स्पर्शन,
 चतुर्थ स्पर्शन, प्रसृति को श्राहार।
- १० प्रसच के बाद का स्त्राच—यदि बालक श्वास न ले, तो उसका उपाय, प्रसव में श्रिधिक रक्त-स्राव का उपाय, प्रसृतिज्वर ।
- १० प्रसव-बाधा उसके उपाय, उसकी चिकिस्सा, श्रद्धत बातें जो कभी-कभी प्रसव में हो जाती हैं, जोडिए बच्चे।
- ११ गर्भ न रहने के कारण—गर्भ रहने के उपाय। श्रध्याय पांचवां (शिश्च-पालन)

प्रकरण

१ वायु श्रीर प्रकाश-सौर गृह का प्रबन्ध, वन्ने को कहाँ सुज्ञाना चाहिए, स्वच्छ वायु का प्रवाह, वन्ने के जिए सर्वोत्तम स्थान, बन्ने के लिए सबसे निकृष्ट स्थान, बन्ने की हवाख़ोरी।

- र श्राहार श्रीर जल—माता का दूध, दूध पिलाने की विधि, दूध पिलाने का ढक्क, माता का श्राहार, साफ दस्त, उत्तम श्राहार, स्नान, व्यायाम श्रीर जल, सृदु शुकाब, ख़ास बातें, दूध पीने का काल, धाय, बाहरी दूध पिलाने की सारिग्णी, १ से ४ माम तक के बच्चे को घण्टों के हिसाब से दूध पिलाना, बाहरी दूध का परिवर्तन, श्रजीर्थ।
- विशेषित वाद का आहार—फलों का रस, दूसरे वर्ष का आहार, दूसरे वर्ष के ख़तरे, १ वर्ष से १४ मास की आबु तक भोजन-विधि, १४ से १८ मास की आयु तक की भोजन-विधि, १८ मास के बाद, सयाने बच्चों का आहार, मिठाइयाँ और फल, बच्चों का वज्ञन, दस्त ।
- ४ वस्त्र पोतड़े, मौज़े श्रीर जूते।
- प्र बच्चों की पालन-विधि—तेल की मालिश, सम्बारण स्वान।
- ६ खेल-कूद सोने के समय के वस्त्र, विद्यौने, सिर के टोप, नींद श्रौर विश्रांति ।
- फुटकर बातं—बच्चों के लिये सुनहरी नियम,
 बच्चों की शक्ति विकास।
- ८ नियमित भ्रादतीं का श्रभ्यास क्रायम क्रब्क, प्रिकारी।
- ६ साधारण भूल पहली भूल, दूसरी भूल, तीसरी

- भूल, चौथी भूल,पाँचवीं भूल,छटी भूल, सातवीं भूल, भाउवीं भूल, नवीं भूल, दसवीं भूल, ग्यारहवीं भूल, बारहवीं भूल, तेरहवीं भूल, चौदहवी भूल, पम्द्रहवीं भूल, सोलहवीं भूल, सम्रहवीं भूल।
- १० बुरी आदतें—उँगलियों और कपड़े तथा सिलौने आदि को मुँह में हालकर चूसना, दाँत से नाखून काटना या मिटी खाना, बिस्तर में दस्त-पेशाब करना, मूत्रेन्द्रिय को मसलना, मूले में हिलाना या गोद में लेना, अफ्रीम देकर सुलाना, हकलाकर बोलना हठ करना।
- ११ बच्चों का रोना—बच्चों के रोने की ख़ास-ख़ास अवस्थाएँ, दुख-रिहत हिचक-हिचक कर रोना, रोना नियमबद्ध है या नहीं, भूख या प्यास का रोना, बेचैनी से रोना, थकान या कमज़ोरी से रोना, घोर पीड़ा का रोना पेट का दर्द, कान की पीड़ा, विशेष चेतावनी।
- १२ मुँह ध्योर दाँत रोग कहाँ-कहाँ जब पकदते हैं, मुलायम भोजन, दाँत कब ध्रौर कहाँ निकलने शुरू होते हैं।
- १३ हरे-पीले दस्त भ्रौर दूध डालना।
- १४ सरलता से दूध हुड़ाना।
- १५ निष्क्रमण्—दन्तोज्जव, श्रष्टमंगल वृत ।

१६ बच्चों के रोग-बच्चों के रोग जानने का उपाय, टूँ ही का पक जाना, खाब लग जाना, दूध हाबना, दूध न पीना, हँ सबी जाना, काग गिर जाना, आंख दुखना, खाँसी, तर खाँसी, काली या कूकर खाँसी, पेट चलना, कान बहना, फुटकर रोग, जबर !

श्रभ्याय छठा (स्नान-पद्धति)

प्रकरण

- १ स्नान का स्वास्थ्य पर प्रभाव-चमड़ी के लाभ, खून की नालियाँ।
- २ स्नान के प्रकार साधारण स्नान, तैरने का स्नान, फ्रब्वारे श्रीर नल का स्नान, सूई-स्नान, वर्षा-स्नान, श्रार्द्रपट-स्नान, वाष्प-स्नान, वायु का स्नान, टरिकश स्नान, त्वार स्नान, सोतों का स्नान, वैज्ञानिक स्नान, श्रान्य स्नान, दुई दूर करने के स्नान।
- ३ स्नाम के विषय में कुछ जानने योग्य बार्ते स्नान करने के स्थान ।
- ४ स्नान के उपयोग।
- ४ जाल-चिकित्सा श्राठ कटोरी पानी का प्रयोग, उषा जलपान-विधि, निद्राप्रद स्नान, शाँतिदायक स्नान, शक्ति-वर्द्ध क स्नान, शीतल जल-प्रयोग, उष्ण जल-स्नान, जल प्रयोग, प्रस्वेद-स्नान, उष्ण वायु स्नान, दूसरी

विधि, जलाई पट-स्नान, किट-स्नान, पाद-स्नान, श्रौषधि-मिश्रित स्नान, श्रौषधि-वाष्प-स्नान। श्रध्याय सातवाँ (भोजन)

प्रकरण

- १ भोजन का वैशानिक विश्लेषण-भोनन किसे कहते हैं, भोजन से जाभ, उत्तम भोजन, शरीर के मुल श्रवयव, पोषक द्रव्य, चर्बी, शर्करा, लवण, जल, तन्दुरुस्त शरीर के मुल श्रवयवों का परिमाण।
- २ दृध दूध के सम्बन्ध की ख़ास बातें, शुद्ध दूध किसे कहते हैं, दूध घशुद्ध होने के कारण, दूध के हारा उत्पन्ध होने वाले रोग, दूध का वैज्ञानिक विश्लेषण, स्त्री और पशुस्त्रों के दूध का घन्तर, श्रन्य बातें, मलाई, मक्खन, मक्खन के गुण।
- ३ शाक- फल श्रीर मेवे, शाकों के गुण, फलों के गुण, मेवा !
- ४ भोजन प्रशाने के लाभ—भोजन की विधि, किस ऋतु में कैसा भोजन करना चाहिए।

अध्याय आठवाँ

(फलाहार और फलों की रोगनाशक शक्ति)

प्रकरस

१ फलों का महत्व-फल और दाँत, फलाहार, फलों के सम्बन्ध में श्रापत्ति, फलाहार-चिकिस्सा।

- सादा जीवन, फल श्रौर उपवास, श्रागंतुक रोग।
- सेव विशेष, सेव की चाय. श्रंगूर, किशमिश की चाय की विधि, केला, खोपरा, नारियल, नीबू, संतरा, बेर, प्याझ, लहसुन, शर्बत बनाने की विधि, श्रंजीर, प्रदर का श्रनोखा नुसख़ा, गोभी, श्रालू, सेम, मटर, मसूर, गाजर, शलजम टिमाटर।

अध्याय नवाँ (विष-भोजन)

प्रकरश

- १ मदिरा—मदिरा भोजन नहीं है, मदिरा का मस्तक पर प्रभाव, मदिरा श्रीर जीवन, मदिरा श्रीर गृह-सौख्य, मदिरा का ख़ास प्रभाव, मदिरा पर नर-स्तों की सम्मतियाँ, मद्य श्रीर खाद्य, खाद्य उष्णता की माप कैलोरी से, किस मद्य में कितना मादक दृष्य होत्य है, मदिरा की श्रीपध की रीति पर उपयोग, भारत श्रीर मदिरा, नेशन पत्र का जिखना।
- २ तँबाकू तम्बाकू विष है, विषेता प्रभाव, तम्बाकू के विषय में विद्वानों की राय।
- ३ अकीम और गाँजा।
- ४ अन्य द्रव्य—भाँग, चरस, गाँजा, कोकीन, पान, चाय, क्रहवा, कोको, कचालू, चटनी, अचार और गर्म मसाले विक्रापनवाज और पेटेंट दवाइयाँ, माँसाहार, मांस-भच्चण की दृष्टि से डॉक्टरों की संख्या, मीठा और

मांस, पशुच्चों पर दया, मांस-भच्चण के विरुद्ध युक्ति, मांस चौर रोग ।

श्रध्याय दसवाँ (रोग-कीटाणु श्रौर घर के दुश्मन जंतु)

- १ कीटाग्रा उपयोगी कीटाण, परिमाण, कीटाणुत्रों की खेती, कीटाणुत्रों का विष, कीटाणु शरीर में कैसे प्रवेश करते हैं, मक्खी घौर रोग, दूसरे भय, छूत के कीटाणु, शरीर में रोग-जन्तुश्रों से युद्ध, रोग नाशक चमता घौर सुई, मियादी रोग, कीटाणुश्रों से कैसे रक्षा हो सकती है।
- २ घर के दुश्मन जन्तु मक्खी, जुएँ श्रीर जमजुएँ, उपाय, खटमल।

श्रध्याय ग्यारहवाँ (जड़ी-बूटी)

प्रकरण

अकर गा

- १ अशोक विवरण, गुख-दोष श्रौर उपयोग। श्रशोक-घृत, श्रशोकावलेह, श्रशोकादि काथ।
- २ ब्राङ्क्सा—श्रद्ध् से के गुर्गा, विशेष विवस्ण, उपयोग, वासा-स्वरस, वासावलेह, वासासव, गुर्दे के दर्द पर, दम नाशक सिगरट।
- ३ ढाका।

- अ त्रांवला साँवले के गुण, विवरण, उपयोग, व्यवन-प्राश सेवन की सामान्य विधि, साँवले का तेल ।
- ५ चोलमोगरा।
- ई तुलसी-गुण, विवरण, उपयोग, वनतुलसी, पहचान।
- ब्राह्मी—विवरण, गुण, धर्म, उपयोग, ब्राह्मी-घृत, सारस्वतारिष्ट, सारस्वत-घृत, ब्राह्मी रसायन, मेध्य रसायन।
- म तहसुन-नीम, निय-सत्व, निवादि चूर्ण, निब हारिद्र-खंड, घी-तेल, अपस्मार का आनुभविक प्रयोग, दूसरा उपाय, श्रर्श का उत्तम उपाय, निबौत्तियों का तेल ।
- ९ भिलाचा विवरण, गुण-धर्म श्रीर उपयोग, हैज़े का श्रवसीर उपाय, वायु के रोगों पर भिलावे का निर्भयता से उपयोग, भारी चोट का उपाय।
- १० हर्ल्या उपयोग, उपदंश रोग।
- ११ रीठा—विवरण, गुण, दोप श्रौर उपयोग, विघों पर प्रयोग, बिच्छू के विष पर, श्रनंत वायु पर, श्राधासीसी हिस्टीरिया श्रोर श्रपस्मार पर, नष्टार्तव पर, कक्र पर ।

१२ आका

श्रध्याय बारहवां (मुष्टि-योग)

प्रकरगा

श सिर-दर्व, मृगी, हिस्टीरिया, मस्तिष्क के श्रम्य रोग, नेश्र-रोग, मुंडी का पाक, कान के रोग, नाक के रोग, दाँत के रोग, मुख और जीभ के रोग, पेट के रोगों की दवा, तिस्ती, मुलैयन, पेट के कीड़े, घाव, फुटकर, पेसिश।

अध्याय तेरहवाँ (प्रसिद्ध नुसख़े)

प्रकरण

१ स्वर्ण-वसंत-मालती, मकरध्वल चन्द्रोदय, कस्तूरी भैरव मृतमंजीवनी सुरा, सुदर्शन-चूर्ण, दशमूल का काढा, चंद्रप्रभा, हिंग्वष्टक चूर्ण, हेमगर्भ, योगराल गुगुग्ल, वसंतक्कसुमाकर, सुद्दागसींठ, सितोपलादि. जवाहर मोहरा, दिवाल मुश्क मोतदिल, ख़मीरा गावजुबाँ खंबरी,ख़मीरा मरवारीद, केशरंजन तेल, जवाकुसुम तेल, श्रमृत धारा।

श्रध्याय चौदहवाँ (खास नुमखे)

अकरस

श पारा-भस्म, पारे की गोली, खुश्ता फ्रोलाद, दूसरा, मोम का तेल, ताकृत की गोली पाचन की गोली, शक्ति बर्द्धक खर्क, उन्मत्त खर्क, ताकृत की खंग्रेज़ी गोली, धातुच्य पर प्रयोग, नायाब तिला, तर खुजली का ख्रमीराना नुसखा, पुत्र उत्पन्न होगा, खज्जत का नायाब नुसखा, गर्भरोधक, चाँदी बनाना, एक नायाब नुसखा, पारे की गोली की विधि, पारद-भस्म, पारे का प्याला बनाना।

अध्याय पन्द्रहवाँ (धातुओं की भस्म)

प्रकरण

१ स्वर्ण—स्वर्ण-भस्म, चाँदी, चाँदी-भस्म, तान्न, ताँबे की भस्म, खौह-भस्म, मंडूर-भस्म, वंग-भस्म, सीसा-भस्म, आश्रक-भस्म, स्वर्ण माश्विक, हरताल-भस्म, संख्या-भस्म नं० १, संख्या-भस्म नं० २, सिगरक्र-भस्म, मूँगा-भस्म, हीरा-भस्म।

श्रध्याय सोलहवाँ (श्राकस्मिक उपचार) प्रकरण

- १ घात्र त्र्यौर चोट पटी, छाती की हर्डुंग टूटने पर पटी बांधने की रीति,
- २ विषेते जनुश्रां का काटना—सर्प, बावला कृत्ता, या गीद्द ।
- ३ स्त्राग स्रोर पानी के उपद्रव—स्राग मे जलना, पानी में इबना।
- अहर खाना—उपचार, विष की जातियाँ, श्रम्ल विष तथा उपचार, ज्ञार विष तथा उपचार, सीम्रो का चूरा तथा उपचार, मिट्टी का तेल तथा उपचार, श्रक्रीम भौर मारिफया तथा उपचार, धत्रा तथा उपचार, श्रम्ला स्था उपचार, लू लगना तथा उपचार, फॉसी श्रादि से गला घुटना, बेहोशी।

१ कृतिम श्वास-िकया—बेहोशी की हालत में ख़ास सँभाल, ख़ास चेतावनी।

अध्याय सत्रहवाँ (रोगी की सेवा)

प्रकरण

- १ सेवा-धर्म।
- २ रोगी के योग्य घर साफ़ हवा, रोगी के कमरे में जलती हुई श्रॅंगीठी, परिश्रम, रोगी के कमरे को गर्मी पहुँचाना, हवा का बचाव।
- २ फुटकर व्यवस्था शोरगुल, मुलाकाती, काम-काज चिकित्सा का चुनाव, धूर्त, मुर्ख धौर धताई वैद्य-डा टर, चिकित्सक का लच्चण, चिकित्सक के बुलाने का समय, दूत, दूत के कर्म।
- ४ भ्रोपध भ्रन्छी श्रीषध, श्रीषध के प्रकार, चालाक पंसारी, दवाइयों का बाहरी प्रयोग, श्रीषध का समय प्रयोग, श्रीषध का पिलाना।
- ५ पथ्यः भिन्न-भिन्न रोगों में पथ्यापथ्य ।
- ६ परिचारक—परिचारक के गुण, परिचारक के इतने काम हैं।
- श्रावश्यकीय ज्ञान—थर्मामीटर, श्रिष्ट ज्ञान, ख़ास ख़ास रोगों के श्ररिष्ट बच्चण ।
- ८ रोगियों के सम्बन्ध में विशेष झातव्य--शीव्र श्राराम होने योग्य रोगी, दिन में सोने-न-सोने योग्य

रोगी, रोगी की शारीरिक स्वच्छता, रोग-मुक्त होने पर ।

श्रध्याय श्रठारहवाँ (तपेदिक्)

प्रकरश

१ क्या तपेदिक अस्ताध्य है—तपेदिक क्या है, तपेदिक के प्रधान चिह तपेदिक के भेद, पुरतैनी तपेदिक पैदा होने के कारण, तपेदिक के कीड़े किस तरह जिस्म में पहुंचते हैं, तपेदिक फैजने के साधन, पुरतैनी तपेदिक से संतान को बचाने के उपाय, बचों की कसरतें, तपेदिक को नष्ट करने के साधन, तपेदिक के रोगी के थूकने का प्रबन्ध, तपेदिक को रोगी का घर में रहने का प्रबन्ध, तपेदिक का हलाज, आव हवा, आहार-विहार, आरोग्य होने पर ।

अध्याय उन्नीसवाँ (हैजा)

प्रकर्ण

१ हमारे प्राचीन विचार और अंधिवश्वास हैं जे का इतिहास, है जे की उत्पत्ति के कारण, है जे का ज़हर फैक्कने की रीति, है जे के जच्चा, है जे के प्रभाव से होने वाले शारीरिक परिवर्तन, है जो की चिकित्सा, है जो का वम्होबस्त, म्युनिसिपैलिटियों का कर्तंम्य।

श्रध्याय बीसवाँ (प्लेग)

प्रकरण

१ प्लोग का इतिहास—उत्पत्ति का कारण, चिन्ह भौर चिकित्सा।

श्रध्याय इक्कीसवाँ (कुछ महत्त्वपूर्ण रोग)

प्रकरस

- १ मोतीभारा या टाईफाइड ज्वर— उत्पत्ति श्रौर लक्ष्य, उसकी छूत, उत्पत्ति के कारण, उपाय, मोतीभारा रोकने के उपाय।
- २ इन्कल्युएंजा भ्रौर जुकाम जुकाम, रोक-थाम, चिकित्सा, गद्द श्रौर गत्ना बैठ जाना।
- ३ निमोनिया थ्रौर प्लुरिसी--उपचार, वश्चों की पसली चलना, प्लुरिसी।
- ४ मलेरिया—मस्रोरिया के कीटा छ, मस्रोरिया कैसे रोका जाय. सन्त्रण, चिकित्सा ।
- ५ संग्रहणी श्रौर श्रितसार—श्रतिसार, क्रारण, लच्चा, उपचार, पेचिश, अंग्रहणी, उपचार ।
- ६ मंदाग्नि, बद्धकोष्ठ श्रौर बवासीर—मंदान्नि, उपाय, बद्धकोष्ट, उपचार, बवासीर, उपचार।
- ७ इस देश के छूत के रोग चेचक, चेचक का विष, बच्च, टीका, टीके की संभाव, चेचक के रोगी की

सँभा**त, चेचक की चिकि**त्सा, ख़सरा, उपचार, छोटी माता।

- म विदेशों से त्राये कूत के रोग टाइफस, कारण, खच्चा, चिकिस्सा, डेंग्यू, उपचार, दिप्थीरिया या कंटरोहणी, बच्चण, उपचार, पीला ज्वर, उपचार, श्रकाल ज्वर, (रिलेप्सिंग क्रीवर) बच्चण, उपचार, काली खाँसी, बच्चण, उपचार।
- स्कृत की वीमारियों से बचने के उपाय-- वृत की बीमारी का अस्पताल ।
- १० त्वचा के रोग—खुजली, लचाय, चिकिस्सा, श्रजाइयाँ या मरोदियाँ, चिकिस्सा, एग्ज्रमा या छाजन, चिकिस्सा, दाद, चिकिस्सा, फोड़े और घाव, उपाय।
- ११ कृतिम-रोग--केंखुआ, उपचार, केंखुए कैसे रोके जाते हैं, कहृदाना, मुख्य लच्च्या, इनके फैलने की रीति श्रीर रोकने का उपाय, उपचार, खुनमुने, उपचार।
- १२ फुटकर रोग मुँह बा बाना, हिचकी, नकसीर, श्रंडकोष उतर श्राना, जोड़ों का दर्द श्रीर गठिया, सृगी या हिस्टीरिया, उपचार, श्रन्य वस्तु निगक्क बाना, शुक्ष ।

भ्रध्याय बाईसवाँ (स्वाभाविक चिकित्साएँ) प्रकरण

१ सूर्य-ज्योति-चिकित्सा—सूर्य का रँग, रँगों का

शरीर पर प्रभाव, रँगों के रोग-नाशक गुग्ग, ख़ास-ख़ास रँगों का ख़ास-ख़ास रोगों पर प्रभाव, प्रयोग की विधि।

- २ उपवास-चिकित्सा—रोग श्रीर उपवास, उपवास की रीति, नींद श्रीर प्यास, एनीमा, उपवास न करने योग्य, विशेष बात, उपवास की समाप्ति, उपवास के श्रनुभव विचारणीय बातें।
- ३ दुग्ध चिकित्सा
- ४ अन्य चिकित्सा— मिटी की चिकित्सा, श्राध्यात्म-चिकित्सा, सह।यक चिकित्सा ।

श्रध्याय तेईसवाँ (यौवन-रद्या)

प्रकरगा

१ यौवन-त्र्यागम—बालक के स्वभाव पर माता-पिता की वयस का प्रभाव, स्कूली शिक्ता, नागरिक जीवन की सँभाल, सन्तानों की धार्मिक शिक्ता श्रौर सात्विक जीवन का प्रबन्ध, सदाचार, संयम।

अध्याय चौबीसवाँ (व्यभिचार)

प्रकरस

- १ स्वाभाविक स्त्री-प्रसंग।
- २ व्यभिचार का शरीर पर प्रभाव—स्पष्ट प्रभाव, अप्रकट प्रभाव, आमाशय पर प्रभाव, मुत्राशय पर

प्रभाव, रीढ़ की हड्डी, मस्तिष्क पर प्रभाव, सामृहिक प्रभाव, व्यभिचार का श्रात्मा पर प्रभाव, व्यभिचार का सामाजिक संगठन पर प्रभाव।

२ व्यभिचार-जन्य महारोग-प्रमेह, मूत्र ग्रंथि-प्रदाह, म्त्राघोत, मूत्रकृच्छ्, बेख़बरी में मूत्र-स्याग, शुक्र-स्राव, बहुमूत्र, स्वम-दोष, शीघ्रपतन, सुज़ाक, श्रातशक (गर्मी, उपदंश, सिफिलिस), प्रथम श्रवस्था, द्वितीय श्रवस्था, तृतीय श्रवस्था, पैत्रिक प्रभाव, उपदंश-रोग का परियाम, नपुंस्कता, शर्करार्बुद, (संधिवात), दर्दं गुर्दा, भगंदर, कुष्ट, ख्रियों के विशेष रोग, प्रदर, वाधक रोग, हरित्पीढ़ा, हिस्टीरिया. जरायु-प्रदाह, जरायु-श्चर्बुद, जरायु की स्थान-च्युति, डिंब-कोष प्रदाह, योनि-प्रदाह, कामोन्माद, वंध्यात्व। ४ इन महारोगों की चिकित्सा- प्रमेह-चिकित्सा, धातु-वर्द्धक प्रयोग, नपुंसक, सुज्ञाक, श्वातशक, खाने की दवा, श्रातशक के मरहम, स्त्रियों के रोग, पुष्यानुग चूर्ण, हिस्टीरिया-उपचार, नरायुदाह-उपचार, जरायु-भ्रर्वुद-उपचार, जरायु-स्थान-च्युति-उपचार, डिंब-कोप योनि-प्रदाइ-उपचार, कामोन्माद-उपचार, वंध्यात्व-उपचार, फलघृत, फुटकर उपचार, भगंदर-उपचार, बद-उपचार, संधिवात (गठिया), पारद-विञ्कति-उपचार, कुष्ठ-उपचार, दर्दगुर्दा-उपचार, शीत-काल में सेवन योग्य पाक, पाक सेवन करने में वैज्ञानिक युक्ति, कस्तूरी-पाक, मदन-मोदक, मूसर्जी-पाक, एक उत्कृष्ठ वीर्य-वर्द्ध पाक, गाजर-पाक।

श्रध्याय पच्चीसवाँ स्त्रियों का स्वास्थ्य श्रीर व्यायाम

प्रकरण

१ स्त्रियों की स्वास्थ्य-हानि— खियों की हीनावस्था के लक्षण, उसके कारण, बाल-विवाह, उत्तम भोजन का न मिलना, पितयों, * घरवालों श्रीर समाज का दुर्व्यवहार, वर्तमान सभ्यता श्रीर शिक्षा, कुसंग, सामा-जिक कुरीनियाँ, धन की बाहुस्थता, डंबल की कसरतें, व्यायाम से लाभ, व्यायाम की मात्रा तथा श्रधिक व्यायाम से हानि, व्यायाम का प्रारम्भ, तेल-मालिश।

श्रध्याय छन्बीसवाँ (सौंदर्य-विज्ञान)

प्रकरण

- १ सींदर्य की व्याख्या— स्वास्थ्य का सींदर्य पर प्रभाव, स्वभाव श्रीर मानसिक भावों का सींदर्य पर प्रभाव, सींदर्य नाश के कारण स्वरूप रीति-रस्म, श्रादतें श्रीर रोग।
- २ सौंदर्य के लिये श्रावश्यक बातें।
- ३ केश-सींद्य-बाल धोने की रीति, कंघी या बुश

- करना, तेल बनावे की विधि, केश बाँधना, बालों का गिरना, बालों का सफेद होना, ख़िजाब, बालों को घूँघरवाले बनाना।
- ४ मुख-साँद्य नेत्र, नेत्रों के भिन्न-भिन्न भाव, पलक, भौंह, नाक, कान, श्रोष्ठ, दांत, कीड़ा, दंत-मैल, मुख-दुर्गंथ, कंठ-स्वर, ठोड़ी, गाल।
- ४ वद्मस्थल और धड़—स्तनों का उभार, कमर और पेट, समविभक्त शरीर, कृशना, कंधे और गर्दन।
- ६ हाथ ग्रौर बाहु भुजाग्रों की मालिश, नाख़ून।
- ७ पौर-गहने, पैरों का फटना, पैर में फ्लीना !
- चमड़ी की रङ्गत—भोजन का रंगत पर प्रभाव, बाहरी चीज़ों, बफारा, साबुन का प्रयोग, धूप का प्रभाव, हार्दिक भावों का प्रभाव, शरीर-यंत्रों का खचा पर प्रभाव।

अध्याय सत्ताइसवां (दीर्घजीवन)

प्रकरण

- १ क्या त्रायु बढ़ सकती है ?— प्रविवाहित प्रधिक मरते हैं।
- २ दीर्घायु होने की रीतियां—सोम-प्रयोग, वनस्य-तियां, इनके उत्पत्ति-स्थान।

श्रध्याय श्रदठाईसवां (गृह-निर्माण-कंला)

प्रकरण

- १ विचारने योग्य बार्ने—नागरिकता के ख़तरे, वायु, बच्चों की मृत्यु, बच्चों की मृत्यु का मृत्न-कारण, नवजात बच्चों की मृत्यु का कारण, लोगों का छज्ञान, पाख़ाने, सड़कें छौर गलियां, पशु, ख़ोंचेवाले, नालियां, वाटर-वर्क्स, खाद्य पदार्थ, धुद्याँ, खाद-कूड़ा, तक्क गजी छौर मकान, सफ़ाई की श्रावश्यकता, म्युनिसिपैलिटियों का कर्ताच्य, गवर्नमेग्यट क्या कर रही है, सरकार को क्या करना चाहिये।
- २ खास बातं।

अध्याय उनतीसवां (उपयोगी वातें)

प्रकर गा

- १ हस्तरेखा-विद्या हाथ की बनावट, रेखाएँ, अन्य चित्र ।
- २ मस्तिष्क-विद्या-कपाल, बाल, भोंह, बिरौनी, धाँखें, कान, होंठ, दाँत, जीभ, मुख, गाल और ठोड़ी, गर्दन, मस्तिष्क के भाव।
- ३ स्वप्न विशान।
- १ आकृति-विज्ञान।

श्रध्याय तीसवां (श्राध्यात्म-तत्त्व)

प्रकरण

१ श्रातमा क्या है शरीर श्रीर श्रात्मा का संयोग, पुनर्जन्म, प्रारब्ध, उपनिषद्-तत्व, गीता-सार, सर्व-शक्तिमान् परमेश्वर, श्रात्मवत् सर्वभूतेषु।

सादे चित्रों की सूची

१ स्वस्थ पुरुष । २ स्वस्थ पुरुष के शरीर की गठन । ३ स्वस्थ पुरुष की मांस-पेशियाँ। ४ स्वस्थ पुरुष की बाहरी गठन । ४ नैरोग्य शरीर की स्वाभाविक साप। ६ स्वस्थ शरीर की दृदता । ७ स्वस्थ लडके धीर लडकियों का कद श्रीर वज़न श्रनुमान से । = स्वस्थ पुरुषों का कद श्रीर वज़न श्रनुमान से । ६ कुएँ का गोला । 🙃 जल को घरेल रीति से शुद्ध करने की रीति। ११ पढ़ने के लिये बैठनेकी शुद्ध रीति । २ पढने के लिये बैठने की गुलत रीति। १३-२६ रोगोत्पादक साधन (१४ चित्र)। २७ काइने के लिये बैठने की शुद्धि रीति । २८ काइने के लिये बैठने की गुलत रीति। २६ लिखने के लिये बैठने की ग़ज़त रीति। ३० लिखने के लिये बैठने की शुद्ध रीति। ३१ चलने की ग़लत रीति। ३२ चलने का शुद्ध रीति । ३३ बैठने की ग़लत रोति । ३४ बैठने की शुद्ध रीति । ३४ त्वचा की भीतरी बनावट । ३१ श्रस्थि-कंकाल ।

३७ वक्त-मह्नर श्रीर वस्ति । ३८ पृष्ठ-कंश-कशेरका । ३६ हाथ की माँस-पेशियों की गठन । ४० उरोगुहा श्रौर उद्रर-गुहा के भीतरी श्रंग। ४१ फुप्फुस या फेफ़्ड़ा। ४२ हृदय का कल्पित चित्र । ४३ श्राहार-नाविका । ४४ गुर्दे और मूत्र-वस्ति। ४४ खोपड़ी का ऊपरी पृष्ट। ४६ मस्तिष्क। ४७ मिल्लाक की कार्य-प्रणाली। ४० पुरुष जननेदिय। ४६ शिशन की बनावट । ४० शिशन-दंखिका की सूचम रचना, स्चमदर्शक यंत्र हारा ,बढ़ाई हुई। ५१ मृत्राशय का पिछला भाग । ५२ श्रंड तथा उपांड । ४३ ग्रंड श्रीर उपाँड की रचना ! ४४ श्रंडकोष-छेदित । ४४ शुक्र-कीट । ४६ शुक-कौट परिवर्धित । ४७ नारी-अननेंद्रिय । ४८ गर्आ-भ्रय सम्बद्धि के रुख़ कटा हुन्ना। ४६ उदर में गर्भाशय का स्थान श्रौर उसके विभाग। ६० गर्भाशव के स्थान का भीतरी विवरण । ६१ प्रवेश-हार का व्यास । ६२ वस्ति गुहा के भाग। ६३ वस्ति गुहा का अस। ६४ अंत-रीय स्त्री-जननेंद्रिय । ६४ डिंब-कोप की रचना । ६६ बच्चे-दानी की लुवाबदार मिल्ली। ६७ बच्चेदानी की मिल्ली गर्भ पर लिपटी है।६८ इस मिल्ली की बनावट। ६६-७४ गर्भ की क्रमशः उत्पत्ति (६ चित्र । ७४-७७ गर्भ की क्रमशः वृद्धि (३ चित्र)। ७८ श्राँवल की बनावट। ७१ गर्भ की मासिक बृद्धि। ८० पाँच सक्सा का गर्भ ८१ श्राठ सप्ताह का गर्भ। ८२ गर्भ का विकास। ८३

उदरस्थ गर्भ । ८४ श्रवण परीक्षा । ८४ गर्भ का रक्त-संचार ८६ पूर्वा गर्भ । ८७ प्रथम स्पर्शन । ८८ हितीय स्पर्शन । E हतीय स्पर्शन । १० चतुर्थ स्पर्शन । ३१ नाज का बाह्य निकलना। १२-४१ शिरोदय के भिन्न-भिन्न रूप (म चित्र)। १००-३० म प्रसव के भिन्न-भिन्न रूप (६ चित्र)। १०६ शिरोदय। ११० बच्चेदानी को द्याना। १ ११ गर्भाशय का संकुचित होना । ११२ अन्या-कपाला। ११३ अ ्ग-कपाल का ज्यास । ११४-१:७ मूद गर्भ के भिन्न-भिन्न रूप (४ चित्र) । ११८ जो दिए बच्चे । ११८ स्वस्थ शिशु । २२० सबसे उत्तम गाड़ी। १२१ बच्चे को लिटाने की रीति । १२२ दूध पिलाने के लिने उछाने की रीअति । १२३ बोसला से दुध पिलाने की रीबि। १२४ बाहरी दुध पिलाने की सारिगी। १२४ बच्चे को तोलने की रीति। १२६ वच्चों के वस्त्र। १५७ वस्त्रों के वस्त्र । १२८ वस्त्रे की स्पंज करने की रीति । १२६ वस्त्रे का मुख साफ्र करना। ३३० वच्चे के स्नान की बैयारी। १३१ यच्चे का स्नान । १३२ बच्चे का विस्तरा । १३३ क्ष का वैज्ञानिक विश्लेषण । १३४ उनके मुल्ल-प्रवयय की सारिणो । १३६-१३७ खाद्य उष्णता की माप कैलोरी से (२ चित्र)। १३८ किस मद्य में कितना मद है। १३६ मांस श्रीर बनस्पति के पोपण-तत्व की सारिगी। १४० मांस भक्त की दृष्टि से डॉक्टरों की संख्या । १४१-१४३ पिस्सू

की अवस्थाएँ (३ चित्र)। १४४ मक्ली की टाँग में इज़ारों रोग-जन्तु लिपट रहे हैं। १४४-१४८ मिक्सयों की चार अवस्थाएँ (४ चित्र) १४६-१४६ मक्खी की टाँग में लिपटे हुए कीटाणु (३ चित्र)। १४२ शीशे पर मक्खी ने इतने कीटाणु छोड़े हैं। १४३ चौड़ी पट्टी पर हाथ लटकाया गया है। ११४-१११ सकरी पट्टी पर हाथ लट-काया है। (२ चित्र)। १५६ बाँइ की ऊपर की हड़ी टूट गई है। १४७ हाथ हदय से ऊँचा करने से ख़न निकलना बंद होगया है। १४८ पैर ऊपर उठाने से रक्त कम बहेगा। १४६-१६० रीफ्र गाँठ, ब्रेनी गाँठ (२ चित्र) १६१-१६३ पट्टी बाँधने की राति (३ चित्र)। १६७ सिर की पट्टी। १६८-१७० सिर की चोटें (३ चित्र) १७१ जवाहा टूट गया है। १७२-१८ भिक्ष-भिक्ष श्रंगों पर पट्टियाँ बाँधने की रीति (१० चित्र)। १८२-१८४ हाथ से रूमाल से बाँधकर गले में लटका खेने की रोति (३ चित्र) १=४-१८६ पैरों पर पहियाँ बाँधने की भिन्न-भिन्न रीतियाँ (४ चित्र) १८६ कुहना के जोड़ उखड़ने पर ऐसी लकड़ी बनाइयो। १६० छातीका भाग। १६९ पीठ का भाग। ११२ पैर की हड़ी टूटना। १६३ जाँघ की हड़ी टूट जाने पर। १६४ छाता और छुड़ी से टाँग बाँधना। १६५ कुदाल श्रीर लाठी से बाँधना । १८६-१६८ स्ट्रेचर के भिन्न-भिन्न रूप (३ चित्र) ११६ जहरी दाँत। २००

कहनी के उत्पर बाँध। २०१ बेहोश आदमी को श्राग लगे हुए घर से निकालना । २०२ धुर्थां-भरे घर में से घसीट कर खे जाना। २०३ मुँह से पानी निकासने की रीति। २०४ बाबक का पानी निकालना । २०४ पानी निकालने की दूसरी रीति । २०६ कृत्रिम श्वास दिलाने की रीति । २०७ दूसरी रीति । २०८ कृत्रिम श्वास की पहलीरीनि । २०६ कृत्रिम श्वास की दूसरी रीति। २१० नाड़ी की गति जानने की सारिग्णी। २ । १ - २ १६ तपैदिक उत्पन्न करने के साधन (६ चित्र) । २१६, २२० तपेदिक फैलने के साधन (४ चित्र)। २२१-२२४ तपेदिक को नष्ट करने के साधन (१ चित्र)। २२४-२३२ तपेदिक को नप्ट करने के साधन (६ चित्र)। २३२ मच्छर । २३३ मच्छर क्यूलेक्स । २३४ मच्छर एनाफेलीज । २३४ मलेरिया के कीटा खुओं की वृद्धि । २३६ ख़ास-ख़ास रंगों का ख़ास-ख़ास रोगों पर प्रभाव। २३७ घातशक के कीटाणु । २३८ रोग की प्रथम श्रवस्था (स्त्री) । २३६ रोग की प्रथम अवस्था (पुरुष) । रोग की द्वितीय अवस्था (स्त्री)। २४९ रोग की द्वितीय अवस्था (पुरुष)। २३२ रोग की तृतीय श्रवस्था (पुरुष) । २४२ श्रातशक। रोगी की संतान की गुदा सद गई है। २४५ तृतीय श्रवस्था में जीभ सब गई है। २४४ सर्वींग में विष फूट निकला (स्त्रो)। २४६ पिता के अपराध का दंढ पुत्र इस

भयाबक रीति से भोग रहा है। २४६ स्त्री-व्यायाम-इंक्स की कसरत, २४८, २४६, २४०, २४१, २४२, २४३, २४४ २४४। स्त्री-व्यायाम-दंबल की कसरत, २४६, २४७, २४८, २४६, २६०, २६१, २६२, २६३ । २६४ । स्त्री-म्यायाम की कसरत । २६४ व्यायाम से सुगठित पुरुष शरीर । २६६ ब्यायाम से सुगठित स्त्री शरीर । २६७-२७० व्यायाम से सुगठित शरीर (४ चित्र)।२७१ धीरे-धीरे पैर उठान्त्री। २०२ एक पैर सीधा उठाछो । २०३ कमर सुकामी और पैरों को तान दो। २७४ कंधे के बल उत्तर जाम्रो। २७४ सर्वाङ्ग-सुन्दरी स्त्री । २७६ सुन्दरी, किंतु उदर, वस्त्र श्रीर कंधे दोष-पूर्ता। २७७ ख़ूब चौड़ा ठोस वसस्थल। २७८ लम्बी सुद्वील भुजाएँ। २७६ सुगठित बाहु श्रीर वस्त। २८० उदर । २८१ एक सुन्दरी श्रवराधी स्त्री । २८२ सुगठित बाहु, वक्त और उदर। २८३ गर्दन भीर कन्धे। २८४ जर्मन-महिला के नेत्र । २८४ अर्मन-कुमारी के नेत्र । २८६ चर्बी-रहित उद्र । २८७ स्वस्थ शरीर श्रीर मस्तिष्क का विकास । २८८ जंबाएँ श्रीर पिंडलियाँ। २८६ शोक-पूर्ण उदास मुख । २८ • उदर, जंघा श्रीर पिंडब्रियाँ । १८१ पुरुष-वक्तस्थल, धड़ श्रीर भुल-दंड । २६२ वक्तस्थल, धड़ श्रीर ञुजा। २१३ सुद्रौज-सुन्दर सुख। २१४ सुन्दर नेत्र। २६४-२६६ नेत्रों के भिन्न-भिन्न भाव-उपेत्रा, इच्छा, काकसा, कामना, उद्दीपन (४ बित्र)। ३०० पूर्ण स्वस्थ वक्तस्थल श्रीर धड़ । ३०१ परिपूर्ण शरीर । ३१२ प्रस्थात सिनेमा-नटी कुमारी बचमी। ३०३ सुन्दरी स्त्री का दोष-पूर्ण कंघा। ३०४ सुडील हाथ भीर बाहु। ३०४ हात्र को सुन्दर बनाने की रीति के चित्र, ३ ६, ३०७, ३०८, ३०६, ३१०, ३११, ३१२ | ३१३ सुन्दर पैर । ३१४ सुन्दर कूल्हे, पिंडलियाँ श्रीर जाँच । ३ १४ कूल्हे श्रीर टाँगें। ३१६ सुन्दर बाँघ श्रीर टाँगें तथा पैर। ३१७ शिथिल टाँग। ३१८ रोगी टाँग। ३१६ हिन्दुस्तानी ढंग की दुर्माज़िकी आरोग्यप्रद इवेली का बाहरी मुख। ३२० पहली मंज़िल का मान-चित्र। ३२१ द्सरी मंज़िल का मान-चित्र। ३२२ श्रॅंगरेज़ी ढंग के उत्तम बँगले का मान-चित्र- पहली मंज़िल । ३२३ द्यरी मञ्ज्ञिल का मान-चित्र । ३२४ छोटे परिवार के योग्य एकमन्ज़िलां कोठी का मान-चित्र । ३२४ बारीचे में बनाने योग्य कोठी का मान-चित्र। ३२६ एक सादा छोटे बँगलो का मान-चित्र । ३२७ ऋहर के किनारे ख़ुबासा जगह में बनाने योग्य कोठी का मान-चित्र । ३२८ देहात में बनाने योग्य एक मन्ज़िला घर का मान-चित्र। ३२६ हिन्दुस्तानियों के ब्रिये अनुकूल आँगरेज़ी ढँग की कोठी का मान-चित्र।

रंगीन चित्रों की सूची

कवर-डिज़ाइन २ झारोग्य-शास्त्र (तिरंगा)
 पूज्य पिताश्री ४ झन्थकार (दुरंगा)

श्रारोग्यशास्त्र पर कुछ चुने हुए विद्वानों श्रीर पत्रों की सम्मतियाँ—

चार शिद्धा-विभाग के उच्चाधिकारी महामनीषिवर पूज्य श्री० मालवीय जी महाराज—

"पुस्तक बहुत सुन्दर है, शास्त्री जी को श्रनेक धन्यवाद"

महामहो सध्याय डाक्टर पं० गंगानाथ भा, M. A., LL. D, D. Lit. वाइस चान्सलर इलाहाबाद यूनिवर्सिटी—

"" प्रन्थे गाम्भीर्य, सौशव्दय, श्रादि गुर्खों से युक्त, परम लोकोपयोगी श्रौर श्रति श्रद्भुत है"।'' (संस्कृत से)

श्रान्येबुल मुर्वारायण प्रसाद श्रा<mark>राना, एडवोकेट</mark> स्रईकोर्ट, वाइस चान्सलर श्रागरा युनिवर्सि**टी. मैम्बर** श्राफ कौन्सिल श्राफ स्टेट—

" पुस्तक, स्वास्थ्य सम्बन्धी नियमों का ज्ञान कराने वासी युग-परिवर्तनकारी पुस्तक है। इस पुस्तक से शास्त्री जी की और भी प्रसिद्धि होगी। " मैं बाहता हूँ, प्रत्येक सद्घ्रहस्थ नित्य के हस्तेमाल के बिए पुस्तक अपने पास सक्ते। (ग्रंग्रेज़ी से)

डि० <mark>डाइरेक्टर श्रॉ</mark>क पवितक इन्स्ट्रकशन विहार उड़ीसा—

"" आरोग्यशास्त्र हाईस्कूबों की लाइबेरियों और इनामों के लिये उपयुक्त समका गया है वह आगामी सूची में दर्ज करलिया जायगा ""।" (श्रंभेजी से)

चार उच्च राजवर्गी महोदय

सुप्रदीप्त मान्यवर कमांडिंग जनरत्न श्रीमोहन-शमशेरजंग बहादुर रागा K. C. S. I., नेपात—

" पुस्तक जनसाधारण को बहुत उपयोगी होगी श्रीर श्रायुर्वेदके विद्यार्थी व श्रभ्यास करने वालों को विशेषतः सहायता करने वाली है ।"

हिन्दी के उदीयमान लेखक—राजकुमार श्रीरघुवीरसिंहजी B. A. LL. B. सीतामऊ C. I.

"" आरोग्य शास्त्र हिन्दी के लिए एक गर्व की वस्तु है "" हिन्दी में ऐसे प्रन्थों का प्रकाशित होना देख में आवाक् रह गया हूँ। आपका यह असाधारण प्रयास धन्य है ""।"

रावबहादुर श्रीठाकुर साहेब जोबनेर, श्री नरेन्द्र-सिंहजी, एष्यूकेशनल मिनिस्टर घोर सीनियर मेम्बर स्टेट कोंसिल-जयपुर राज्य-- "'''''''यह श्रपने ढँग की प्रथम पुस्तक है, जोखक ने जो सागर इस गागर में भरा है वह वर्णनातीत है, श्रारोग्य शास्त्र के प्रत्येक श्रंगोपांग को जो तारतम्य दिया है, निरा निराला है '''''''''''।''

हिज हाईनेस महाराजाधिराज बनारस के प॰ डी॰ सी॰ लेफिटनेन्ट कुमुद्दचन्द्र चौधरी—

"यह प्रत्येक घरमें रखने योग्य एक श्रति उपयोगी पुस्तक है" ""

चार उच्च धर्माचार्य

काशो श्रीविश्वनाथ मंदिर के महामान्य महन्तश्री पंo महाबोर प्रसादजी महाराज—

" प्रश्निय श्रसाधारण है, इसमें पाश्चात्य श्रीर पूर्वीय सिद्धान्तों का श्रद्धत सम्मेलन है। जो बड़ी विद्वत्ता श्रीर परिश्रम से सम्पादन किया गया है। अन्य मनुष्य मात्र को नित्य पाठ करना चाहिये। " "

राधास्वामी सम्प्रदाय के परम श्रादरणीय धर्माचार्य,दयालवाग श्रागरा के श्री हुज्र साहेवजी महाराज—

"" कुछ दिन पूर्व मैंने डा॰ सेलमन साहेब की बनाई और पुना की किसी ईसाई संस्था से प्रकाशित एक

पुस्तक देखी थी। उसे देखकर मन में विचार उत्पन्न हुआ।
था कि ऐसी पुस्तक हिन्दी में प्रकाशित हो तो भारत के
करोड़ों पीडितों को लाभ हो। भाप के 'श्रारोग्य शास्त्र,
ने मेरी श्राशा से कहीं बहुत श्रिपक मेरी इस इच्छ को पूर्ण कर दिया ………।"

परम आदरणीय श्रीस्वामी आनन्दभित्तुजी महाराज, दिलतोद्धार संघ के सभापति—

"" श्रापने श्रपूर्व ग्रन्थ जिला। सर्व सधारण के जिए इसकी बड़ी ज़रूरत थी ""।"

श्री स्वामी जीवानन्द जी महाराज भारती—

" इस ग्रन्थ को लिखकर आपने अपनी विद्या को सार्थक कर दिया। आप धन्य हैं " ।"

चार प्रमुख डाक्टर

महामहोपाध्याय कविराज श्री गणनाथ सेन, सरस्वती, M. A.,L. M. S. विद्यानिधि, कविभूषण, अ० भा० श्रायुर्वेद महासम्मेलन श्रौर विद्यापीठ के सभापति—

····ं ग्रन्थ श्रति उपयोगी है, खूब परिश्रम दुष्मा है · · · · · ।'' (संस्कृत से) कैप्टिन के॰ एस॰ निगम, M. D., F, R. E. S., रीडर इन सरजरी, किंग जार्ज मेडिकल कालेज-- लखनऊ—

"' ' ' पुस्तक हिन्दी प्रेमियों श्रौर श्रंग्रेज़ी से अनिभन्नों के लिये बहुत लाभदायक एवं मनोरंजक है ' ' ' ' '

कैंप्टिन R. S. गुप्ता, M. B. B. S., D. T.M. & H. M. R. C. P. (E) इन्चार्ज मेडिकल आफ्रोसर बलरामपर श्रास्पताल, लखनऊ—

'ंं उन्धकार ने श्रथक परिश्रम किया है। भाषा सरज है श्रौर प्रन्थ चित्रों से भरपूर है। मेरी इद सम्मति है कि पुस्तक सर्वसाधारण की प्रत्येक स्वास्थ्य सम्बन्धीः श्रावश्यकाश्रों को पूरी करेगी। 'ंं।

डा० त्रिलोकीनाथ वर्मा B. Sc., M. B. B. S., F. R. F. P. S. (ग्लासगो) D. T. M. (लिवरपूल) L. M. (डब्लिन) फैलो रायल सोसायटी ऑफ ट्रोपीकल मेडिशनस एएड हाइजीन लन्डन। भूतपूर्व सीनियर प्रोफेसर एनाटोमी किंग जार्ज मेडीकल कालेज,लखनऊ—

".....पुस्तक को सर्वाङ्ग में परिपूर्ण बनाने में कुछ कसर उठा नहीं रखी गई, यह पुस्तक श्रीषध शास्त्रः

चौर स्वास्य विज्ञान पर एक परिपूर्ण 'इनसाइक्लोपेडिया' है। पुस्तक सर्वसाधारण घौर विद्यार्थी दोनों के बिये समान लाभदायक है।" (श्रंग्रेज़ी से)

चार लोक प्रख्यात वैद्य

राजपताने के लोकविख्यात राजवैद्य, जयपुर
संस्कृत कालेज के आयुर्वेद विभाग के प्रधान
आचार्य, आयुर्वेद शास्त्र के प्रकागड पिएडत,
आयुर्वेद मार्तगड श्री स्वामी लस्मीरामजी

" प्रन्थ रत्न को देखकर अत्यन्त सन्तुष्ट हुआ। इसमें सद्प्रहरूथों के उपयोगी विषयों को खूब सुन्दर रीति से चुना गया है। मैं विश्वास करता हूँ कि मानुभाषा के भाग्दागार में इस उज्ज्वल प्रन्थरत्न का खूब आदर होगा '''।" (संस्कृत से)

श्रिवल भारतवर्षीय श्रायुर्वेद महामग्रङल के सभापति, श्रव भाव श्राव विद्यापीठ के सदस्य—, प्रयाग के प्रख्यात चिकित्सक, श्रायुर्वेद्पंचानन पंव जगन्नाथवसाद शुक्ल-भिषड्मिण, सम्पादक सुधानिधि—

" पुस्तक बड़े परिश्रम के साथ लिखो गई है। भीर स्त्री पुरुष सभी के काम की है। यदि आयुर्वेद विद्यापीठ के बरीचा के लिये साधारण ज्ञान प्राप्त (जनरल नालेज) के लिये इसके उन श्रंशों का उपयोग किया जाव तो बाट्या कम में वर्णित हैं तो इससे परीचार्थियों को श्रव्ही सहा-बता मिल सकेवी

श्रायुर्वेद शास्त्र के महान विद्वान, दक्षिण भारत के श्रेष्ठ चिकित्सक, श्राखिल भारतवर्षीय श्रायुर्वेद विद्यापीठ के सभापति, पं० यादव जी त्रिकमजी श्राचाय, वम्बई—

" पुस्तक बहुत उपयोगी, और सुन्दर है, सब आपस्यक विषयों का इसमें उचित समवेश है ' ।''

राजवूताना के विख्यात चिकित्सक, पंजाब प्रनिवर्सिटी के श्रायुर्वेद के भूतपूर्व सीनियर लेक्चरर, श्रायुर्वेदमहोपाभ्याय श्री कल्याण-सिंह जी श्रासमेर —

" विधाई, ज्रन्थ में कोई कोर कसर नहीं रही, क़लम तोइदिवा, प्रन्थ सैकड़ों वर्ष तक अमर रहेगा, हिन्दी साहित्य में इसकी टक्कर का कोई प्रन्थ नहीं। वह आधुर्वेद शास्त्र के नवीन युग का नवीन प्रन्थ हुआ। वह नतुष्य मात्र का सचा मित्र और सलाह कार है … ।"

चार उच्च श्राफीसर

माननीय राय विश्वंम्भरनाथ साहेब, चीक-जस्टिस-चीक कोर्ट-श्रवध-लखनऊ---

"''''पुस्तक में बड़े भारी प्रयत्न से कठिन श्रौर भावश्यक चिकित्सा श्रौर स्वास्थ्य सम्बन्धी विषयों को सरल भाषा में लिखा गया है। ''संबेप में, यह श्रपने विषय की इनसाइक्लोपेडिया है। मेरे बिचार में पुस्तक सर्वसाधारण श्रौर बिद्यार्थी होनों के काम की है। '''''(अंग्रेज़ी से)

रायमहादुर पं० शुक्रदेव बिह्नारी मिश्ररिटायर्ड दोवान रियासत छतरपुर—

"" इस में खूबी यह है कि पूर्वीय और बारचात्य सिद्धान्तों को मिलाकर दोनों का लाभ पाठकों को दिया है। " उन्ध उपादेय है।"

निसाम हैदराबाद के प्रार्थविभाग के उच्य-ग्राचिकारी औ वाबू सुर्यप्रतापजी श्रीवास्तव—

"…… नेखक अपने अनुभन, पोग्यता, पायिडत्य और प्रतिभा से नितना काम ने सकता था—इस पुस्तक में निया है। हिग्दी संसार में उसने प्रथम ही भारी क्यांति श्राप्त कर ली है—यह उसकी श्रसाधारण रचना है। निस्न भाषा में ऐसे प्रनथ रन्न तैयार होने नगे उसका सहोभाग्य। अन्य प्रत्येक गृहस्थ के गत्ने का हार होने योग्य है। सुम्द-रता की दृष्टि से ऐसी पुस्तक किसी हिन्दुस्तानी भाषा में सुर्पा नहीं देखी गई।"

मेरठ के प्रसिद्ध रईस ग्रीर श्रा॰ डिप्टीकलक्टर पं॰ राजेन्द्रनाथ दीक्षित B.A, L.L.B, पड्योकेट:-""इस प्रन्थ को लिखकर आपने सर्व साधारण को एक ऐसा आशीर्वाद दिया है कि जिसकी बदौलत पीढ़ियों तक उनके बाल बच्चे फलते फूबते रहेंगे। आप का यह कार्य एक महान् यज्ञ के समान पुण्य दाता है"…""

चार श्रीमन्त सेठ महोदय

दानवोर श्रीमान् सठ रामगापालजी मोहता बीकानेर— ''''' पुस्तक सर्वसाधारण के ही नहीं, चिकि-स्सकों के भी बड़े काम की है। इससे जनता को बड़ा जाभ पहुंचेगा। ''''' ।''

दानवीर श्रीमान् सेठ घनश्यामदासजी विरला— '''' आपकी पुस्तक श्रुच्छी है घौर संब्रह् करने योग्य है''''''''''

श्रीयुक्त बा॰ राजनारायण इन्द्रवीर महरोत्रा, मुरादाबाद— "" " " अन्य वास्तव में श्राह्तिय है, श्रीर तमोम चिकित्सा-साहित्य का राजा है " '' ऐसा अन्य देखने की मैंने कभी श्राशा न की थी ' '' ''

श्रीयुक्त सेठ केदारनाथजी गोइनका, मारवाड़ी पुस्तकालय के जन्मदाता, दिल्ली के प्रख्यात व्यापारी श्रीर प्रसिद्ध साहित्य सेवी—

"" श्री वृसरी पुस्तक नहीं। छुपाई सफाई में कमाल हुआ है। मैं निरंतर पढ़ता हूँ """।"

चार सम्पादक महोदय

श्री पगिडत दुलारेलाल जी भागव,—सम्पादक 'सुधा' लखनऊ।

" श्रारोग्य-शास्त्र आपकी धमर रचना है। यह हिन्दी साहित्य का श्रङ्गार है। आशा है इसकी जनता में वह प्रतिष्ठा होगी जिसके वह योग्य है

प्रसिद्ध हिन्दी उपन्यास सम्राट्, प्रेमचन्द जी— सम्पादक हंस, माधुरी,

" बीसों बड़े र श्रंग्रेज़ी धौर हिन्दुस्तानी चिकित्सा श्रीर स्वास्थ्य सम्बन्धी ग्रन्थों की ज़रूरत इस एक किताब से पूरी हो जाती है । गेटप बहुत ही बढ़िया " " "

भारत प्रख्यात 'कल्याण' पत्नके सम्पादक साधुजीवी सेठ हनुमानप्रसाद जी पोद्दार ।

"" प्रन्य बहुत बदा श्रीर उपादेय है, सब नहीं पद पाया हूँ । परन्तु सितना पढ़ पाया हूँ उतना बहुत ही उपनोगी है " आपके परिश्रम की क्या प्रशंसा की स्था । पुस्तक बहुत ही उपयोगी श्रीर संग्राह्य है "

चाँद (उर्दू) के प्रधान सम्पादक मुंशी कन्हेंबालाल साहेब M. A. L. L. B. एडवोकेट हाईकोर्ट इखाहाबाद—

"" आरोग्य शास्त्र देखा। अपूर्व है। ऐसी सरल भाषा में ऐसे गम्भीर विषयों को ऐसे खुलासा तरीके से बिस्समा आप ही का काम था। आपही इसके अधिकारी मै। टाट बाट की दृष्टि से तो अन्ध दुलहिन है" "।"

चार प्रमुख पन्न

पाइनियर, प्रयाग-सरख भाषामें त्वास्थ्य विभाव बतावा गवा है। भ्रपने विषय की यह उरक्रष्ट पुस्तक है जो पूर्वीय और पारचात्व सिद्धान्तों को मनन करके बनाई गई है....।" (भंग्रेज़ी से)

लीडर, त्रयाग — ""पुस्तक ब्रन्थकार के पूर्वीय और बारचारय ज्ञान के पूर्वा पविदत होने का प्रमाय है। पुस्तक विलकुल अनुभव में आये हुएे स्वास्थ्य और आरोग्य सम्बन्धी पर्वषणाओं का ख़ज़ाना है । जिन्हें जानकर मनुष्य स्वस्थ और नीरोग रह सकता है।"
(अंग्रेज़ी से)

भारत, प्रयाग — शास्त्री जी ने ''श्रारोग्य-शास्त्र, जिसकर जनसमाज का श्रसीम कल्याया किया है। प्रत्येक सद्ग्रहस्थ तथा सद् वैद्य को एक प्रति सदा पास रखनी चाहिये……।''

कर्मधीर, खँडुश्रा- " यह पुस्तक लिखकर शास्त्रीः स्त्री ने लोगों का बहुत उपकार किया है। यह १०० में ५० से श्रधिक श्रवसरों पर लोगों को शहरों की श्रोरः उपचार के लिये दौड़ने से बचावेगी " "।'

संजीवन-ग्रन्थमाला की

'श्रारोग्य,गृहजीवन श्रोर गृह चिकित्सा सम्बन्धी

चालीस पुस्तकें

निन्हें

उत्तर भारत के श्रेष्ठ चिकित्सक श्रीर महान् प्रथकार

श्राचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री

मब काम छोद लिख रहे हैं

तथा

जिन्हें हिन्दुस्तान की छः भाषात्रों में प्रकाशित करने का

हमने अधिकार प्राप्त किया है

इस वर्ष में केवल हिन्दी श्रीर उर्दू के संस्करण

ही प्रकाशित होंगे।

स्थाई ग्राहकों के नियम ।

- इस सूची में प्रकाशित चालीसों पुस्तकों का केवल हिन्दी उर्दू संस्करण इस वर्ष में प्रकाशित होगा। श्रीर केवल इन्हीं दो भाषाश्रों के ग्राहकों के नाम स्थायी ग्राहकों की श्रेणी में रिजस्टर कराये जावेंगे।
- २— शस्येक पुस्तक की पृष्ठ संख्या २०० के लग भग होगी श्रीर प्रत्येक पुस्तक का मृत्य १) होगा। परम्सु स्थायी ब्राहकों को पौने मृत्य में, श्रर्थात् ।।।) में एक पुस्तक मिलेगी। डाक खर्च ब्राहक के जिम्मे होगा, यदि एक पैकेट में दो तीन मित्र एक साथ पुस्तकों मंगावेंगे तो खर्च में किक्रायत हो सकेगी।
- ३—पुस्तकों की भाषा बहुत सरब, बोलचाब की भाषाः होगी और उसे प्रत्येक श्री पुरुष श्रासानी से समक सकेंगे।

- अ-ज्यों ही कोई पुस्तक प्रकाशित होगी उसकी सूचना एक कार्ड द्वारा प्राह्म के पास भेज दी जायगी। उसके एक सप्ताह बाद वी० पी० भेजी जायगी, यदि किसी प्राह्म को कोई पुस्तक खेना अस्वीकार हो तो उन्हें उचित है कि वे तुरन्त सूचना दे दें।
- स्—मराठी, गुजराती, बँगला और धंग्रेजी भाषा में अनु-वाद ज्यों ही तैयार हो जावेंगे स्थों ही हुन भाषाओं के ग्राहकों के धार्डर रिज़र्व किये जावेंगे, श्रौर उसकी सूचना समाचार पत्रों में दे दी जायगी, इससे पूर्व इस प्रकार के पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।
- स स्थायी ब्राहकों को कोई रक्रम फीस खादि भेजने की ज़रुरत नहीं। केवल, कार्ड पर स्थाई ब्राहक बनाने की स्वीकृति तथा नाम पता भर कर भेजना काफी होगा।

'व्यवस्थापक' प्रकाशन-विभाग,

चालीस प्रन्थों की संचिप्त विषय सूची

- श्रमिरों के रोग—श्रमीर लोगों को रोगोत्पादक हरी श्रादतें, मेदरोग, बहुमुत्ररोग, मधुमेह, ध्वलभंग, मन्दा-ग्नि, बवासीर, लय, तपेदिक, उन्निद्वरोग, श्रन्य फुटकर रोग, स्वास्थ्य विधान।
- २-- युवती शिद्धा विवाह, विवाह के तत्काल बाद का जीवन, पित क्या चीज़ है ? सुसराल में रहना, रोग और लजा, नववधू की दिनचर्या, पुरानी बहू के कर्तब्य, पित का पिरवार, ऋतुकाल का रहन-सहन, संयम और धैर्य, रसोई और पाक विधान, घर को सुसजित करना, प्रथम सन्तति, सन्तान का पोषण, पढ़ौसिनें और सहे- लियाँ, महमान।
- 3-- कुमारी द्र्येगा कुमारियों की श्रन्ती श्रादतें, कुमा-रियों की बुरी श्रादतें, उन्हें क्या सीखना चाहिये, सूई श्रीर क्रसीदें का काम, भोजन बनाना, स्वच्छता, गायन वादन कक्षा, चित्रकारी, वस्त्र रंगना, प्राचीन चौसठ

कला चौदह विद्या, तमीज और सल्लीका, न्यायाम, व्याह शादियों के जमघट में, कम्यागीत, सफ़र की साव-धानी, मेले ठेले में, श्राभुषण, शील श्रौर विनय, भाई बहनों और गुरुजन से बतांव, स्यानी कन्याएँ, माता विताशों का संरक्षण।

- ४-युवक पथ प्रदर्शक— यौवन क्या चीज है ? युवकों की दिनचर्या, युवकों का खाहार, स्कूल श्रौर कालिज का जोवन, मित्र मण्डली, पुस्तकें, व्यसन, व्यायाम श्रौर अमण, कुटैव श्रौर उनसे रक्षा, सुनहरी उपदेश।
- ५-नवद्म्पि मिल्ल—दाम्पत्य रहस्य, बाल पित पत्नी, विषम जोड, समयोग दम्पित, प्रेम मीमांसा, स्त्री पुरुष की कलह श्रीर उसके कारण, ख्रियों की श्रनुचित माँगें, पितयों के श्रत्याचार, यदि स्त्री घर में श्रकेली हो, गर्भ काल को चर्या, सम्भोग, नित्यकर्म, सामाजिक प्रतिबन्ध, सन्तान सोमा, रोगी होने पर, पारिवारिक जीवन, एकाकी होने पर।
- ६ बुद्धावस्था के रोग बृद्धावस्था क्या है, बृद्धावस्था के श्रागमन के कारण, बृद्धावस्था में स्वस्थ रहने की विधि, कफ्र श्रीर श्वास के रोग, मन्दानिन श्रीर क़ब्ज़, ज्यायाम श्रीर प्राणायाम, दिनचर्या।
- ७—विधुर जीवन—विधुर नीवन की प्राकृत करिनाइयां, ४०वर्ष की श्रायु से पूर्व, श्रधेदावस्था में, वृद्धावस्था में,

खान पान का संबम, अध्ययन—स्वाध्याय, दिनचर्या, ससम्तान विधुर, एकाकी जीवन, धन-सम्पन्न विधुर, जीवन ध्येय।

- म—स्वास्थ्य-सलाहकार—स्वास्थ्य क्या है, स्वस्थ रहने की विधि, दिनचर्या, ऋतुचर्या, श्राहार, नित्य-कर्म, दैनिक व्यायाम, बच्चों की सम्हाल, रोगी होने पर, रोग-मुक्त होकर, विशेष वार्ते।
- स्वयंचिकित्सक त्रिदोष, रोग, रोगी परीचा, मज-मृत्र परीचा, ज्वर और तपेदिक, मन्दाग्नि, श्रजीर्थ और अर्था, संब्रह्मणी श्रतिसार श्रीर पेचिश, मृगी, हिस्टोरिया श्रीर स्नायुरोग, वात रोग, रक्त विकार श्रीर कुष्ट, उदर रोग, स्त्री रोग,बाल रोग, ऊर्ध्वजंत्रुगत रोग, वालीकरण, रसायन, फुटकर बातें, फुटकर नुस्ले।
- १० घरेलु चुटकुले जुकाम, चेचक, मोतीकरा, हैज़ा, श्रुबोर्ण, मन्दाग्नि, बवासीर, प्लेग, विष, सर्पदंश, सिरदर्द, नेत्ररोग, प्रदर, प्रमेह, खास, कास, नकसीर, मुच्क्रां, बालरोग श्रादि पर ५०० श्रति सस्ते कौड़ियों मोल के श्रनुभूत नुस्खे।
- ११—पाकेट वैद्य—म्रासव, म्रिट, चूर्ण, बटी, श्रवलेह-पाक, घृत तेल, मलहम, लेप, रस, भस्म, काथ, सर्क, मंग्रेज़ी दवाह्याँ।

- १२—गो पालन—गायों के पालन से लाभ, गायों की नस्ल, दाना चारा. गायों के रहने का स्थान, दूध, घृत, मक्खन, छाछ, ग्याभन गाय, गायों के बच्चे, डेरीफार्म, सांड, गायों के रोग श्रीर उनकी चिकित्सा।
- १३ आतशक आतशक की उत्पत्ति और उसके कृमि, आतशक की प्रथम अवस्था, दूसरी अवस्था, तीसरी अवस्था, चिकित्सा, सम्तान पर प्रभाव।
- १४—सुज्ञाक—सुज्ञाक कैसे होता है, प्रारम्भिक लक्ष्य, उसका शरीर पर भीतरी प्रभाव, चिकित्सा, श्राधुनिक ह्वाज, सावधानी।
- १५ छूत की बीमारियाँ हैज़ा, प्लेग, चेचक, चय, कोइ, खाज, चर्मरोग और मोतीमरा।
- १६—नपुंसकता—नपुंसकता के बच्चा, नपुंसकता के कारण, मूंठा अम, नपुंसकता दूर करने के प्राकृत साधन, नुसख़े।
- १७—प्रमेह—प्रमेह की व्यापकता, प्रमेह के प्रकार, प्रमेह से बचने के साधन, पुराना प्रमेह रोग, प्रमेह की चिकित्सा।
- १८—वांभ्रपन— वाँक होने की आन्त्रि, वाँक के खन्न्य, साध्य वाँकदोष, चिकित्सा, ख़ास बातें।

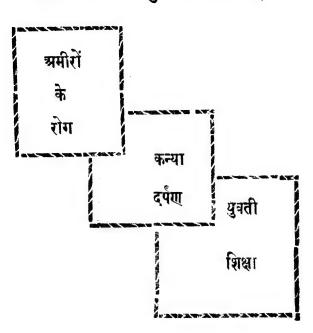
- १६—सन्तानिरोध—भारत की राष्ट्रीय सम्पत्ति श्रौर बढ़ती हुई बन-संख्या, भारत के दिरद्र परिवार, सन्तान सीमा निरोध के श्रधिकारी, सन्तान निरोध के श्राधुनिक तरीक़े, सन्तान निरोध के सरल उपाय, संग्रम।
- २० शिशुपालन जन्म के प्रारम्भिक चार सप्ताह, छः मास तक की संभाज, भोजन, स्नान, खेलकूद, वस्त्र, भादतें, गृह शिच्या, चरित्र संगठन, शिचा, रोग और उनकी विकित्सा।
- २१ गृहस्थजीवन घर कैसा हो, श्राय को कैसे ख़र्च किया जाय, महमानदारी, पशुपालन, नौकर, ध्यव-साय, पहोसियों से व्यवहार, मित्र श्रीर सम्बन्धी, घर में सदैव बनी रहने वाली चीज़ें, शादी श्रीर स्योहार, विपत्ति का काल।
- २२—सात महारोग—कृष्ट, चय, श्वास, संप्रह्र्णी, उन्माद, वातव्याधि, सम्निपात ।
- २३ व्यायासपद्धति व्यायास से लाभ, दम्बल, पैरेब-लक्षर, हाईबस्प, सुद्गर, लाठी, दुश्ती, दग्ह, वैठक, फुटबाल, किकिट, हाकी, फुटकर।

- २५ प्रस्तव प्रसवकाल, प्रसव की श्रावश्यक चीक्नें, वाई, प्रसव की रीति, प्रसव की कठिनाइयां, प्रसव के बाद, प्रस्ति का श्राहार, बच्चों की सम्झाल, प्रस्ति रोग श्रीर उपचार ।
- २६ बच्चों का स्वास्थ्य साधारण सम्हाल, निय-मित दिनचर्या, भोजन श्रौर वस्त्र, व्यायाम श्रौर परि-श्रम, विश्राम, पठनप्रणाली, स्कूली जीवन पर दृष्टि, खेल कूद, संगति, धार्मिक शिका।
- २७—विष भोजन—शराब, श्रक्षीम, गाँजा, भाँग, चरस चाय, कहवा, काफ़ी, तम्बाकू, पान, कोकीन, श्रौर श्रन्य विष ।
- २८—व्यवहारिक योग—योग सम्बन्धी वीस भिन्न २ प्रकार के सरत श्रासन, चित्र सहित, जिनसे श्रनेक रोग दूर होते हैं।
- २६—दीर्घायु श्रायु बढ़ कैसे सकती है, श्राधुनिक श्रौर प्राचीन दीर्घायु पुरुष, दीर्घायु होने के प्रयोग, योग के विधान।
- ३०-रोगी की सेवा-रोग के चारपाद, परिचारक, श्रीषध, पथ्य, रोगी के क्षिये मकान, छूत के रोगियों की व्यवस्था, श्रारोग्य होने पर, श्ररिष्ट खण्या, फुटकर बातें।

- ३१ ववाई रोग हैज़ा, प्लेग, श्रकालज्वर, महामारी, इन्म्लुऐंज़ा, कालाज़ार।
- ३२— स्त्रियों के रोग—प्रदर, बाधक रोग, हरित्पीड़ा, हिस्टीरिया, जरायुप्रदाह, जरायु स्र्युंद, जरायु स्थान-च्युति, डिम्बकोष प्रदाह, योनिप्रदाह, कामोन्माद, बन्ध्यात्व।
- 33—गर्भाधान—ऋतुकाल, गर्भधारण की सावधानियाँ, गर्भिणी का ष्टाहार विहार, गर्भवती के रोग, श्रकाल गर्भच्युति, गर्भ न रहने के कारण, पुंसवन क्रिया, नौ मास की सम्हाल।
- ३४—गृह निर्माण—भूमि का चुनाव, रुख और वाता-वरण, श्रावश्यक सामग्री, भिन्न २ मकानों के डिज़ा-इन, वारनिश और रंग, सजावट, प्राचीन वास्तुशास्त्र, फुटकर बातें।
- ३४ विश्ववा जीवन २४ वर्ष की श्रायु तक, वैद्यक महिमा, प्रौदावस्था की विश्ववाएँ, शिद्या श्रीर उद्योग, सामाजिक श्रीर कान्नी श्रुटियाँ, बृद्धाविश्ववाएँ, विश्व-वाश्रों की दुरवस्था, सर्व साधारण का कर्त्तच्य, विश्ववा विवाह।
- ३६-- ग्राम्य जीवन-- ग्राम्य जीवन का महत्व, शिचितों के लिये गावों में उद्योग धन्धे, ग्राम्य संगठन, ग्रामीण-

- जनों का सुधार, श्रादर्श गाँव, योरोप के गाँव श्रौर ग्रामीणों का जीवन, गाँवों के बच्चों की शिखा, ग्राम्य बैंक।
- 30-नगर जीवन-नगर बीवन की विपत्तियाँ, नागरिक जीवन से चरित्र नाश, गरीबों का नगरवास, नगर के खाद्य श्रीर रहन सहन, नगर के ख़तरे, भारतके प्रधान नगरों का सिंहावलोकन ।
- ३८ ब्रह्मचर्य साधन विधि ब्रह्मचर्य क्या है, ब्रह्मचर्य के विषय में प्राचीन भारतीय मत। प्राचीन काल में ब्रह्मचर्य का खादर, ब्रह्मचर्य की करिनाइयाँ, युवकों का ब्रह्मचर्य, विवाहितों का ब्रह्मचर्य, ध्रधेद अवस्था में ब्रह्मचर्य, ब्रह्मचर्य, ब्रह्मचर्य, स्थाना के ब्यवहारिक प्रयोग, युवतियों का ब्रह्मचर्य।
- ३६— हजार नुसखे—भिन्न २ रोगों पर प्रसिद्ध हकीमों श्रीर वैद्यों के एक हज़ार श्रतभ्य श्रीर चुनीदा नुसखे।
- ४० नित्य नियम सात्विक जीवन, सन्ध्याबन्दन, स्त्री पुरुषों के नित्य गाने योग्य गायन, बच्चों के गीत, स्वाध्याय, धर्म विधान, व्यवहारिक सिद्धान्त, सामानिक सभ्यता, द्याध्यात्म तत्व, भगवत्समर्थं।

माला की तीन पुस्तकें तेयार हैं



श्राज ही कार्ड लिखिए !!!

महान् ग्रन्थकार श्राचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री की

अन्य पुस्तकें

- १ हृदय की परख (उपन्यास) जगत में कितने लोग पाप करते हैं। परन्तु मक्षान् बुद्ध ने कहा है 'पाप हुआ है इसकी अपेज्ञा पाप क्यों हुआ है, यह देखना चाहिए।' कलाविद् अन्थकार ने कुछ उसत मन क्यक्तियों की मानसिक दुर्बलता के कोमल खंग पर प्रहार किया है। इस उपन्यास के लगभग सभी पात्र किसी खंश तक पाप कर चुके हैं, पर पाठक के हृदय में उनके प्रति न केवल सहानुभूति, प्रस्थुत् श्रद्धा भी उत्पन्न होती है। यह उपन्यास केवल मनोरंजन की सामग्री नहीं गम्भीर मानव स्वभाव का खित मनोरंजक चित्र है पुस्तक का तीसरा संस्करण छुपा है। मृह्य सजिहद १॥)
- २--हृदय की प्यास--रूप और प्रेम दो प्रतिद्वन्द्वी शक्तियाँ हैं। रूप ऐसा शैतान है कि प्रेम की पवित्र धारा को वासना की श्रोर सुका कर ही दम खेता है।

- इस उपन्यास में लेखक ने मनुष्य की सूचम मनोवृत्तियों का उत्थान, पतन, उद्देग और शमन इस खूबी से किया है कि वाह ! किसे रूप की प्यास न लगी होगी, ख़ासकर योवन की दुपहरों में। पाठक, इस उपन्यास को पढ़कर ज़रा देखिए तो ? मूल्य सजिल्द २)
- ३— श्राल्तत लेखक की = श्रमर कहानियाँ। निर्जीव लेखनी किस माँति रोती हँसती और नाचती गाती है, यह श्राप इस पुस्तक में देखिए। कभी उल्लास सोते हुए यौवन को ठोकर मार कर जगावेगा, कभी श्रातङ्क छाती में एक घूँसा मारेगा, कहीं श्राप ठगे से रह जावेंगे, कहीं श्राप दिल खोलकर रो उठेंगे। सिलस्द का मुल्य (११)
- ४-- उत्सर्ग (नाटक) -- यह छोटासा नाटक क्या है, श्राग का वह दहकता श्रंगारा है जिसे बुभाने को शताब्दियों के श्राँधी मेंह भी काफ़ी नहीं। किस भांति चित्तौड़ पर सीर्फौदिया जूम मरे श्रौर प्रबल श्रक्षकर को पददिलत किया। किस भांति १४ हज़ार राजपुतानियाँ जल कर राख हो गईं! देखने सुनने योग्य है। मूल्य।।)
- ५--गोलसभा -लण्डन के सेन्ट जेम्स पैलेस में बैठकर

कैसी २ क्रीमती खोपिबयों ने टक्कर खीं। श्रीर किस भाँति भारत के लोह पुरुष ने योगेप की राजनीतिः को नंगा किया। पढ़िए। मूल्य २)

६--इस्लाम का विष वृद्धा - किस भाँति अरब से यह लाल लोहे का छंगारा उठा और मध्य ऐशिया को चंगरता हुन्ना योरोप तक छुस गया। किस प्रकार अरबों ने मुहम्मदी भएडे के नीचे एथ्वी की सम्पदा भोगी। भारत को इस्लाम के चरण तल में दबकर कैसी २ यम यातनाएँ भोगनी पड़ी। किस भाँति प्रयल मुग़ल साम्राज्य का दिगन्त गौरव बढ़ा और फिर भाग्य चक्र में पड़कर वह ७ करोड़ का तख्त-ताऊस किस प्रकार किसी श्रज्ञात जादूगर की फूँक से उड़ कर लोप हो गया! सबके उपर योरोप की शक्तियाँ फिर किस ठाठ से जमकर बैठीं। यह इस प्रन्थ में पढ़िये। श्रापके होश उड़ जावेंगे।

यह ग्रन्थ लेखक के प्रसिद्ध श्रथकाशित ग्रन्थ 'तव, श्रव क्यों श्रीर फिर, का एक श्रध्याय है, जो गत दश वर्षों से प्रकाशित होने के लिए श्रनुकूल समय की प्रवीक्षा कर रहा है। मूल्य सजिल्द ३) श्रजिल्द २॥)

> मैनेजर-प्रकाशन-विभाग संजीवन-इन्स्टीट्यूट, दिल्ली ।

ग्रन्थकार का श्रद्भुत ग्रन्थ

मिथुन-शास्त्र

प्रेस में जा रहा है। यह ग्रन्थ २००० पृष्ठों और ४ भागों में सम्पूर्ण होगा। यह ग्रन्थ काम-विज्ञान ग्रर्थात् स्त्री-पुरुषों के पारस्परिक दैहिक एवं श्राध्यात्मिक सम्बन्धों के सूचम एवं वैज्ञानिक विवेचनों और व्याख्याश्चों से युक्त होगा।

श्रानुमानिक मुल्य २५)

नोट-श्रभी से नाम लिखाने से २०) में। एक-एक भाग छपता जायगा श्रीर ४)

में बी वि पी व्हारा पहुँचता जायगा।

श्राज ही नाम लिखाइए।

दुवारा छप गया !!

व्यभिचार

जिस प्रनथ ने प्रथम वार सन् १६१८ में छपकर सारे हिन्दुस्तान में हलचल मचा दी थी। जिसे पढ़कर बढ़े २ पापी व्यभिचारी थर्रा गये थे। जिस पर अनेक धर्म ढोंगियों ने मुक़दमे चलाने की धमकियाँ दीं थी और जो गत तीन वर्ष से अलभ्य था—फिर छप गया।

इसे पढ़कर

हजारों युवकों ने नवजीवन पाया है। सैकड़ों घर वर्वाद होते बच गए।

सिर्फ एक बार पहिए !!

रोंग़टे खड़े हो जावेंगे ! आपके होश उड़ जावेंगे !! आप आवाक् हो जावेंगे।

्डयभिचार के खुत्ने खेल, जिसमें सब कोई चाव रखते हैं पर जिस से सब कोई मुँह छिपाते हैं। इस पुस्तक में पढ़िए।

श्रपने लम्पट मित्रों को एक प्रति भेट दीजिए।

शायद उनकी भ्राँखें खुल जायें।

मुल्य सजिल्द ३॥) रु०

न्मोट—१८ वर्ष से कम आयु के लड़कों को, कुमारों को, श्रीर स्त्रियों को नहीं भेजा जायगा।

आरोग्य-मन्दिर की सेबाएँ

- १— इस मन्दिर की स्थापना उत्तर भारत के श्रेष्ठ चिकित्सक श्राचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री महोदय ने श्रपने निज् व्यय से की हैं। इसका उद्देश्य सर्व साधारण को बिना किसी प्रकार की फीस श्रादि तिये श्राचार्य महोदय की बहु मुल्य चिकित्सा से लाभ पहुँचाना है।
- २ बाहर के यात्रियों को श्रपने श्राने की सूचना प्रथम दे देने से सुविधा होगी। उन्हें क्या रोग है कितने श्रादमी साथ होंगे, उन्हें कितना स्थान श्रीर क्या र सुविधाएं चाहिएं, श्राद सभी बातें संचेप से स्पष्ट खिख देनी चाहिएं। स्थान स्त्री विभाग में चाहिये या पुरुष विभाग में, यह भी जिखना चाहिये।
- ३—राजा, रईस, श्रीर सर्व साधारण को उनकी सुविधा के उपयुक्त स्थानादि का यथाशक्ति प्रबन्ध मन्दिर की श्रीर से है, सर्वसाधारण ले श्रीषध श्रादि का कुछ मूल्य नहीं विया जाता, तथा जो भाई स्वीकार करें उनके विये भोजन का प्रबन्ध भी मन्दिर की श्रीर से होता है। किसी से किसी भी प्रकार की फीस नहीं जी जाती है।
- ४—आवार्य महोदय संब्रह्णी और त्रय के विशेषज्ञ हैं। गत ११ वर्षी से आप इन मनुष्यमात्र के भयानक

शत्रु रूप रोगों के श्रनुसन्धान में लगे हैं श्रीर बहुत | कुछ सफलता प्राप्त की है। श्रतः इन रोगों के रोगियों को श्राने से श्रधिक लाभ की सम्भावना है। इसके सिवा, वन्ध्यास्व, नपुंसकस्व, लक्क्श्रा, उन्माद, हिस्टी-रिया, स्वास, रक्त विकार, पीनस श्रादि रोगों की भी श्राप श्रव्यर्थ चिकिस्सा करते हैं।

- अ─यदि कोई सज्जन बड़े २ शहरों में रहने, श्रिष्ठक परिश्रम करने, तथा रोग शोक श्रादि के कारण दुर्वल और कमज़ोर हो गये हों—उन्हें कोई ख़ास रोगन हों किन्तु वे श्रपना स्वास्थ्य सुधारने तथा नियमित जीवन बनाने को कुछ दिन मिद्र में रहना चाहें तो उनके लिये खास प्रबन्ध हैं।
- ६ जो लोग पत्रव्यवहार द्वारा आचार्य महोदय की रोग के सम्बन्ध में सलाह लेना या चिकित्सा कराना चाहते हैं उन्हें सब हाल खुलासा पत्र में लिख देना चाहिये तथा पत्र पर 'रोगी, शब्द लिख देना चाहिए।
- अ—सब प्रकार के पत्रोत्तर के लिये -)। का टिकट भेजना आवश्यक है।

पत्रव्यवहार का पता— 'व्यवस्थापिका, 'श्रारोग्य-मन्दिर, शाहदरा, दिशी।

दो हजार वर्ष पुराने चार नुसखे !!

महर्षि चरक प्रगाीत

इन्हें हमने नवीन वैज्ञानिक रीति पर तैयार किया है, ये नुसख़े प्रस्थेक ऋतु में सेवन किये जाने योग्य हैं।

१--साँप का सुरमा

यह सुर्मा साँप के फन में सिद्ध किया गया है। धुन्ध, खुबली, रतौँध, नज़ला, पर्वाल, उरका, चकाचौँध, जलन, पीड़ा, पानी बहना, तारे से देखना, एकदम ग्रैंधेरा, भा जाना, श्रादि शिकायतें बहुत शीघ्र दूर हो बायँगी। क्रीमत एक तोला १।, दो तोला २)

२-- बृष्य रसायन

यह प्राचीन ऋषि प्रसीत स्रोषध स्नाश्चर्य जनक रीति से स्रपरिमित वीर्य स्रोर वीर्य कीटों को उत्पन्न करती एवं पुष्ट करती है। सब प्रमेहों पर राम वासा है। न क्रब्ज़ करती है न गर्मी। मुल्य २० दिन सेवन योग्य दवा ४)

३--ब्राह्मी रसायन

इसके सेवन से सब प्रकार के मस्तिष्क और श्रांखों के रोग, हिस्टीरिया, मृगी, नींद न श्राना, बुरे स्वप्न, पुराना सिर दर्द; मोतियाबिन्द, रतींच चक्कर, श्रम, मूर्ज़ा, श्रादि रोग शीघ दूर होते हैं। २० दिन सेवन योग्य श्राधा सेर का ढिब्बा ३॥)

४- सौभाग्य-सुन्द्री-रसायन

यह दवा मासिक धर्म को ठीक करके बच्चेदानी को ताकत देती है। गर्भ-धःरक शक्ति उत्पन्न करती है। खियों की रेयूलता की कम करके शरीर को लचीला और कोमख बनाती है, रंग को निखारती है। मूल्य १४ दिन सेवन योग्य दवा २)। (सबका पोस्टेल पृथक्)

आप दवाइयां कहां से मंगाते हैं?

श्रापको जब उत्तम, विशुद्ध श्रायुवैदिक दवाइयों की श्रावश्यकता हो — श्राप हम से मँगाया की जिए। हमारी दवाइयाँ विशुद्ध शास्त्रीय रीति से तैयार की जाती हैं, पविश्रता का ध्यान रक्खा जाता है श्रीर मूल्य श्रायम्त सस्ता होता है। उत्तर भारत में हमारा कार्यालय ही सबसे श्रव्य है श्रीर माल की उत्तमता तथा मूल्य के सस्तेपन में हमसे कोई बराबरी नहीं कर सकता।

सब प्रकार की दवा जैसे चूर्ण, धासव, धर्क, मुख्बे, ध्रवलेह, रस, भस्म, वटी, ख़मीरे, शर्बत, हमारे यहाँ तैयार रहते हैं। इसके सिवा ध्रॉर्डर देने से ध्राप कोई भी नुस्ख़ा तैयार करके हमसे मंगा सकते हैं। जैसा कि बहुत से राजा महाराजा ध्रोर रईस लोग बहुधा करते हैं।

स्वी और हरी वनस्पति, जही ब्ंटियाँ आदि भी हम आपको भेज सकते हैं। इसके सिवा विविध प्रकार के वस्य पशुक्रों की चर्बी आदि तथा दुर्लभ वस्तुएँ हमारे यहाँ आपको सदा मिल सती हैं। इस पुस्तक में जो दवाइयाँ आई हैं वे सब हमारे यहाँ तैयार मिलेंगी।

विशेष जानकारी के लिए =) के टिकट भेजकर बढ़ा सूचीपत्र मंगाइये क्ष्यत्रक्यवहार का पता—

जनरल मैनेजर -

संजीवन फार्मेस्युटिकल वर्क्स, दिल्ली।